याचक के नजि

(मैथिली शब्द-चित्र)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

याचक के नञि

(मैथिली शब्द-चित्र)

नन्द कुमार मिश्र "नन्द"
मो.-8986261756

गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच
दरभंगा

YACHAK KE NAI : (Maithili Literary Sketch) by **Nand Kumar Mishra 'Nand'**, Gosauni Baidyanath Smriti Manch, Uphardaha, Darbhanga, 2022, ₹ **200/-**

© लेखकायत्त

प्रकाशक : **गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच**
उफरदाहा, जिला- दरभंगा
पिन- 847233 (बिहार)

प्रथम संस्करण : वर्ष 2022

पोथी प्राप्ति स्थान : विद्यार्थी पुस्तक भंडार
सकरी, दरभंगा

सहयोग राशि : ₹ 200/-

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

समर्पण

पूज्यवर पिताजी **स्व. बैद्यनाथ मिश्र**
एवं
पूजनीया माताजी **स्व. गोसाउनि देवीक**
पुण्यस्मृतिमे
सादर समर्पित ।

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

शब्द-ब्रह्म उपासनाक सुपरिणाम

आधुनिक मैथिली साहित्यक भीष्म पितामह आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' साहित्य अकादेमी दिससँ आयोजित अपन 'रचनाकारसँ भेट' कार्यक्रममे मधुबनीक राँटीमे एकटा प्रश्नक उत्तरमे कहने छलाह जे 'कविता लिखबामे निपुण कवि साहित्यक कोनो विधामे सर्जन करबामे समर्थ भऽ सकैत छथि।'

आचार्य सुमनक एहि कथनकेँ हठात् स्वीकार करबामे असौकर्य-बोधक अनुभूति भने होय, मुदा गम्भीरतासँ विचार कयने एहिमे अन्तर्निहित भावक प्रतीति सम्भव थिक। प्राय: सभटा साहित्य आ रचनाकार अपन साहित्य-यात्राक आरम्भ कवितेसँ तँ करैत रहल छथि। प्राय: एहनो साहित्यकार जे अपनाकेँ गद्य विधा मात्रमे केन्द्रित कयने होथि, सेहो नहि होयताह जे चारियो पाँती पद्य नहि लिखने होथि। काव्यक प्रथम उत्सो तँ श्लोकबद्धे भेटैत अछि जे आदिकवि वाल्मीकिकेर ठोरपर सर्वप्रथम नर्तन कयलक। तहिना कवि शब्द आइ भने पद्य-रचनाकारक अर्थमे रूढ़ भऽ गेल होय, मुदा शास्त्रीय मान्यताक अनुसार 'कवि' शब्दसँ गद्य-पद्य दुहूक रचनाकार अभिहीत होइत रहल छथि– 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।'

एहिठाम गद्यकेँ निकष अर्थात् कसौटी मानल जायब एकर महत्त्वकेँ थोड़े श्रेष्ठ सन प्रतीत करबैत अछि। तथापि आचार्य प्रवर कविताक सर्जन करबामे निपुणता प्राप्त साहित्य-साधककेँ समस्त विधामे सर्जन करबामे क्षम किए मानलनि? से प्राय: एहि दुआरे जे साहित्य-यात्राक प्रस्थान-बिन्दुपर उपस्थित कवितामे बीज रूपमे साहित्यक प्राय: विधा

निहित रहैत अछि। महाकाव्य-खण्डकाव्य आदि पद्य विधा तँ सहजहि गद्योमे ओ मूल तत्त्व विद्यमान रहिते अछि जे कवितामे रहैछ। कवितो तँ कोनो ने कोनो कथे कहैत अछि। कखनो राष्ट्र-समाज-परिवार-मनुक्खमे निहित अभाव-स्वभाव दऽ तँ कखनो ओकर प्रभाव दऽ कहैत अछि। निबन्ध होय आ कि आन कोनो रचना, सभमे मूल तत्त्व वैचारिक प्रधानतो तँ रहिते अछि जे कवितोमे विद्यमान रहैछ। तेँ आचार्य सुमन कवितेकेँ साहित्यक सर्वप्रमुख विधा मानलनि।

आ एहि दृष्टिसँ देखी तँ दरभंगा जिलान्तर्गत उफरदाहा ग्राम निवासी बिहार राज्य विद्युत बोर्डसँ अवकाश प्राप्त लेखापाल श्री नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' मूलरूपसँ कविए छथि जे पुस्तकाकार प्रकाशनक माध्यमे अपन डेढ़ दशकक साहित्य-यात्रामे गद्य-पद्य विधाक दर्जनाधिक पोथीक संग मैथिली मातृ-मन्दिरमे निरन्तर काव्य-पुष्पक अर्पण कऽ रहल छथि। हिनक प्रथम पोथियो गीत एवं कविता-संग्रह 'विधात्री' (2004) छनि। एकर अतिरिक्त एकटा आरो कविता-संग्रह छनि 'काव्य सरिता' (2019)। दुइ गोट कथा-संग्रह 'गामघर' (2005) आ 'आडम्बर' (2017), बाल उपन्यास 'स्वर्ण कमल' (2019) सहित आधा दर्जन उपन्यास 'सुजाता' (2006), 'गुदड़ीक लाल' (2008), 'अनठीया कुकुर' (2011), 'सुकन्या' (2019) आ 'परिवार' (2021) प्रकाशित छनि। प्रवचनात्मक निबन्धक पोथी 'महारानी कैकेयी' (2008) सेहो छनि। प्रस्तुत पोथी 'याचक के नञि' हिनक 'शब्द-चित्र'क दोसर पोथी छनि। एहिसँ पहिने 'शब्द-चित्र' 'दिल्लीक पार्क' (2018) छपि चुकल छनि।

हिनक समस्त कृतिमेसँ आधा दर्जन पोथी देखबाक सुयोग हमरा लागल अछि जाहिमे कवि, कथाकार, उपन्यासकार, निबन्धकार श्री नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' वर्त्तमानक यर्थार्थकेँ रखैत अयलाह अछि। तेँ अपन अतीतकेँ सेहो विस्मृत नहि करैत छथि। अपन संस्कृति-सभ्यता-परम्पराक गुमानो छनि तँ ओहिमे निहित विकृतिक परिहार करबाक विचारो। जे किछु दृष्टि-पथपर आयल अछि तदनुसार विधवा-पुनर्विवाहपर आधृत उपन्यास 'सुकन्या'मे ई स्वयं सेहो कहैत छथि– 'जे विधुर छथि, हुनकर तँ विवाह कोना ने कोना

भ' जाइत अछि, मुदा विधवाक लेल एहेन कोनो सामाजिक व्यवस्था नहि। ओना चोरा-नुकाकऽ इक्का-दुक्का इहो कार्य भ' रहल अछि मुदा खुलिक' आगाँ अयबाक साहस केओ नहि करैत छथि। परिणाम होइत अछि जे कतेको विधवा सामाजिक उत्पीड़नसँ तंग आबि ककरो ने ककरो संगे भागि जाइत अछि आ पुनः आपस नहि अबैत अछि। आब तँ अपेक्षाकृत विधवाक संख्या कम देखल जाइत अछि। पूर्वमे एकर संख्या बेसी होइत छलैक। जकर प्रमुख कारण छलैक बेमेल विवाह। जेना कन्या बच्चा आ वर बूढ़।'

'परिवार' उपन्यास तँ विशुद्ध रूपसँ सत्य घटनापर आधारित अछि जे उपन्यासकार स्वयं सेहो घोषित कयलनि अछि। एहि पोथीकेँ सोझे उपन्यास टा नहि कहल गेल अछि, अपितु एकरा 'संस्मरणात्मक उपन्यास'क संज्ञा देल गेल अछि। पोथीक अन्तमे लेखक अपन ओ परिजनक वंशावली दऽ एकरा आरो पुष्ट कऽ देलनि अछि। ओना तँ संयुक्त परिवार अपन मूल स्वरूपमे कतहु रहि नहि गेल अछि, मुदा पूर्णरूपसँ अस्तित्वहीनो नहि भेल अछि। प्रायः प्रत्येक परिवार पहिने संयुक्ते रहैत अछि, बादमे एकाकी भऽ जाइत अछि। फेर एकाकीसँ संयुक्त परिवार दिस डेग उसाहैत अछि अवश्य, मुदा लगले पुनः एकाकी होयबा लेल विवश भऽ जाइछ। हँ, आधुनिक संयुक्त परिवारक स्वरूप, ओकर काया पहिने सन पुष्ट-बलिष्ठ नहि रहैछ। जेँ कि संयुक्त परिवार निर्बीज नहि भेल अछि तेँ एहि उपन्यासक प्रासंगिकता सभ दिन बनल रहत। एहि उपन्यासक नायक नरेन्द्रक संग अन्य पात्र सभ अपन चरित्रक अनुकूल पाठकक मनो-मस्तिष्कमे छाप छोड़बामे सफल होइत अछि। लेखक सिनेह आ विछोहक कथाक निवेशकऽ एकरा रोचक सेहो बनौलनि अछि।

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' अपन रचना सभकेँ सदिखन वर्त्तमानसँ कुशलतापूर्वक जोड़िकऽ रखैत छथि। ई गुण बाल उपन्यास 'स्वर्ण कमल'केँ छोड़ि प्रायः सभ रचनामे छनि। ओना ओहूमे अतीतक सुमेरुगढ़क राजकुमार सुजीतक कथा वर्त्तमान प्रफुल्लकेँ बाबीक मुँहसँ सुनबाओल गेल अछि। हिनक बीस गोट कथाक संग्रह 'आडम्बर'क पहिल कथा, जे पोथीक अभिधान सेहो बनल अछि, मैथिल समाजमे वर्त्तमान श्राद्धादिक अवसरपर कयल जायवला

अपव्ययपर प्रहार करैत अछि तँ एही संग्रहक अन्तिम कथा 'जानिक' बेसाहब', टेलीभीजनपर चलैत धारावाहिकसँ उपजैत अछि आ ओहि तथ्यकेँ उजागर कऽ ओकर परिहार दिस संकेत करैछ जे मानव मात्रमे निहित दुर्गुण थिक। 'दिल्लीक पार्क'क कुल नओ खण्डमे सेहो वर्त्तमानेक यथार्थ रेखांकित भेल अछि। से वर्त्तमान समय आ विविध परिस्थिति दुनू।

प्रस्तुत पोथी 'याचक के नञि' सेहो वर्त्तमानक संग डेग मिलौलक अछि। ई वर्त्तमान राष्ट्रीय-राजनीतिक परिस्थितिमे उत्पन्न विश्रृंखलता, आर्थिक युगक यथार्थ, मैथिल-स्वभावक पूर्वेक भाँति यथावत रहब आदि विविध पक्षकेँ उजागर करैत अछि। वर्त्तमानक संग तँ ई तेना डेग मिलबैत अछि जे लगले भेल आर्थिक-अपराध ओ राजनीतिकेर विद्रूप स्वरूपसँ सम्बन्धित किछु घटना साकार भऽ उठैत अछि। कुल नओ खण्डमे निबद्ध पोथीक अवगाहन कयने हठात् ई कल्पनालोकमे ठेलैत सन प्रतीत होइत अछि। ई तथ्य अछियो। कारण समस्त तथ्य कल्पनेक तानी-भरनी लऽकऽ बुनल गेल अछि, मुदा ई यथार्थक धरातलपर तेना पैर रोपिकऽ ठाढ़ अछि जे अपन मूल कथानक आरम्भ करिते ई उत्तर प्रदेशक एही बरख 2022 मे सम्पन्न विधानसभा चुनाओकेर समय 'इत्र' बेपारी ओहिठाम पड़ल छापाक संग महाराष्ट्रक ओहि राजनीतिक चरित्रकेँ सेहो सोझाँ ठाढ़ कऽ दैत अछि, जकरा प्रसंग कहल जाइत अछि जे ओ कुरकुट (कचरा) केर व्यवसाय करैत राजनीतिकेर माँजल खेलाड़ी बनि करोड़ोक स्वामी बनि गेल। लेखक एकरा सोझे उठाकऽ यथावत नहि राखि देलनि अछि। बड़ कुशलतासँ एहि तथ्यकेँ संकेतित कयलनि अछि।

सम्पूर्ण घटना सुभान भायक चारू कात आघूर्णित होइत अछि। ओकरा ओहिठाम आयकर विभागक छापामारीसँ मूल कथानक आरम्भ होइत अछि। छापामे दू करोड़ टाका आ सोना-चानी भेटैत छैक। सुभान भाय एकरा अपन कुरकुटक व्यवसायसँ अर्जित आ बरखोसँ जमा कयल गेल सम्पत्ति कहैत अछि। ओ दोहरी जीवन जिबैत अछि। देखौआमे ओकर जीवनचर्या अति सामान्य छैक। सामान्य पहिरब-ओढ़ब, साइकिलसँ हाट-बजार कयनिहार, टूटल-भाङल घर, सम्पत्तिक नामपर दस कट्ठा घड़ारी आ

नगरसँ बाहर एकटा कुरकुटक गोदाम, बस। असलमे सुभान भाय कुरकुटक व्यवसायक अऽढ़मे नेना-भुटका आ मानव अंगक तस्कर थिक। ओ भिखमङनी करयबाक अवैध व्यापारक संग आन-आन अपराधमे सेहो लिप्त अछि। ओकरा सरदारीमे पूरा गैंग संचालित छैक। ओकर टूटल-भाङल घरक भीतर विलासिताक सभटा सरंजाम छैक। मोटर सेहो रखने अछि। कुरकुटक गोदाम ओकर अड्डा छैक, जाहिठामसँ सभटा अवैध बेपार संचालित होइत छैक, मुदा आयकर विभाग लग एकरा सभक कोनो साक्ष्य आ कि गबाह नहि छैक, ओ अपन हाथ समेटि लैत अछि। आयकर विभागकेँ कुरकुटसँ धन-अर्जनक सुभान भायक तर्कपर विश्वास नहि होइत छैक। ओ एहि केसकेँ निगरानी विभागकेँ दऽ दैत अछि।

निगरानी विभाग अपन युवा निरीक्षक सुजीत नायककेँ एकरा उघार करबाक दायित्व दैत अछि। सुभान भायक वाहन-चालक राजूक माध्यमे सुजीत पहिने कुरकुट चुनबाक काज करैत छथि आ बादमे ओहि गोदाममे तँ प्रवेश करिते छथि जाहिमे कोनो अनठीया धोखोसँ नहि जा सकैत अछि। ओ सुभान भायक घरमे सेहो प्रवेश पाबि लैत छथि। ओ अपन नाम रौनक राखि लेलनि अछि। ओ सुभान भायक विश्वास पात्र भऽ जाइत छथि। हुनक पत्नी बेगम नूरा तँ रौनककेँ जमाय धरि बनबऽ चाहैत छथि। एही बीच कुरकुट-गोदामपर छापा मारल जाइत छैक आ सुभान भाय पकड़ल जाइत अछि, मुदा राजनीतिकेर अपराधीकरणक परिणामस्वरूप कानून ओकर किछु नहि बिगाड़ि पबैत छैक। सुभान भाय शिवराज नामक गुण्डाकेँ शिराज नाम दऽ राजनेता बनौने रहैत अछि जे बादमे गृहमन्त्री बनि जाइत छैक। बेगम नूरासँ जनतब प्राप्त होइते गृहमन्त्री शिराज निगरानी विभागक महानिदेशककेँ सुभान भायकेँ छोड़बा लेल आदेश दैत अछि। एतबे नहि ओ सभटा साक्ष्य नष्ट करबा लेल सेहो कहैत अछि। महानिदेशककेँ विवश भऽकऽ सुभान भायकेँ छोड़ऽ पड़ैत छनि। निगरानीक बरखोक परिश्रम व्यर्थ चलि जाइत छैक। एहि मिशनपर लगायल गेल निगरानी विभागक अधिकारी लालबाबूक संग अनेक मारल जाइत छथि। कतेको निपत्ता छथि, मुदा राजनीतिकेँ एहिसँ कोन अन्तर पड़ैत छैक। ताहूमे ओहि राजनीतिकेँ जे ओहि गुण्डाक हाथेँ संचालित होय जे खद्धर पहिरि अपन बाना टा बदलैत अछि, ओकर आत्मा तँ पूर्ववते रहैत छैक।

एमहर सुभान भायकेँ रौनककेर कोनो सुनिगुनि नहि लगैत छैक। ओ अनुमाने टा करैत रहि जाइत अछि जे रौनक मारल ने गेल होय, किंवा महुआ जकाँ कोनो गुप्त स्थानपर ने राखल गेल होय। सुभान भायकेँ रौनक भेटथिन कोना ओ तँ सुजीतक रूपमे दिल्ली स्थानान्तरित भऽ चुकल छथि। विभाग हुनका पूर्व तिथिएमे दिल्ली स्थानान्तरित कऽ देने छनि जाहिसँ सुभान भायकेँ असल तथ्यक भाँज नहि लगैक। ई नीके भेलैक। कारण सुभान भाय नहि चाहैत छल जे बेबी नूरसँ रौनकक निकाह कराबय। ओ तँ रौनककेँ अपना बाटसँ हटाबऽ लेल सोचियो चुकल छल, मुदा निगरानी विभाग सतर्क छल। सुजीतक सुरक्षा लेल सुभान भायक संरक्षणमे पोषित अपराध-जगतक प्रमुख सहयोगी चरस-गाँजाक तस्कर दीनूक प्रेमिका महुआकेँ माहुर धरि पिया देल जाइत छैक।

एहि सम्पूर्ण घटनाक्रमक परिणति निराशासँ भरि दैत अछि, मुदा लेखक निराश नहि होइत छथि। ओ अपना संग पाठक समाजमे सेहो आशाक संचार करैत छथि। निगरानीक महानिदेशक सुभान भायकेँ छोड़ि दैत छथि अवश्य, मुदा ओकरा विरुद्ध जमा कयल गेल साक्ष्यकेँ नष्ट नहि करैत छथि। ओ सभटा साक्ष्यकेँ लिफाफमे सीलबन्नकऽ एहि आशाक संग राखि दैत छथि जे कहियो ने कहियो सरकार बदलबे करतैक। काल्हि कोनो आन मन्त्री आबथि आ गड़ल मुर्दा उखारथि तँ ई साक्ष्य सभ काज करबे करतैक।

एही सम्पूर्ण घटनावलीकेँ 'याचक के नञि'मे विन्यस्त कयल गेल अछि। एकर मूल स्वर अपराध-जगतक फड़ब-फुलयबामे राजनीतिक संरक्षणकेँ मुखर करब थिक, मुदा लेखक ठाम-ठाम आनो आन यथार्थकेँ सोझाँ रखैत गाम-घरमे आबि रहल परिवर्त्तनसँ सेहो अवगत करायब नहि बिसरैत छथि। पोथीक प्रथमे खण्डमे, जे असलमे एहि 'शब्दचित्र'क आथरि बन्हैत अछि, फेकू बाबाक दलान देखिते लेखककेँ गामसँ पलायन आ दलानहीन नगरीय घर बनब आरम्भ होयब, मैथिलक पोथी माङिकऽ पढ़बाक स्वभाव, सामर्थ्य रहितो पोथी नहि कीनब आदि अखरैत छनि। एही तरहेँ गुण्डा शिवराजसँ नेता बनल शिराजक मुँहसँ राजनीतिमे व्याप्त परिवारवाद, दागिए लोकक नेता होयब, सरकारी तन्त्रक सुभान भाय सन

अपराधी लग बन्हकी लागब, शासन-प्रशासनक गातमे भूरे-भूर होयब, कथित उच्चवर्गीयमे अनैतिकताकेँ फैशन बुझल जायब, आरक्षणक दुष्प्रभावसँ वर्ग विशेषक पीड़ित होयब, जकरा नोकरी भेटि गेलैक तकरा अपनाकेँ अङरेजक सन्तान बुझब, वर्त्तमान शिक्षा प्रणालीसँ देशमे समानता आनब सम्भव नहि होयब आदि तथ्यकेँ सेहो कथ्यक माध्यमे समाहित करैत छथि।

रोचकता, औत्सुक्य ओ प्रवाहपूर्ण घटनाक्रमक गुणसँ पूर्ण पोथी पाठककेँ अपना संग बन्हबामे क्षम अछि। घटनावलीमे विश्वसनीयता छैक। तथापि किछु तथ्य सहज नहि प्रतीत होइत अछि, जेना मोबाइलक एहि युगमे फेकू बाबाकेँ दौहित्रक जन्मक सूचना टेलीग्रामसँ आयब, जखन कि टेलीग्रामक व्यवस्था देश भरिमे समाप्त कऽ देल गेल अछि। तहिना मात्र छओ मास पहिने जाहि महिलाक संग शिवराज अनुचित कयने होय तकरा शिराजक एतबे कहने जे ओकर मुँह-कान टा शिवराजसँ मिलैत छैक, ओ जनानी विश्वास कऽ लैत अछि आ क्षमा माङि लैत अछि, जखन कि ओ स्वयं कहैत अछि जे 'ओ हमरा संग जे व्यवहार कयने अछि, तकरा हम जीवन भरि बिसरि नहि सकैत छी।' तहिना सरकारी स्तरपर असली रौनककेँ मारि नकली रौनक बनायब, महुआकेँ माहुर पिआयब, एकटा सामान्य दरोगाक कहबापर सुभान भाय सन गैंगेस्टरक शव चिन्हबा लेल गोदाम धरि आबि जायब सहज नहि लगैत अछि। मैथिलीमे उपलब्धताक बादो पेशाब, महकमा, पेशेवर, तमाम, हट्ठा-कट्ठा, चहेता, तलब, तहकीकात, जवानी, हिदायत, आदिक प्रयोग ठेकैत अछि। साहित्यकारक दायित्व शब्द-संरक्षणो तँ छैके, मुदा तेँ पोथीमे उपस्थापित विमर्श कनेको झूस नहि होइत अछि। आपराधिक घटनावलीक आश्रय लेबाक कारणेँ अपन ई साहित्यिकता हुसैत नहि अछि।

पहिल खण्डकेँ छोड़ि सौँसे पोथी उपन्यासक आस्वाद दैत अछि। तथापि एकरा 'शब्द-चित्र' कहल गेल अछि। एहिठाम ई जिज्ञासा स्वतः जाग्रत भऽ जाइत अछि जे उपन्यास लेल आवश्यक तत्त्व कथानक, चरित्र-चित्रण, वातावरण, कथोपकथन, शैली ओ उद्देश्य तँ एहिमे निहित छैक, तखन पोथीकेँ 'शब्द-चित्र' संज्ञा किएक प्रदान कयल गेलैक? सभटा साहित्यिक विधा शाब्दिक चित्रांकने तँ होइछ। लगैत अछि जे जेँ

उपस्थापनाक ढंग एकरा आन सभसँ फराक करैत छैक आ पूर्णत: कथा-उपन्यासक साँचामे सटीक नहि बैसैत अछि, तेँ एकरा विधा विशेष 'शब्द-चित्र'क अभिधान देल गेलैक अछि। ई ने उपन्यास जकाँ आरम्भे होइत अछि आ ने विराम लैत अछि। ई रंग भरल पूर्ण शब्दचित्र नहि, अपितु साहित्यिक आरेखन (लिटरेरी स्केच) थिक। चित्र तेँ थिके, रेखाचित्र थिक जकर महत्त्व कोनो आन चित्रांकनसँ कनेको न्यून नहि। रेखाचित्रो बनयबा लेल कुशल कलाकार होयब नितान्त आवश्यक, नहि तेँ ओ चिरचीरी झीकब टा भऽकऽ रहि जायत। श्री नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'क ई रचना मात्र किछु डरीर झीकब नहि, अपितु राष्ट्रक, समाजक, राजनीतिक परिक्षेत्रक पूर्ण चित्र थिक जे ओहि शब्दक माध्यमे चित्रित भेल अछि जकरा ब्रह्म कहल जाइत अछि। शब्दकेँ ब्रह्म एही दुआरे कहल गेलैक अछि जे शब्द आ ब्रह्म दुनूमे अक्षर-अविनाशी होयबाक गुण विद्यमान अछि। ब्रह्म तेँ शाश्व छथिहे, शब्दो हुनके जकाँ नित्य होइत अछि। एकरो नाश नहि होइत छैक। कारण एकर निर्मिति ओहि अक्षर-समूहसँ होइत छैक जे अक्षय थिक। तेँ अक्षर-साधक किंवा शब्द-ब्रह्मकेर उपासक सेहो कालजयी होइत छथि। हँ, एहि लेल चाही ब्रह्मक ओ शश्वत गुण जे 'तिल-तिल नूतनता'केर निवेश करैत रहय।

श्री नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' मैथिलीक सुपरिचित साहित्यकार छथि। प्रस्तुत पोथीक संग हिनक समस्त कृति अहर्निश शब्द-ब्रह्मक उपासनामे लीन होयबाक सुपरिणाम थिक। हम हिनक अभिनन्दन करैत आद्याशक्ति भगवती जानकीसँ प्रार्थना करैत छी जे साहित्य-साधक श्री नन्द कुमर मिश्र 'नन्द'केँ सभ दिन स्वस्थ, दीर्घायु आ ऊर्जावान बनौने रहथि जाहिसँ ई मैथिलीक भण्डारकेँ भरबामे अहिना अहर्निश जुटल रहथि।

डॉ. अमलेन्दु शेखर पाठक
प्रधानाचार्य
उपशास्त्री संस्कृत महाविद्यालय,
पिण्डारुच, दरभंगा

लेखकीय

नेनपनमे सुनैत छलियैक जे गाम-गाममे रातिमे मुरकट्टा अबैत छलैक । ओकरा माथसँ धधरा उठैत छलैक । लोक सभ ओकरा भगेबाक लेल ढोल वा टीन पीटैत छलैक आ प्रात:काल हल्ला होइत छलैक जे कतेको बच्चाकेँ मुरकट्टा उठाक' ल' गेल । ओहि बच्चा सभक विषयमे एहन भ्रान्ति उड़ाओल जाइत छलैक जे ओकरा सभकेँ निर्माणाधीन पुलमे बलि देल जाइत छैक मुदा सत्य ? सत्य तेँ ई छलैक जे नीक-नीक बच्चाकेँ विदेशीक हाथे बेचि देल जाइत छलैक आ जे नहि बिकाइत छलैक, तकरा अपंग बनाक' ओकरासँ भीख मँगबाओल जाइत छलैक । प्राय: सभ शहरमे एकरा सभक संघ होइत छैक जे रेलवे स्टेशन वा बस स्टैण्डमे अपन अड्डा बनौने रहैत छैक आ ओतहिसँ पूरा संघक संचालन करैत छैक ।

एक दिन स्टेशन गेल छलहुँ । ट्रेन अयबामे देरी छलैक । हम एम्हर-ओम्हर टहलि रहल छलहुँ । देखलहुँ जे स्टेशनपर एक गोटे, जे करीब अस्सी-पचासी वर्षक छलाह, बेंचपर बैसि किछु खा रहल छलाह । तावत् एकटा भीख मँगनिहारि अपन तीनटा बच्चाकेँ ल' क' ओहि ठाम पहुँचि गेल आ ओकर तीनू बच्चा ओहि बूढ़ाक सोझाँ ठाढ़ भ' गेल आ रोटीक याचना शुरू कयलक । बूढ़ा जेम्हरे घुमैत छलाह, तीनू बच्चा ओम्हरे ठाढ़ भ' जाइत छल । अंतत: बूढ़ा उबिक' बाँचल सभटा रोटी ओहि तीनू बच्चाकेँ द' देलथिन्ह आ अपने जल पीबि संतोष कयलन्हि । हुनका तेँ जे किछु भेलन्हि मुदा हमरा ई दृश्य देखि बड़ कष्ट भेल । हम किछु

बजबाक प्रयास कयलहु तँ एकटा सज्जन हमर हाथ पकड़ि कनेक दूर ल' गेलाह आ कहलन्हि, 'एहि लफड़ामे नहि पड़ू । ई सभ बड़ खतरनाक होइत अछि । ओकरा सभक वेष-भूषापर नहि जाउ । ई सभ पेशेवर भिखमंगा अछि आ भीख माँगब एकरा सभक स्वभाव बनि गेल छैक । एकरा सभक माँथपर पैघ-पैघ अपराधीक हाथ होइत छैक जे एकर संरक्षण आ शोषण दुनू करैत छैक । सभकेँ प्रधानमंत्री आवास योजनासँ घर बनल छैक, तथापि ई सभ स्टेशने परिसरमे खाना-बदोसक जीवन व्यतीत क' रहल अछि आ अपन घर किरायापर लगौने अछि । एकरा हम-अहाँ की, भगवानो नहि सुधारि सकैत छथिन ।

एकर मुख्य पात्र सुभान भाय एकरा सभक सरगना छथि । हुनक रहन-सहनसँ ई सभ बूझब कठिन छलैक । सम्पूर्ण विधायिका वा प्रशासनिक तंत्र सुभान भाय लग बंधक लागल छल । ओहिमे किछु कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी सेहो छलाह मुदा हुनका सभक स्थिति ओहने छलन्हि जेना बत्तीसो दाँतक बीचमे जीह ।

पोथीमे वर्णित स्थान आ पात्र सभ काल्पनिक अछि । कदाचित् जँ किनकहुसँ घटना मिलैत होअय तँ ओहि लेल क्षमाप्रार्थी छी ।

पोथीमे रचनात्मक सहयोगक लेल हम डा. योगानन्द झाजीकेँ धन्यवाद दैत छियैन्हि, संगहि आभार व्यक्त करैत छियैन्हि । हम आभारी छी डा. अमरनाथ, पूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र सह संकायाध्यक्ष मानविकी, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा जे अपन वैचारिक सहयोग द' प्रोत्साहित कयलन्हि ।

अंतमे गोसाउनि-वैद्यनाथ स्मृति मंचक सभ सदस्यकेँ शुभकामना ।

जानकी प्राकट्य महोत्सव
दिनांक : 11.05.2022

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'
उफरदाहा, दरभंगा
मो. 8986261756

याचक के नञि

(मैथिली शब्द-चित्र)

(1)

भिखमंगाकेँ लोक हेय दृष्टियेँ देखैत अछि । ओकरा दुरदुरायब हमरा लोकनिक नियति बनि गेल अछि । केओ ओकरापर दया सेहो देखबैछ आ केओ कहत जे ओकरा सहयोग कयलासँ ओकर प्रवृत्तिकेँ बढ़ाबा भेटैत छैक, जे उचित नहि । कर्त्तव्येसँ अधिकार जुड़ल छैक, तेँ कर्त्तव्य सभकेँ करबाक चाही । एहि सहयोगसँ ओ कर्त्तव्य विमुख भ' सकैत अछि । अधिकांशतः एहन विचार साम्यवादी सोचबला लोकक होइत छन्हि जे स्वयं चन्देपर जिबैत छथि । एकटा साम्यवादी सोचबला वकीलक फेरामे हमहूँ पड़ल छलहुँ । एकटा केसक पैरवीमे ओ अपन फीस तँ पाइ-पाइ जोड़ि क' ल' लेलन्हि मुदा पेशकारक पेशगी देबासँ मना क' देलन्हि । नतीजा भेल जे वकील साहेबकेँ हाजिरी देबामे तीन वा चारि मिनटक देरी भ' गेलन्हि । ओ पेशकार विलम्ब शुल्क लेबापर अड़ि गेल । वकील साहेबकेँ तँ किछु नहि भेलन्हि मुदा हमरा विलम्ब शुल्कक स्टाम्प कीनि क' देब' पड़ल ।

याचक वा भिखमंगा के नहि अछि ? एक दिन मंदिरमे एकटा भजन सुनने छलियैक "दाता एक राम भिखारी सारी दुनियाँ" । केओ अभावे तँ केओ स्वभावे आ केओ ऊच्च पदक बलपर । केओ पेटक खातिर तँ केओ महत्वाकांक्षाक पूर्तिक लेल । गरीब-नचार जँ मँगैछ तँ ओ

भीख आ अन्य लोक वा सम्पन्न वर्गक लोक माँगथि तँ ओकरा चंदा कहल जाइत छैक । एहि पृथ्वीपर 'अयाची' एकेटा भेलाह, बाँकी सभ केओ याचके तँ छथि । देवराज इन्द्र याचक बनि दानवीर कर्णक ओहि ठाम पहुँचलाह आ छलपूर्वक हुनक कवच आ कुण्डल, जाहिमे हुनक प्राण छलन्हि, दानस्वरूप प्राप्त कयलनि । एहिमे हुनक स्वार्थ छलन्हि । ओ अपन पुत्र अर्जुनक जीवनक रक्षाक लेल ई कार्य कयलन्हि । असुरक विनाशक लेल देवेन्द्र दधीचि महाराजसँ हुनके देहक हड्डीक याचना कयलन्हि आ सेहो जीविते अवस्थामे, मरणोपरान्त नहि । मुनि सहर्ष अपन हड्डीक दान दऽ देलथिन्ह । ओहि हड्डीसँ तीनटा धनुष सारंग, गाण्डीव आ पिनाक बनाओल गेलैक आ चारिम वज्र बनलैक जाहिसँ देवराज इन्द्र असुरराज वृत्रासुरक अन्त कयलन्हि । देवराज इन्द्र अपन स्वार्थक लेल ककरोसँ आ किछुओ माँगि सकैत छलाह । ओ एतेक पदलोलुप छथि जे पदलोलुपताक डरसँ राजा सगरक यज्ञक अश्वकेँ कपिल मुनिक आश्रममे बान्हि देलन्हि आ ओहि चक्करमे राजा सगरक साठि हजार निर्दोष बालक कालक गालमे समा गेलाह । ओ सौंदर्यक सेहो पुजारी छथि तेँ अहिल्याक संग छल कयने छलाह आ ऋषि गौतमकेँ धोखा देने छलथिन्ह । तकर परिणाम सेहो भोग' पड़लन्हि । ओ अपना आदतिसँ लाचार छथि । सृष्टिक पालनकर्त्ता भगवान विष्णु सेहो कतेको बेर याचक बनलाह अछि । एक बेर तँ ओ वामन बनि असुरराज बलिसँ तीन डेग भूमिक याचना कयलन्हि । असुरराज बलि अपनाकेँ सर्वशक्तिमान बुझैत छल । ओकरा बहुत अहंकार भ' गेल छलैक । ओकर अहंकारकेँ तोड़बाक लेल श्रीहरि ई लीला कयने छलथिन्ह । ओ हिनका बालक बुझि तीन डेग भूमि देबाक लेल तैयार भ' गेल मुदा गुरु शुक्राचार्य श्रीहरिकेँ चीन्हि गेलथिन्ह । ओ असुरराज बलिकेँ दान करबासँ मना कयलथिन्ह मुदा अहंकारवश राजा बलि गुरु शुक्राचार्यक निर्देशपर ध्यान नहि देलन्हि । शुक्राचार्य सेहो अपराध कयलनि । दान सबसँ उत्तम कार्य थिकैक । ताहिसँ ककरो रोकबाक नहि चाही । ओहि अपराधक लेल गुरु शुक्राचार्यकेँ सेहो एकटा आँखि गमाब' पड़लन्हि । एहिमे असुरराजक संग छल अवश्य भेलन्हि मुदा श्रीहरि विष्णुकेँ अपन कोनो स्वार्थ नहि छलन्हि । ओ लोकक अहंकार मेटयबाक लेल आ

सृष्टिक संतुलन बनयबाक लेल एहन कार्य करैत छलाह ठीक तहिना जेना पृथ्वी पर अपराध केनिहारकेँ राजा वा न्यायालय दण्ड विधानक अनुरूप दण्डित करैत अछि । जँ सब केओ ओकरा अपना हाथमे ल' लेत तँ ओहिसँ अराजकता बढ़तैक । असुरराज सएह तँ करैत छलाह । देवाधिदेव महादेवकेँ तँ लोक भिखमंगे नाम धयने छन्हि मुदा हुनक भिक्षाटनक किछु अलग उद्देश्य छन्हि । ओ दुनियाँक लेल भीख मँगैत छथि । ओ भीख माँगि दोसराक प्रतिपाल करैत छथि । जँ से नहि, तँ हुनका भीख मँगबाक की प्रयोजन छन्हि ? कोनहु प्राणीक लेल भोजन वस्त्र आ आवास आवश्यक होइछ । तकरहि लेल ओ दिन-राति परिश्रम करैत अछि, नीक-अधलाह, उचित-अनुचित, नैतिक-अनैतिक काज करैत अछि मुदा जे भोजने नहि करत, वस्त्रे नहि पहिरत, कोनो घर-दुआरिसँ सरोकारे नहि राखत, श्मशानेमे बैसि दिवस गमाओत, भूते-प्रेतक संग नाचि अपन मनोरंजन करत, से भीख किएक माँगत ? तखन जे केओ परोपकारी होइत छथि, से अनका हितक लेल अपना मर्यादाक ध्यान नहि रखैत छथि । से भोला बाबा भीख मँगैत छथि, सभक घर भरैत छथि आ भिखमंगा होइतहुँ दानी-शिरोमणि विरदसँ सेहो विभूषित छथि, सर्वहाराक पोषक छथि, ओकर आदर्श छथि । हुनक जीवन-शैली लोककेँ जीबाक प्रेरणा दैत अछि, बिना कोनो भेद-भावक, बिना ईर्ष्याक । जकरा भोजनक समस्या छैक, वस्त्रक समस्या छैक आ घरक समस्या छैक, से कोना दिवस गमाओत, सएह तँ भोलाबाबा सिखबैत छथिन्ह । से कहब छन्हि फेकू बाबाक । ओना फेकू बाबाक असली नाम छन्हि, 'सम्पूर्णानन्दजी' । ओ गप फेकबामे माहिर छथि । जखन ओ गप फेक' लगैत छथि, तँ लगैत अछि जेना क्रिकेटक मैदानमे सचिन तेन्दुलकर चौका-छक्काक झड़ी लगा देने होथि आ नवजोत सिंह सिद्धू कोमेंट्री क' रहल होथि । तेँ लोक सब हुनका फेकू बाबा कहैत छन्हि । ओ केहनो-केहनो लोककेँ अपना तर्कसँ चित्त क' दैत छथि आ से कोनो मुँहक जोरसँ नहि, सटीक उदाहरणसँ ।

एक बेरक गप अछि । गाम गेल रही । बाटेमे फेकू बाबाक दलान छन्हि । आब तँ दलान बहुत कम्मे देखबामे अबैत अछि । दलानक अर्थ भेलैक, जाहि ठाम दस-बीस गोटे बैसिक' गप-सप करथि । से तँ आब

सम्भवे नहि अछि । कारण, गाममे आब छथिहे के ? 'ने ओ देवी आ ने ओ कराह', बाँट-बखरासँ ओहुना घड़ारीक अभाव भ' गेल छैक आ लोक शहरी डिजाइनमे घर बनायब शुरु कयलक अछि, ताहिमे दलान कत' पाबी । दलान छन्हि फेकू बाबा सनक गनल-चुनल लोककेँ, जिनका शहरसँ झरक लगैत छन्हि । कतबहु बेटा-पुतोहु कहैत छथिन्ह मुदा फेकूबाबा टससँ मस नहि होइत छथि । ओ कहैत छथिन्ह जे सब किछु तँ बड़ नीक मुदा घरेमे जे पैखाना-पेशाब...।

हम देखलहुँ जे फेकू बाबा कनेक अपस्याँत जकाँ छथि । हाथमे कोनो कागत छलन्हि । सएह लेने एम्हर-ओम्हर क' रहल छलाह आ चारू कात एना ताकि रहल छलाह जेना ककरो प्रतीक्षा क' रहल होथि । दलानपर तीन-चारि गोटे बैसल छलाह मुदा ओहो सब स्तब्ध छलाह । तेँ हम एहन अनुमान कयलहुँ । हमरा देखितहिँ बाबाकेँ जानमे जान अयलन्हि आ पुछलन्हि, 'की हौ कवियाठ ! गाम-घरकेँ बिसरिये गेलाह की ? कतेक दिनक बाद देखि रहल छियहु ?'

हम कहलियन्हि, 'नहि...नहि...बाबा ! एहन गप नहि छैक । किछु कार्यवश नहि आबि सकलहुँ । गाम-घरकेँ कतहु बिसरियै । खास क' अहाँकेँ तँ नहिएँ बिसरलहुँ अछि आ ने बिसरब ।'

बाबा कहलन्हि, 'हमरा के मोन रखैत अछि ? हम कोन जोगरक थिकहुँ ? मुँहपर सभ ऊपर-चापर करैत अछि आ पीठक पाछाँ गारि पढ़ैत होयत ।' बाबा हाथक कागत दैत पुछलथिन्ह, 'कनेक एकरा देखह तँ की थिक ? एखने डाक बाबू द' गेल अछि ।'

हम देखलहुँ जे ओ टेलीग्राम छलैक आ ओहिमे शुभ संदेश छलैक । बाबाकेँ दौहित्र जन्म लेने छलन्हि । तकरे समाचार आयल छलन्हि आ बाबाक अपस्याँत होयबाक कारण सेहो टेलीग्रामे छलन्हि । ओ बुझैत छलाह जे टेलीग्राममे केवल अशुभे समाचार होइत छैक । से केवल बाबेटा नहि, गाम-देहातक अधिकांश लोक सएह बुझैत छथि । जखन बाबाकेँ सब गप कहलियन्हि तँ ओ खुशीसँ मयूर जकाँ नाच' लगलाह आ हमरो मिठाइ खुआबक आश्वासन देलन्हि । पुनः हमरा हाथमे अखबार

देखि पुछि देलन्हि, 'ई आजुक अखबार छियहु की ?'

हम कहलियन्हि, 'हँ बाबा, अजुके थिक, पढ़बै की ?'

फेकू बाबा बजलाह, 'किएक हमरा बुड़ि बना रहल छह । हम कतेक पढ़ल-लिखल छी, तोरा नहि बूझल छह की ?'

हम कहलियन्हि, 'नहि... नहि... बाबा ! हम ओहिना किछु कहि देलहुँ, एकरा अन्यथा जुनि लेल जाओ ।'

फेकू बाबा पुछलन्हि, 'ओहि अखबारमे की सब छैक ?'

हम कहलियन्हि, 'आर कोनो खास बात नहि छैक । एकटा अधिकारीकेँ निगरानी विभाग घूस लैत पकड़ने अछि ।'

फेकू बाबा बजलाह, 'हौ, ई समाचारो लिखनिहार बुड़बके लोक बुझाइत अछि । घूसो लेब तँ एक तरहेँ भीखे माँगब ने भेलैक ? हमरा देशक विद्वान आ मनीषी लोकनि भिक्षाटनेसँ अपन जीवन-यापन करैत छलाह । विद्यालय चलबैत छलाह आ बच्चो लोकनि घूमि-घूमिक' भिक्षाटन करैत छलाह । ईहो तँ सएह कयलक अछि । तखन ई सब विभाग खोलिक' सरकार बेरोजगारीकेँ अवश्य कम कयलक अछि । ई नीक गप भेलैक, मुदा सरकारक खर्चा अनावश्यक बढ़ि गेलैक अछि ।'

हम पुछलियन्हि, 'बाबा भीख माँगब आ घूस लेब दुनू एक कोना भेलैक ? दुनूमे बड़ अन्तर छैक । भीखक निर्धारण जे कतेक देबाक चाही, भीख देनिहार करैत अछि आ घूसक निर्धारण घूस लेनिहार करैत अछि, जे ओकरा कतेक चाही ।'

फेकू बाबा बजलाह, 'देखह, चीज तँ दुनू एके अछि । तखन ओकर प्रकार अलग-अलग छैक । एकटा लुटिहारा दोसराक सम्पत्ति वा धन लूटि लैत अछि, तकरा साम्यवादी लोकनि सर्वहाराक संज्ञा दैत छथिन । ओकर बचाओ करैत छथि । आवश्यक भेने ओकरा लेल हड़तालो करैत छथि । मिला-जुला क' ओकरा कृत्यकेँ उचित ठहरबैत छथि । ताहि ठाम ककरोसँ किछु माँगब घूस कोना भेलैक ? रहीम कवि कहैत छथि "रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं । उन ते पहले वे मुए...'

आब कहू रहीम कवि कोनो बुड़िबक लोक तँ नहि छलाह । ओहो कहैत छथि जे माँगनिहारकेँ द' देबाक चाही । अन्यथा ओ तँ मरले अछि, अहूँ जीवित नहि छी । गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज लिखैत छथि जे 'सुर नर मुनि सबकी यह रीती । स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती ।' अर्थात देवतो लोकनि बिना चढ़ाबाक प्रसन्न नहि होइत छथि आ पूजाक फल नहि दैत छथि । हनुमान चालीसामे तँ स्पष्ट वर्णित अछि 'राम दुआरे तुम रखबारे । होत न आज्ञा बिनु 'पैसा' रे ।। एकटा कवि लिखैत छथि जे 'टाका थिक ओ गंगाजल जे सिद्ध करए सब काज ।' तखन गंगाजल प्राप्त करब कोना अनुचित काज भेलैक ? ताहि ठाम अहाँ सभ एहि गपकेँ ल'क' एतेक हो-हल्ला करैत छी, से हमरा बुझने उचित नहि ।'

हम पुछलियन्हि, 'बाबा ! मैथिलकेँ आइ केओ नहि देख' चाहैत छन्हि । सर्वत्र हुनका सभक विरोध किएक भ' रहल छन्हि ?'

फेकू बाबा कहलन्हि, 'एकर दू टा कारण छैक । मैथिल सबसँ तेज होइत छथि आ ताहिसँ बेसी बुड़ि सेहो । करता कम आ ढकता बेसी । दिन भरि चाह-पानक दोकान ओगरने रहताह । हरदम एही ताकमे रहताह जे केओ आओत तँ ओकरासँ चाह-पान खायब आ जखन गप करताह तँ लागत जे केहन लाखपतिक धिया-पूता छथि । समाजमे एहन कमे लोक छथि, मुदा बदनाम तँ पूरे समाज भ' जाइत अछि । दोसर गप ई जे अपनासँ तेज लोकक विरोध सब दिनहिसँ होइत आबि रहल छैक । से ईर्ष्याक कारण भ' रहल छैक । विरोधसँ घबरयबाक नहि चाही । एहिसँ गुणमे निखार अबैत छैक । पूर्वहु गोनू झा वा बीरबलक राजदरबारमे विरोध होइत छलन्हि । ओ लोकनि अपन चतुरतासँ सब विरोधीकेँ चित्त क' दैत छलाह । मैथिल सभसँ बेसी चतुर, विद्वान, युगद्रष्टा, स्वाभिमानी, उचितवक्ता, कुशाग्रबुद्धि कहल गेल छथि । ई गप उचित सेहो अछि, मुदा हुनकोमे एकटा दुर्गुण छन्हि । ओ पोथी माँगि क' पढ़ताह । किनबाक सामर्थ रहितहुँ, किनताह नहि । ओना पोथी माँगिक' पढ़ब कोनो अनुचित गप नहि भेलैक, मुदा ओकरा पुनः आपस नहि करब महान अनुचित भेलैक । तेँ कहलो गेल छैक- "लेखनी, पुस्तकी, दारा, परहस्त गता गता'' सम्भवतः विरोधक

ईहो एकटा कारण भ' सकैत छैक । एहि संदर्भमे आचार्य जयमंत मिश्रक उक्तिक उल्लेख करब उचित बुझना जाइछ–

"अधिकांश लोकक आरोप अछि, मैथिलीक पोथी सुलभ नहि । सामान्य पाठकक कहब छैक, मैथिलीक साहित्यकार सादर, सस्नेह आ समीक्षार्थ पोथी पठयबाक प्रत्याशामे उनटा-पुनटा राखि दैत छथि । मैथिलीक अधिकांश प्राध्यापक लेल पोथी मोल लेब अपमानजनक । स्पेसीमेन कॉपी माँगब ओ अपन जन्मसिद्ध अधिकार बुझैत छथि । संस्थाक पदाधिकारी आ कार्यकर्त्ताक लेल पोथी-पतराक महत्व गौण । प्रकाशन-वितरण बाँतर । नाच-गान आ भाषण-आयोजनमे लोककेँ बझाकए राखि संस्थाक सीढ़ी चढ़ब आ अपन काज सुतारब मुख्य लक्ष्य । ओएह लाभकारी । तथापि दोष सामान्य लोकक जे ओ मातृभाषाप्रेमी नहि अछि । ओ मैथिलीक पोथी नहि किनैत अछि । कीनि कए मैथिली पुस्तक नहि पढ़ी, मैथिलीभाषीक ई प्रतिज्ञा अद्यापि अटूट अछि । मैथिल समाजक पुरान ओ नव पीढ़ीक लोक अपन संकल्प तोड़ए नहि चाहैत अछि । एहि अटल संकल्पक फलभोगी हम स्वयं छी । पुस्तक पड़ल अछि । जे केओ देखैत छथि मूल्यमे 'बहुत सुन्दर' 'अपूर्व' शब्द दैत छथि । हमर अपन नियम अछि । मैथिलीमे प्रकाशित पोथी बिना मूल्य देने नहि ली । अपन नियमक पालन कए रहल छी । मैथिलीक विकासमे मैथिलक पूर्वोक्त प्रतिज्ञा बाधक अछि ।"

'मैथिली साहित्य ओ राजनीति' पोथीक माध्यमे डा. रमानन्द झा 'रमण' कहैत छथि–

गत वर्ष एकटा पोथी छपबौलहुँ "मैथिली नऽव कविता'' । सम्पूर्ण मैथिल समाजसँ व्यक्तिकेँ बीछि पत्र लिखल । मना केनिहारकेँ छोड़ि सय गोटेकेँ वी.पी.पी. सँ पोथी पठाओल । एकासी फीसदी सहर्ष छोड़ाए लेल । पोथी फिरौनिहारमे पनचानबे फीसदी एहेन लोक छलाह, जनिक रोजी-रोटी मैथिलीक कारणे छनि । किछु साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत साहित्यकार छलाह, किछु संस्थाजीवी मैथिल जे पाग पहिरि फोटो खिचेबामे सबसँ आगू रहैत छथि । समस्त व्यक्तिक नामावली प्रकाशित

भेलापर एक मैथिलीभोगी लिखल, 'जाहि क्षेत्रमे छी, ओही क्षेत्रमे रहू'। एक दोसर हाजी प्रोफेसर छपौल 'एम्हर साहित्य अकादेमीक कार्य-कलाप हुनका बेसी मोहित करए लगलनि अछि।' अर्थात् जे मैथिलीभोगी नहि छथि, मैथिलीमे लिखबाक-पढ़बाक कोनो अधिकार नहि छनि। लाभान्वित होइत वर्गक अतिरिक्त जँ केओ व्यक्ति राष्ट्रीय संस्थाक कार्य-कलापसँ मोहित भेल तँ ओ निंदनीय आ अनैतिक थिक जेना कि टाटक फाँकसँ ककरो आंगनमे हुलकी देब अनैतिक आ पाप मानल जाइछ। सकपंज होइत मैथिलीक आधारकेँ जखन बेसीसँ बेसी व्यापक बनेबाक प्रयोजन अछि, एहि प्रकारक विचार पोसब, बैसलहे डारि पर छौ मारब थिक।"

कहल गेल अछि 'एकां लज्जां परित्यज्य सर्वत्र विजयी भवेत्'। एकर उपयोग विस्तृत रूपसँ हमरा देशक राजनीतिज्ञ लोकनि करैत छथि। राजनीतिमे कुशल राजनीतिज्ञ ओएह मानल जाइत छथि जे बाजथि किछु आ करथि किछु, जे प्रलोभनक जालमे जनताकेँ फँसा क' अपन उल्लू सीधा करथि आ जनता बेरि-बेरि ठकयलाक बादो पुनः हुनका झाँसामे आबि जाथि, ठीक ओहिना जेना महात्माजीक तोता बारम्बार पढ़यलाक बादो बहेलियाक जालमे फँसि जाइत छलैक।

आइ अन्य वर्गक लोक ब्राह्मणसँ ईर्ष्या करैत छथि। सभ क्षेत्रमे हुनक विरोध करैत छथि। हम तँ कहब जे ई विरोध छोड़ि हुनका सभक अनुशरण करबाक चाही। ओ लाखक-लाख खर्च क' क' अपना बालकक उपनयन माने जनेउ संस्कार कराबैत छथि। ओ एहि माध्यमसँ बच्चाकेँ भीख माँगब सिखबैत छथि, एहि लेल जे जँ भीख माँगबामे निपुण रहताह तँ बेरोजगारो रहि भूखल नहि रहताह। कोन ठेकान, एहि आरक्षणक युगमे रोजगार भेटतन्हि वा नहि। जँ से नहि तँ कए गोटे गायत्री-सावित्री वा जनेउक मंत्र जनैत छथि ? संध्या-तर्पण तँ अलोपित भइए गेल। कोनहु शुभ कार्यमे दुर्वाक्षतक मंत्र पतरा देखि सम्पन्न कयल जाइत अछि। भीख मँगबासँ नम्रता सेहो बढ़ैत छैक, मुदा आइ-काल्हि तँ भीखो माँगब अधिकार भ' गेलैक अछि। भिखमंगोकेँ मनोनुकूल जँ नहि देबैक तँ ओ अपशब्दक प्रयोग सेहो करत आ ओकरा अहाँ किछु कइओ

नहि सकैत छियैक। कदाचित् जँ किछु करबैक तँ लोक अहीँकेँ दूसत। मरलकेँ मारिक' पहलवान बनैत छी ?

भीखक अनेक प्रकार होइछ। पेट भरबाक लेल भीख, आधुनिक ऐश-आरामक लेल घूस आ महत्वाकांक्षाक पूर्तिक लेल चन्दा। मूल रूपसँ बुझू जे पसेना चुआक' जे उपार्जन कयल से भेल पारिश्रमिक आ अन्य श्रोतसँ जे प्राप्त कयल से भेल भीख। भीखक राशि सीमित होइछ, टाका, दू टाका, बेसीसँ बेसी दस टाका। घूसक राशि सय, दू सयसँ लाख, दू लाख होइछ, मुदा चन्दाक राशिक कोनो सीमा नहि होइछ। जेना कि सुनबामे अबैत अछि- एम.एल.ए एवं एम.पी.क टिकटक लेल करोड़ो रुपैयाक डाली पहुँचाब' पड़ैत छैक।

ओना चन्दाक प्रचलन नव नहि अछि। ई प्रचलन पूर्वहिसँ अछि, मुदा ओहिमे किछु बदलाओ भेल अछि। पहिने ई काज विद्यार्थी लोकनि वा समाजक एहन लोक करैत छलाह जे धार्मिक प्रवृत्तिक होइत छलाह आ ओकर उपयोग देवी-देवताक पूजा-पाठमे वा एहन सामाजिक काजमे करैत छलाह जाहिसँ समाजक अधिकांश लोक लाभान्वित होथि, मुदा आइ-काल्हि ई काज समाजक दबंग लोक क' रहलाह अछि। एहिसँ चंदाक राशि सेहो बढ़ि गेल आ हिसाब-किताबक कोनो झंझटे नहि। सोचि सकैत छी जे एकर उपयोग कोन मदमे होइत होयतैक।

भीखक किछु आर वीभत्स रूप सभ अछि आ से अछि तिलक-दहेज, अपहरण-फिरौती। ओहिमे राशिक कोनो अंते नहि अछि आ ने कोनो समये निर्धारित अछि। जखने मन भेल तखने। विवाह-द्विरागमनक बादो बेटीक सासुर बसलापर वर पक्ष द्वारा कन्यापक्षक लोककेँ आस्ते-आस्ते अपना आवश्यकतानुसार दूहल जाइत छन्हि। कतेको ठाम तँ माँगक पूर्ति नहि भेने बालिकाकेँ आगिमे झोंकि हत्या क' देल जाइत छैक आ बेचारा कन्यागत कुहरि क' रहि जाइत अछि। अपहरण-फिरौती तँ आइ-काल्हि आम गप भ' गेलैक। अहाँ कतहु सुरक्षित नहि छी। ओना तँ एकर शिकार बेसी पैघे लोक होइत छथि, कहिओ काल मध्यमवर्गीय सेहो शंकावश फँसि जाइत छथि। अपहर्त्ता लोकनिकेँ कोनो ने कोनो राजनेताक

संरक्षण भेटल रहैत छन्हि ।

कतेको भिखमंगाक ओहिठाम आयकर विभागक छापामारी होइत देखलियैक अछि । बड़ आश्चर्य भेल । आयकर विभाग बताह तँ ने भ' गेल ? भ' सकैत अछि जे ओ अपन लक्ष्य पूर्ण करबाक लेल खानापुरी क' रहल हो, मुदा आयकर विभाग गलत नहि भ' सकैत अछि । किछु ने किछु तँ अवश्य छैक ।

भीखो माँगब एकटा कला थिक । ई सबसँ नहि भ' सकैत अछि । ओकरा सिखाओल जाइत छैक जे कोन शब्दसँ दाता द्रवित होयताह । एहि लेल सबसँ उपयुक्त नारीकेँ मानल गेलैक अछि । पुरुषकेँ मनायब कठिन होइछ । ओ तुरंत लेनिनक सिद्धान्त ल' क' बैसि जयताह । कतेक सुन्नर तँ हाथ-पयर छह । कमा क' खयबह से नहि । हम ककरो भीख नहि दैत छी । भीख द' क' ककरो काहिल वा कोढ़ि नहि बनयबाक चाही ।

एकटा प्रोफेसर छलाह । खूब सुन्नर घर, पैघ-पैघ कोठली छलन्हि । एक दिन संध्या काल हुनका ओहि ठाम एकटा साधु अयलाह । ओ ओहि ठाम रात्रि विश्राम कर' चाहैत छलाह, मुदा प्रोफेसर साहेब ओहि साधुकेँ कोनो महत्व नहि देलनि । अंतमे साधु कहलकन्हि 'अहाँ साधुक अपमान क' रहल छी ।' प्रोफेसर साहेब कहलथिन्ह, 'रावणो साधुएक वेषमे सीताहरण कयने छलैक । साधु निरुत्तर भ' चलि देलनि ।

मुदा नारी हृदय कोमल होइत अछि । ओ क्षण भरिमे पिघलि जाइत अछि आ बिना किछु पुछने-आछने भीख द' दैत अछि, सेहो सस्नेह । ओ क्षणे भरिमे आगन्तुकक परिवारक विषयमे पूर्ण जानकारी ल' लैत अछि यथा तोरा घरमे के सब छह, तोँ किएक भीख मँगैत छह, माय छह की नहि आदि । तेँ उपनयनमे सबसँ पहिने मायसँ भिक्षाटनक शुरुआत होइत अछि । जे केओ भीख मँगबामे निपुण भ' गेल से भूखल नहि रहि सकैत अछि । एकर मौसम सब दिन रहैत छैक । एहिमे अतिवृष्टि वा अनावृष्टिक सम्भावना नहि होइछ । कहिओ पावनि-तिहारक नामपर तँ कहिओ बेटीक विवाहक नामपर, कहिओ दुखिताह धिया-पूताक नामपर तँ कहिओ माय-बापक श्राद्धक नामपर, कहिओ कबुला-पातीक नाम पर तँ कहिओ

पतिया कटयबाक नामपर भीख माँगल जाइत अछि । कतेक बेर एहनो भेलैक अछि जे केओ कहताह, 'बाटमे जेबी काटि लेलक । गाम जयबाक लेल किराया चाही ।' लोक ओकरा कथ्यसँ पसिझिक' भीख द' दैत छथिन्ह । देवहरि समुदाय जिनका देवताक अंश मानल जाइत छन्हि, ओ लोकनि शीतला माताक अनन्य भक्त होइत छथि । पूर्वमे पचनियाँक नामसँ विख्यात छलाह । ओ सभ घरे-घर जा' क' नाचि-गाबि बच्चा सभकेँ पाचैत छलाह आ ओकरे अपन जीवन-यापनक साधन बनौने छलाह । आब सरकारी टीकाकरणसँ हुनका सभक व्यवसाय खतम भ' गेल छन्हि । ओहि समाजक अधिकांश लोक भिक्षाटनकेँ अपन व्यवसाय बना लेने छथि अन्यथा भूखमरीक स्थिति भ' सकैत छलन्हि । भिक्षाटनसँ ओ लोकनि काफी समृद्ध भ' गेल छथि । आइ हुनका सभक उद्योगक कारणे गाम-घरमे चालीस-पचास हजारक जमीन चारि लाख-पाँच लाखमे बिकैत अछि ।

(2)

बैसाख मासक गर्मी आ ऊपरसँ मच्छरक प्रकोप । भोरहरबामे कनेक पुरबा बसात सिहकल छलैक । ताहिपर कनेक आँखि लगले छल । बड़ी जोरसँ हल्ला भेलैक । हमहूँ हड़बड़ाक' उठलहुँ । लोकसब एम्हरसँ ओम्हर भागि रहल छलैक । केओ किछु स्पष्ट नहि बाजि रहल छल । पता लागल जे सुभान भायक ओहि ठाम छापामारी भ' रहल छन्हि, सेहो आयकर विभागक । ओहि ठाम दू करोड़ नगद आ सोना-चाँदीक जेबर अधिकारीकेँ भेटलन्हि । सुभान भाय एकटा साधारण सनक लोक छथि । पहिरब-ओढ़ब एकदम साधारण । जोलही कुर्त्ता-पायजामा । कोनो आडम्बर नहि । साइकिलसँ हाट-बजार करैत छथि । कहिओ काल संध्यामे एकटा चमचमौआ गाड़ीसँ पता नहि कत' जाइत छथि आ एगारह बजे राति धरि पुनः आपस आबि जाइत छथि । सुभान भाय एकटा साधारण घरमे रहैत छथि । घर भीतरसँ सजल-सजाओल छन्हि, मुदा बाहरसँ पुरान खंडहर सनक लगैत छन्हि । घरक चारपर खपड़ा छलैक, सेहो कतेको ठाम फूटल-भाङ्गल । घरक आगाँमे बाँसक जाफरीसँ घेरल फुलबाड़ी, जाहिमे रंग-बिरंगक फूल । सुभान भाय फूल-पत्तीक बड़ शौकीन छलाह । बेसी काल फुलबाड़ीयेमे फूल-पत्तीकेँ काट-छाँट करैत रहैत छलाह । धिया-पूताक नामपर मात्र चारिटा कन्या छलथिन्ह । सब स्कूल कालेजमे पढ़ि रहल छलन्हि । दूटा बेटी तँ विवाहक योग्य सेहो भ' गेल छलन्हि । तकरे जोगाड़मे सुभान भाय लागल छलाह । सुभान भाय अपनहुँ छः बेर महजितमे जा' क' नमाज पढ़ैत छलाह आ दोसरोकेँ धर्म-कर्म करबाक लेल प्रेरित करैत छलथिन्ह । काफी सज्जन लोक, ककरोसँ बैर भाव नहि । पैतृक सम्पत्तिक

नामपर दस कट्ठा घड़ारी आ शहरसँ बाहर तीन कोसक दूरीपर एकटा कचराक गोदाम छलन्हि जत' ओ नित्य दस बजे साइकिलसँ जाइत छथि आ सायंकाल अबैत छथि । बाटमे जे केओ भेटैत छन्हि, सभकेँ यथोचित अभिवादन । वाणी अति मधुर ओ मनमोहक । आश्चर्य लगैत अछि जे एतेक धन सुभान भाय कत'सँ अनलनि आ कोना रखने छलाह । भ' सकैत अछि जे कोनो गाड़ल धन ने भेटि गेल होन्हि, मुदा जखन आमदनीक स्रोतक विषयमे पुछल गेलन्हि, तँ विदित भेल जे ई टाका सुभान भाय कचरा बेचिक' बेटीक विवाहक लेल रखने छथि । आयकर अधिकारी कतबहु पूछ-पाछ कयलथिन्ह, मुदा सुभान भाय माँजल खेलाड़ी जकाँ अपना जवाबपर अटल रहलाह । ओ कहलथिन्ह, 'देखू सरकार ! हमरा पूर्वजहिसँ विरासतमे कूड़ा-कचराक व्यापार भेटल अछि आ ई टाका सेहो साल, दू सालक नहि, अपितु अनेक वर्षक अरजल थिक । हम समाजक गरीब, बेरोजगार आ असहाय लोककेँ एहि माध्यमसँ रोजगार दैत छियैक । ओकरासँ कचरा चुनबाक' कीनैत छी आ तकरा शहरक कारखानामे बेचैत छी ।' ई तँ ओएह गप भेल जे भारत सरकारक एकटा मंत्रीक ओहि ठामसँ छापामारीमे नौ करोड़ रुपैया बहरायल जाहिपर मंत्रीजी कहलथिन्ह, 'हम ई टाका कोबी बेचिक' जमा कयने छी ।' जखन पुछल गेलन्हि जे ओ कोबी कत' उपजबैत छी, तँ कहलथिन्ह, 'गमलामे' । किछु एहने उत्तर सुभानो भायक भ' रहल छलन्हि । अधिकारी लोकनि सुभान भायक उत्तरसँ संतुष्ट नहि छलाह, मुदा ओ किछु कइओ नहि सकैत छलाह । कोनो कारबाइ करबाक लेल पर्याप्त तथ्य आ गवाहक आवश्यकता छलैक, जकर सर्वथा अभाव छलैक । सुभान भायक व्यक्तित्व आ व्यवहार तेहन छलन्हि जे कोनो गोटे हुनका विरुद्ध गवाहीक लेल तैयार नहि भेलाह । अंततः अधिकारी लोकनि प्राप्त टाकाक सूची बनाक' सुभानभायकेँ द' देलथिन्ह आ कागतपर सुभान भायसँ दस्तखत सेहो कराक' राखि लेलन्हि । एहि विषयकेँ आयकर विभाग अपन शंकाक आधार बनबैत निगरानी विभागकेँ सौंपि देलक । निगरानी विभागक एकटा निरीक्षक जिनकर वयस करीब पचीस वर्षक छल होयतन्हि, हुनकर नाम सुजीत नायक छलन्हि । ओ बहुत कर्मठ छलाह आ बहुत बारीकीसँ कोनो

मामिलाक छानबीन करैत ओकर गुत्थी सोझरबैत छलाह । विभागमे हुनकर नीक छवि छलन्हि । एतेक कम वयसमे एतेक गम्भीर आ सटीक निर्णय बहुत कम्मे लोकमे देखल गेलैक अछि । विभागक दिससँ हुनके ई भार देल गेलन्हि । दू-तीन दिनक बाद नायकजी वेष बदलिक' आजमगढ़ पहुँचलाह आ अपन जोगाड़मे लागि गेलाह । सबसँ पहिने ओ ओहि ठाम गेलाह, जत' सुभान भायक घर छलन्हि । ओहि ठामसँ ओ गोदामक निरीक्षण कयलन्हि जे घरसँ तीन कोसक दूरी पर छलैक । ओहि ठाम अयबा-जयबाक लेल कोनो सवारी उपलब्ध नहि छलैक । की तँ पैदल जाउ वा अपन निजी सवारीसँ। दोसर कोनो विकल्प नहि छलैक । एही क्रममे हुनक भेट सुभान भायक ड्राइवरसँ भेलन्हि वा बुझू जे योजनाक अनुरूप ओहि चक्रव्यूहमे प्रवेशक लेल ओ ड्राइवर उपयुक्त माध्यम छलैक। ड्राइवरक नाम राजू छलैक आ ओकर सासुर मिर्जापुर छलैक । नायक अपनाकेँ मिर्जापुरक रहनिहार कहि राजूसँ सम्पर्क बढ़ौलक । गामक नाम कहने तँ कतेक प्रश्न उठितैक, मुदा सासुरक सबकेँ चीन्हब आवश्यक नहि छैक आ सासुरक नाम कहने राजूक घरवालीक सेहो समर्थन भेटलैक । दुनू गोटेमे खूब गप-सप भेलन्हि । ओकरा संग नायक अपन बेरोजगारीक चर्चा कयलथिन्ह आ कहलथिन्ह जे ओ गाड़ी चलायब सेहो जनैत छथि । नायक अपन नाम रौनक कहलथिन्ह से एहि लेल जे ओ सुभान भायक ओहि ठाम जा रहल छथि । रौनक मुसलमानोक नाम होइत छैक ।

ओ अपन पूरा बगय मुसलमानेक बना लेलन्हि । बाजब-भूकब, वेष-भूषा सब किछु ओही अनुरूप । रौनकक नामसँ हुनक ड्राइवरी लाइसेंस छलन्हि आ गामक नाम मिर्जापुर । ड्राइवर राजू नायकसँ पुछलथिन्ह, "अहाँ ठहरल कत' छी ?"

नायक कहलथिन्ह, 'हम गरीब बेरोजगार कत' ठहरि सकैत छी ? कतहु किछु खा लेब आ फूट-फाटपर सुति रहब ।'

राजू कहलकन्हि, 'नहि...नहि... अहाँ हमर सासुरक लोक थिकहुँ। यावत् कोनो जोगाड़ नहि होइत छैक, तावत् अहाँ हमरे ओहिठाम भोजन

करू आ (एकटा चबूतरा देखबैत) ओही चबूतरापर आराम करब । राजूक कनियाँ सेहो राजूक गपक समर्थन कयने छलीह । ओहि चबूतरापर मजदूर वर्गक लोक रात्रि विश्राम करैत छलैक । एकटा विशाल पाकड़िक गाछकेँ चारू कातसँ घेरिक' खूब सुन्नर चबूतरा बनाओल गेल छलैक ।

राजू पुनः बाजल, "रौनक भाय, हमतँ कोनो पैघ लोक नहि छी आ ने हमर बेसी जान-पहचान अछि । हमर सेठ कचराक व्यापार करैत छथि । जँ अहाँ कचरा चुनिक' बेचबाक काज करी तँ हम कोनो जोगाड़ क' सकैत छी । जँ कतहु ड्राइवरक आवश्यकता होयतैक, तँ हम अहाँकेँ अवश्य सूचना देब । तावत् हमरा बुझने कचराबला काज ठीक रहत । राजूक कनियाँ सेहो राजूक गपमे हँ...मे हँ मिलौलक । कोनो स्त्रीगणक लेल ओकर नैहर आ नैहरक लोक सबसँ प्रिय होइत छैक । नायककेँ काजसँ कोन सरोकार छलैक ? ओ तँ मात्र गोदाम धरि पहुँचबाक बाट ताकि रहल छलैक । से भेटि गेलैक । नायक भोजन कयलाक बाद ओही चबूतरापर चल गेलाह जे राजू देखौने छलन्हि । ओ जाहि चबूतरापर आराम करैत छलाह, ताहिपर किछु एहनो लोक आराम करैत छलैक जे कचरा चुनबाक काज करैत छलैक । राजू ओहि व्यक्ति सभसँ रौनकक परिचय करौलक आ कहलक, 'काल्हिसँ तोरा सभक संगे रौनक भाय सेहो जयथुन्ह । हिनका कोनो तरहक दिक्कत नहि होन्हि ।' ओहो सभ आश्वासन देलक, 'नहि नहि, राजू भाय । रौनक भायकेँ कोनो दिक्कत नहि होयतन्हि ।' नायक सेहो शहरक कचरा चुनिक' गोदाममे पहुँचाब' लगलाह । पहिल दिन तँ नायककेँ रोकल गेलन्हि, कारण हुनका लग कोनो गेट पास नहि छलन्हि । गेट पासक लेल कोनो जान-पहचानबला लोकक गारंटी चाही । ओएह कचराबला हिनकर गारंटी देलक आ रौनककेँ गेट पास भेटि गेलन्हि जकर नम्बर छलैक नौ सय तेरह । आब ओ एही नम्बरसँ जानल जयताह, खासक' गोदाममे । एक तँ कचराक काज, ताहूमे गेट पासक आवश्यकता, नायकक मोनमे संदेह बढ़ा देलक । ऊपरसँ गेट पासमे लिखल छलैक जे शनि, रवि छोड़िक' । से देखितहि नायकक संदेह आर दृढ़ भ' गेलैक । ओ अनुमान लगयलक जे एहि ठाम

किछु ने किछु अवैध कार्य अवश्य होइत छैक आ सेहो शनि आ रवि दिन। तेँ कचराबलाकेँ वा सामान्य लोककेँ एहि ठाम अयबासँ मनाही छैक। ओ सुभान भायक करीब जयबाक विषयमे सोच' लगलाह। शनि आ रविक' कचरा गोदाम अयबाक लेल किछु खास लोककेँ गेट पास देल गेल छलैक। शनि आ रवि क' ओहि ठाम विशेष हलचल रहैत छैक। दर्जनो रंग-विरंगक गाड़ी लागल रहैत छैक। ओहि गाड़ीक ड्राइवर सेहो भीतर नहि जा सकैत अछि। एक दिन नायक भीतर जयबाक प्रयास कयलनि। दरबान रोकि देलकनि। नायक ओकरा अपन गेट पास देखबैत बजला "हम कचराबला थिकहुँ।"

दरबान बाजल "एहिपर लिखल अछि जे शनि, रवि छोड़िक'। शनि आ रविक' कचराक काज नहि होइत छैक।"

नायक पुछलथिन्ह, ''शनि आ रविक गेट पास कोना भेटैत छैक ?''

दरबान बाजल, "शनि आ रविक गेट पास रुस्तम भाइ दैत छथिन्ह, सेहो ई बुझलापर जे अहाँक उपस्थिति आवश्यक अछि, तखनहि।"

नायक पुछलथिन्ह, "एकर मालिक के छथि ?"

दरबान बाजल, ''एकर मालिक के छथि, से तँ हमरो नहि बूझल अछि आ ने बुझबाक जरूरति भेल। हमरा सभक सब काज रुस्तम भाइ करैत छथि, तेँ हम सब हुनके मालिक बुझैत छियनि।''

एतेक गप पुछने केओ आन संदेहक घेरामे आबि सकैत छल, मुदा नायक पहिले दिनसँ दरबान सभकेँ सलामी ठोकैत आबि रहल अछि। तेँ ओ सब एकरा गंम्भीरतासँ नहि लेलक। नायककेँ एतेक तँ स्पष्ट भ' गेलैक जे एकर मैनेजर रुस्तम भाइ छथि। मालिकक नाम एखन धरि रहस्ये बनल अछि। कचरा गोदामक विषयमे सुभान भाय आयकर अधिकारीकेँ कहने छलाह जे हम कचरा गोदामक स्वामी छी। एकर तात्पर्य जे एकटा दोसरो अवैध कम्पनी एहि ठाम कचरा गोदामक छत्रछायामे चलि रहल अछि जाहि ठाम किछु अवैध कार्य होइत अछि। ओ दरबानसँ नजरि बचाक' एहन ठाम एकटा खुफिआ कैमरा लगा देलन्हि जाहि ठाम चहल-पहल

कम छलैक आ ओहि ठामसँ सब किछु देखल जा सकैत छलैक।

कैमराक छानबीनसँ पता लगलैक जे शनि आ रविक' कचराक बिक्री तँ होइतहि अछि, संगहि बहुत लोक अबैत छथि, जनिक वेष-भूषा भद्र लोक सनक होइत छन्हि। शनि आ रविक' सुभान भाय सेहो अबैत छथि। गोदामक भीतर जाइत छथि, मुदा अन्य कोन तरहक कारोबार होइत अछि, तकर भाँज नहि लगलन्हि।

एक दिनक गप अछि। सुभान भायकेँ गोदाम जयबाक छलन्हि। ओना सुभान भाय गोदाम साइकिलेसँ जाइत छथि। पता नहि साइकिलमे कोनो खराबी भ' गेल होयतन्हि। राजू ड्राइवरक पेट खराब छलैक। ओ रहि-रहिक' पैखाना जाइत छल। एहन स्थितिमे गाड़ी चलायब सम्भव नहि छलैक। ओ रौनककेँ कहलक, 'रौनक भाय, अहाँ हमर पोशाक पहिरि लिअ' आ चाभी दैत छी, कनेक सुभान भायक सेवामे चल जाउ।' नायक एही समयक तँ प्रतीक्षा क' रहल छलाह। एकरहि लेल तँ ओ राजूक भोजनमे एकटा विशेष प्रकारक दबाइ मिलौने छलाह। ओ तैयार भ' क' चाभी ल' क' सुभान भायक ओहि ठाम पहुँचलाह आ अभिवादन कयलनि। सुभान भाय अभिवादन स्वीकार करैत पुछलथिन्ह, ''अहाँ के थिकहुँ बाबू...?''

नायक उत्तर देलथिन, "हम रौनक थिकहुँ। अहीँक कचराक गोदाममे काज करैत छी। राजूक पेट बहुत खराब छैक। ओ उठिक' ठाढ़ो नहि भ' सकैत अछि। तेँ अपनेक सेवामे हमरा पठौने अछि। अपने चाही तँ हमर उपयोग क' सकैत छी।"

सुभान भाय रौनकक ड्राइवरी लाइसेंस आ कचरा गोदामक गेट पास देखैत पुछलथिन्ह, "अहाँ राजूकेँ कोना जनैत छी ?"

नायक कहलथिन्ह, "राजूक विवाह हमरे गाम मिर्जापुरमे छैक आ एहि ठाम हम ओकरहि संगे रहि रहल छी।"

सुभान भायकेँ गोदाम जयबाक जल्दी छलन्हि। तेँ ओ नायकसँ बेसी पूछ-पाछ नहि कयलन्हि आ गाड़ीपर बैसि गेलाह। नायक सेहो

गाड़ी स्टार्ट कयलकनि आ पुछलकन्हि, "भायजी ! कत' जयबाक छैक ?"

"कचरा गोदाम", सुभान भाय कहने छलथिन्ह ।

ओना सुभान भायकेँ अपना गोदाम जयबाक छलन्हि, मुदा ओ स्थानो कचरे गोदामक नामसँ विख्यात छलैक । ओहि ठाम दूर-दूर धरि कोनो घर-दुआरि नहि छलैक । कहियो-कहियो मजूर सभ कोनो-कोनो खेतमे अवश्य काज करैत छलैक । गेटपर पहुँचि गाड़ीसँ उतरि सुभान भाय एकटा कार्ड दरबानकेँ देखौलन्हि आ भीतर चल गेलाह । दरबान आ सुभान भायक बीच कोनो अभिवादन नहि भेने नायक सोचलक जे एकर मालिक केओ आर भ' सकैत अछि । सुभान भाय तँ एकदम्मे नहि वा एकरा एतेक गोपनीय बनाक' राखल गेलैक अछि जे दोसराकेँ बुझबामे नहि अबैक । नायककेँ भीतर जयबाक अनुमति नहि भेटलनि । हुनका गेटेपर रोकि लेल गेलनि । ओहो गाड़ीकेँ पार्कक' चारू भाग घूम' लगलाह । भीतर ओएह जा सकैत छलैक, जकरा विशेष रूपसँ रुस्तम भाय द्वारा कार्ड देल गेल रहितैक । नायक लग दू दिनक समय छलैक । दू दिन राजू नहि आओत । ओहि दबाइक असरि दुइए दिन रहैत छैक । ओही दू दिनमे ओ सुभान भायक मन जीति लेलनि ।

सुभान भाय रौनकक चुस्ती आ व्यवहारसँ बड़ प्रसन्न भेलाह । ओ रौनककेँ मान' लगलाह । दू दिनक बाद जखन राजू आयल, तँ सुभान भाय पुछलथिन्ह, ''दू दिनसँ अहाँ कत' छलहुँ आ ओ व्यक्ति के थिक, जकरा अहाँ गाड़ी चलयबाक लेल पठौलहुँ ?"

राजू बाजल, "भायजी, ओ हमर सम्बन्धी अछि । हमरे ओहि ठाम रहैत अछि । ड्राइवरी सेहो जनैत अछि आ अपनहि कचरा गोदाममे तीन माससँ काज करैत अछि । परसू हमर पेट बहुत खराब भ' गेल छल । हमरा ठाढ़ो भेल नहि होइत छल । हम अयबाक स्थितिमे नहि छलहुँ, तेँ रौनककेँ अहाँक सेवामे पठौने छलहुँ । हमरा तँ पानि चढ़य लागल छल । कोना अबितहुँ ? रौनक कोनो गड़बड़ी कयलक अछि की ?"

सुभान भाय कहलथिन्ह, "नहि, नहि, कोनो गड़बड़ी नहि कयलक, मुदा हम तँ ओकरा विषयमे किछु नहि जनैत छलहुँ । ओ कत'सँ आयल

अछि, किएक आयल अछि ? ओ विश्वास करबाक लायक अछि वा नहि । अहाँ कमसँ कम एकटा पुर्जी तँ लिखि दितियैक ?"

राजू बाजल, 'भायजी ! हमरा एतेक सुधि कत' जे पुर्जी लिखि पबितहुँ...।'

सुभान भाय कहलथिन्ह, ''हँ...हँ... से तँ हमरो कहने रहए, । ठीक छै, अहाँ एखन रुस्तम भाय लग चल जाउ आ दोसर कोनो काज करू । हमहूँ ओकरा कहि देबैक । गाड़ी एखन रौनके चलाओत । बड़ नीक चलबैत अछि । ओकर गाड़ी चलायब बड़ दीब छैक । बुझाइते नहि अछि जे गाड़ी चलैत अछि आ कि ठाढ़ अछि । हँ...कनेक रौनककेँ पठा देब ।"

जानि बुझि क' नायक कनेक देरीसँ सुभान भायक ओहि ठाम पहुँचल । बगय कचरा बीछ'बला छलैक । हँ, संगमे कचराक बोरा नहि छलैक किएक तँ राजूक कथनानुसार सुभान भाय बजौने छलथिन्ह । ओकरा देखितहि सुभान भाय हँस' लगलाह आ पुछलथिन्ह, ''बिना नहेनहि चलि अयलह आ एतेक देरी किएक भेलह ? हम तँ राजूकेँ दसे बजे कहने छलियैक ।"

रौनक कहलकन्हि, ''भायजी, हम तँ कचरा बीछैत छलहुँ, जाहिसँ अपन रोजी-रोटी चलत । अहाँक राजू तँ ठीक भ' गेल । आब गाड़ी ओएह ने चलाओत ।''

सुभान भाय कहलथिन्ह, ''गाड़ी के चलाओत से हम ने बुझबै कि अहाँ बुझबै । हँ...जँ अहाँकेँ चलयबाक इच्छा नहि हो, तँ सोचल जयतैक ।"

नायक कहलथिन्ह, "भायजी ! अहाँक जे आदेश होयतैक तकर अनुपालन अवश्य होयतैक । हम तँ मजूर छी आ मजबूर सेहो । मजूर करब हमर कर्त्तव्य अछि ।"

सुभान भाय पुछलथिन्ह, "अहाँक पोशाक की भेल, जे काल्हि पहिरिक' आयल छलहुँ ?"

नायक कहलथिन्ह, "ओ तँ राजू भैयाक पोशाक छलन्हि । हमरा एखन ने ओतेक कमाइ अछि आ ने नियमित रूपेँ गाड़ीये चला रहल छी । तेँ पोशाक नहि बनबौलहुँ । कहुना गुजर करैत छी ।"

सुभान भाय किछु टाका दैत नायककेँ कहलथिन्ह जे आइ हमरा कतहु नहि जयबाक अछि । अहाँ जा' क' ड्राइवरक उर्दी बनबा लिअ' आ काल्हिसँ ठीक आठ बजे आबि जायब ।

नायक चल गेल, मुदा राजूकेँ ड्राइवरीसँ हटायब, ओकरा संदेहकेँ आर बढ़ा देलक । दू नम्बरक धंधामे अचानक जखन केओ दू-चारि दिनक लेल गायब भ' जाइत अछि, तँ ओ संदेहक घेरामे आबि जाइत अछि । एहि दू दिनमे ओ कत' गेल, ककरा सभसँ भेट कयलक, कोनो दुश्मनसँ तँ ने मिलि गेल । तेँ राजू ड्राइवरकेँ रुस्तम भाय लग पठाओल गेलैक । ओ भीतरे-भीतर छान-बीन सेहो करत आ तावत् कोनो काजो द' देतैक जाहिसँ ओकरा कोनो संदेहो नहि होयतैक जे हमर जासूसी कयल जा रहल अछि ।

सुनने छलियैक जे श्रीमती इन्दिरा गाँधी, तत्कालीन प्रधानमंत्री भारत सरकारक हत्या केनिहार सुरक्षाकर्मी सेहो हत्यासँ पूर्व दू मासक छुट्टीपर गेल छलैक । छुट्टीसँ आपस अयलाक बाद नियमतः ओकरा पुनः ओहि ड्यूटीपर नहि राखल जयबाक चाहैत छलैक, मुदा स्वयं श्रीमती गाँधी ओकरा पुनः ड्यूटीमे लगयबाक लेल आदेश देने छलथिन्ह । छुट्टीक क्रममे ओहि सुरक्षाकर्मीक सम्पर्क एकटा उग्रवादीसँ भेलैक । उग्रवादी सब मिलिक' ओहि सुरक्षाकर्मीकेँ विश्वास दिआ देलकैक जे श्रीमती गाँधी पंथक दुश्मन थिकीह । ओ पंथक विनाश कर' चाहैत छथि । तकर बाद जे किछु भेलैक, सब केओ जनितहि छी । एहू धंधामे एहि तरहक परहेज राख' पड़ैत छैक । ओना कोनो गोरखधंधामे पुलिसक डर राख' पड़ैत छैक तेँ अधिकांश लोक पुलिसकेँ मिलौने रहैत अछि । बिना पुलिसक सहयोगे धंधा बढ़ि नहि सकैत छैक, मुदा जँ इमानदार पुलिससँ पाला पड़ि जाइत छैक तँ नाकमे दम क' दैत छैक । कतेक पुलिस अधिकारी सेहो मारल जाइत छथि, कारण किछुए अधिकारीक कारण पूरा महकमा बदनाम भ' जाइत अछि । राजू सेहो रौनककेँ नीक जकाँ नहि चिन्हैत छलैक । सम्भवतः राजूक कनियाँ आ रौनकमे पूर्वहिसँ परिचय-पात होयतन्हि, से राजूक अनुमान छलैक । यद्यपि सत्यता ई छलैक जे ककरो, ककरोसँ कोनो परिचय-पात नहि छलैक । नायक तँ राजूक सासुरक नाम एहि लेल कहने

छलैक जे सासुरसँ ओहुना लोककेँ कमजोरी रहैत छैक । दोसर गप जे राजूक कनियाँ सेहो नैहरक नामपर समर्थन करितथिन आ सएह भेलो छलैक । नायक जखन कहने छलथिन्ह जे हम मिर्जापुर रहैत छी, तँ राजू बाजल छलैक, ''मुदा हम तँ अहाँके नहि चिन्हैत छी ।"

ताहिपर राजूक कनियाँ कहने छलथिन, ''अहाँ सौंसे मिर्जापुरक लोककेँ चिन्हैत छियैक ?"

राजू बाजल, "नहि, से तँ नहि चिन्हैत छियैक ।"

"तखन एहन गप किएक बजलहुँ" राजूक कनियाँ कहने छलथिन ।

राजू चुप रहि गेल । आगू किछु पुछबाक साहसो नहि भेलैक । पुनः हाल-चालक संग गप आगू बढ़ल । राजूक विषयमे विभाग द्वारा सूचना एकत्रित कयल गेल छलैक जे राजू सुभान भायक ड्राइवर थिक आ ओकर सासुर मिर्जापुर छैक । ताहि आधारपर ड्राइभिंग लाइसेंस आ अन्य कागजात रौनकक नामसँ बनाओल गेल छलैक । आब जँ राजू सुभान भाय लग रौनकक विषयमे किछु बाजत तँ आर फेरमे पड़ि सकैत छल । ओ सुभान भायक स्वभाव आ व्यवहारसँ पूर्ण परिचित छल । तेँ ओ अपनहि मनसँ गढ़िक' रौनकक बड़ाइ कयलक । सुभान भाय कहने छलथिन्ह जे हम एक सप्ताह ड्राइवरी रौनकेसँ कराबैत छी । ओहो लोक तँ ठीके-ठाक बुझायल । हमर बड़ सेवा करैत अछि । ड्राइवर राजू अपन विवशतापर चुप्पी साधि लेलक आ चुपचाप दोसर ड्यूटीक लेल चलि देलक । किछु दिनक बाद सुभान भाय रौनकपर एतेक ने विश्वास कर' लगलाह जे सभ ठाम रौनकक आबर-जात होमय लागल । एक दिन नायक ओहू स्थानपर पहुँचि गेल, जत' ओ पहुँच' चाहैत छल । सुभान भाय रौनकक खूब मानदान कर' लगलाह । नायक सेहो अपनाकेँ सुभान भाय लग समर्पित क' देलक । राजनीति आ तस्करीमे गद्दारी लोक तखने करैत अछि, जखन सरगनाक पूर्ण विश्वास जीति लैत अछि वा ओकर कमजोर नस पकड़ि लैत अछि, अन्यथा ओकर अंत भ' जाइत छैक । नायक सेहो ओही बाटक अनुसरण क' रहल छलाह । आब नायक सुभान भायक एकदम निकट

पहुँचि गेलाह । हुनका बुझबामे आबि गेल छलनि जे एहि सम्पूर्ण कारोबारक सरगना केओ आर नहि, सुभाने भाय छथि । सुभान भाय रौनकपर एतेक विश्वास कर' लगलाह जे ओकरा सबटा कारोबारक विषयमे बुझब' लगलाह । रौनकक आहार-व्यवहारसँ सुभान भायकेँ लगलन्हि जे ई कोनो ने कोनो मुसलमानेक बच्चा थिक । ई गरीब अवश्य अछि, मुदा काजक लोक अछि । गरीबीयेक कारण ने कचरा उठबैत छल । अवसर भेटलापर ईहो गुदड़ीक लाल साबित भ' सकैत अछि । किएक नहि एकरा अपन वारिसक रूपमे तैयार कयल जाय । एही प्रत्याशामे ओ रौनककेँ गोदामक गतिविधिमे प्रवेश करौलथिन आ ओकरा बेसी चाह' लगलाह जेना कि वास्तवमे रौनक हुनकर बेटे होन्हि ।

एक दिन सुभान भाय गाड़ीसँ उतरिक' भीतर चल गेलाह । तकर बाद एक गोटे अयलाह आ कहलथिन्ह, "रौनक जी ! अहाँकेँ सुभान भाय आफीसमे बजा रहल छथि । ओ एकटा पुर्जी दरबानकेँ देलथिन्ह जे सम्भवत: सुभान भाय वा रुस्तम भायक भ' सकैत छलैक । रौनक आगन्तुकक संगे भीतर आफीसमे गेलाह । ओ हुनका सुभान भायक कोठलीमे ल' गेलथिन्ह । ओहि ठाम नायक सुभान भायक पोशाक आ ओहि कोठलीक सजावट देखि दंग रहि गेल । ओना नायक अपना जीवनमे अहूसँ सुन्नर महल आ पोशाक देखने छलैक । हुनका सुभान भायक रहस्य चकित क' रहल छलनि, मुदा अपनाकेँ अबूझ बनाक' सुभान भायसँ पुछलथिन्ह, ''भाइजी ! जन्नत की एहिसँ सुन्नर होइत होयतैक ?'' सुभान भाय हुनका मूर्खतापर हँसैत बैसबाक इशारा कयलथिन्ह आ रुस्तमकेँ बजौलन्हि । सुभान भायकेँ एहि लेल हँसी लागल छलन्हि, जे रौनक तँ सब दिन कचरा उठौलक, फूट-फाटपर सूतल, गरीब-गुरबाक संग समय कटलक । एतेक सुन्नर मकान तँ एकरा लेल जन्नते थिकैक । कोठली जतेक सुन्नर भीतरसँ छलैक से बाहरसँ नहि, ठीक ओहने जेहन सुभान भायक रूप छलन्हि । कनेक कालक बाद एक गोटे कोठलीमे प्रवेश कयलक । ओ कारी खट-खट मुँहमे गोटीक दाग, चेहरा एकदम वीभत्स जेना अफ्रीकाक लोक होअय, मुदा सुभान भाय लग नतमस्तक भेल आयल आ बाजल, ''जी भायजी, आदेश...।''

सुभान भाय कहलथिन्ह, ''रुस्तम, ई हमर ड्राइवर रौनक थिक । ई तेरह वर्षसँ हमरा संगे रहि रहल अछि । हम चाहैत छी जे एकरा सब काजक विषयमे बुझा दहक आ किछु दिन अपनहि संगे राखि एकरा सब काजमे पारंगत क' दहक ।"

रुस्तम बाजल, "जी भायजी ।"

तुरंत रुस्तम नायककेँ ल' क' चल गेल आ अपना बगलमे बैसा क' सब विषयमे बुझाब' लागल । सबसँ पहिने ओकरा एकटा कार्ड देलकैक जाहिसँ ओ बाहर-भीतर कतहु बिना रोक-टोककेँ जा-आबि सकैत छल । तकर बाद नायक विद्यार्थी जकाँ रुस्तमक बगलमे बैसि सब काजपर ध्यान देब' लागल । ओ रुस्तमो भायक ओतबहि इज्जति करैत छलैक, जतेक सुभान भायक । ओ बुझैत छलैक जे आब ओकर नोकरी रुस्तमे भायक कृपापर रहतैक । नायक बारीकीसँ सभ वस्तुक अध्ययन कर' लगलाह जे हुनका चाहैत छल, जाहि लेल ओ सभकेँ त्यागि आयल छलाह, जाहि लेल विभाग हुनक प्रतिनियुक्ति कयने छलनि, सएह तँ रुस्तम भाय द'ओ रहल छलथिन्ह ।

करीब एक मास भ' गेलैक । नायक सुभान भायक ओहि ठाम नहि गेलाह । एक दिन सुभान भाय आफीसमे पुछलथिन्ह, ''की रौनक, एतेक व्यस्त भ' गेलह जे हमरो बिसरि गेलह ?''

वास्तवमे नायक सुभान भायकेँ बिसरिये गेल छलाह । हुनका तँ ओ सभ वस्तु भेटि रहल छलनि, जाहि लेल ओ अपन जाति, धर्म आ अस्तित्वकेँ छोड़ि देने छलाह, मुदा ओ बजलाह, ''नहि...नहि भायजी ! अपना भगवानकेँ केओ बिसरि सकैत अछि ? हम तँ अहीँक आदेशक पालन क' रहल छलहुँ । बहुत राति धरि रुस्तम भाय हमरा जानकारी दैत छथि । कतेक दिन तँ रुस्तमे भाय लग सुतिओ रहलहुँ ।''

आ से सत्यो छलैक । तकर बाद नायक बीच-बीचमे सुभान भायक ओहि ठाम जाइत-अबैत छलाह आ धिया-पूताक संग सेहो गप-सप क' अबैत छलाह । नायककेँ जखन रुस्तम भायसँ गेट पास भेटि गेलनि,

तखन ओ सब ठाम जाय-आब' लागल । ओ देखलनि जे गोदामक भीतर बहुत पैघ-पैघ कोठली छलैक, जाहिमे अन्य कर्मचारी सभ बैसैत छलाह । एकटा कोठलीमे सुभान भायक कतेको तरहक पोशाक छलन्हि । तकर उपयोग ओ एही ठाम करैत छलाह । घरसँ जे पैजामा-कुर्त्ता पहिरिक' अबैत छलाह, तकरा ओही कोठलीमे छोड़ि दैत छलथिन्ह । पुनः ओकरा घर जयबा काल पहिरैत छलाह । आइ बुझबामे नायकक्कें आबि गेलनि, जे सुभान भायक दूटा रूप छलन्हि । भीतरसँ किछु आ ऊपरसँ किछु आर । ओहि विशेष प्रकारक पोशाकमे ओ केवल आफीस आ मिटिंग करैत छलाह । मिटिंगक लेल एकटा विशाल हॉल छलैक, जाहिमे एक संगे दू सय व्यक्ति बैसि सकैत छलाह । मिटिंग प्रायः सभ शनिक' होइत छलैक । मिटिंगमे सुभान भायक सब धंधापर विचार-विमर्श होइत छलैक । कोन ठामक की प्रगति अछि आ कोन ठाम की दिक्कत अछि । छोट-छोट कोठलीमे अलग-अलग विभागक लोक बैसैत छलाह जे अपना-अपना धंधाक नियंत्रण करैत छलाह । ओएह धंधा सुभान भायक आयक स्रोत छलन्हि । कचरा तँ मात्र देखाबा छलैक, हाथीक दाँत जकाँ । सबसँ पैघ धंधा छलैक भिखमंगाक । एखन सुभान भायक अधीन करीब तीन लाख भिखमंगा होयतन्हि जे प्रायः सब शहरमे छिड़िआयल छलनि । सभ ठाम एकटा मेट छैक, जे सभपर नजरि रखैत छैक । ओ मेट दिव्यांग लोक होइत अछि आ शहरमे वा रेलवे प्लेटफार्मपर ओकर चाह वा पानक दोकान होइत छैक । ओ ओहि दोकानक पर्दामे चरस-गाँजाक तस्करी सेहो करैत अछि । ओ मेट नित्य ओकरा सभसँ ओसूली करैत अछि आ ओकरा सभक भोजन आ रात्रि विश्रामक इन्तजाम सेहो करैत अछि ।

भिखमंगामे जकरा पयर नहि छैक वा दृष्टिहीन अछि वा बुलबासँ असमर्थ होइछ, तकरा एकटा सहायक सेहो देल जाइत छैक जे नित्य ओकरा सभक्कें भोरे गन्तव्य स्थानपर पहुँचाबैत छैक आ संध्याकाल आपस ल' अबैत छैक । भरि हफ्ता ओसूल कयल गेल टाका मेटक माध्यमसँ शनि वा रविक' गोदाममे जमा कराओल जाइत छैक । तकर काउन्टर चेकपोस्ट यानि दरबानक लगेमे छैक । भीतर अयबाक अनुमति ओकरो

सभक्कें नहि छैक । कोनो जानकारी देबाक लेल टेलीफोन छलैक आ नम्बर रुस्तम भायक छलैक । एहि ठाम रुस्तम भायक्कें छोड़ि ककरो नामसँ पहचान नहि छलैक । मात्र सभक्कें सभ नम्बरसँ सम्बोधित करैत छलैक । भ' सकैत अछि ओकरा सभक्कें अपना शहरमे किछु नाम होइक । ओकरा सभक सुरक्षा आदिक भार रुस्तम भायपर छलन्हि । सुभान भाय प्रशासन आ राजनीति देखैत छलाह । कोनो ऑफीसरक कमीशन वा नेताक्कें चन्दाक निर्धारण सुभाने भाय करैत छलाह । नेतासँ अधिकारी धरि सब सुभान भाय लग नतमस्तक रहैत छल आ सुभान भाय जेहन देवता तेहन अक्षत-फूलसँ पूजा करैत छलथिन्ह । सुभान भाय जतेक सहज अपना घरपर वा मोहल्लामे देखबा-सुनबामे लगैत छलाह, से एहि ठाम नहि । एहि ठामक हुनक रूप आ रुतबा किछु आर छलन्हि । ओ एक बेरि जे कहैत छलथिन्ह, तकर पालन होइत छलैक । ओहिपर कोनो टीका-टिप्पणी नहि । ओना सुभान भाय रौनककें किछु नहि कहैत छलथिन्ह, मुदा हुनको ई आभास होइत छलन्हि जे हुनको पाछाँ केओ हुनकर गतिविधिपर नजरि रखैत छनि । ओहो सावधान छलाह आ ई गप बिसरि गेलाह जे ओ के छथि आ एहि ठाम किएक आयल छथि । सबटा ध्यान सुभान भायक दिल जितबापर लगा देलन्हि । अपना काजसँ मतलब रखैत छलाह आ सुभान भायक निर्देशक पालन करैत छलाह । बिना बजौने दोसर कोठलीमे नहि जाइत छलाह आ ने एम्हर-ओम्हर ताक-झाँक करैत छलाह । कतेको दिन सुभान भाय रौनककें गारि पढ़ने होयथिन्ह । सम्भवतः हुनकर प्रतिक्रिया बुझबाक लेल, मुदा कोनो प्रतिक्रिया नहि देखि ओ हँस' लगैत छलाह आ रौनककें दुलार-मलार सेहो कर' लगैत छलथिन्ह । नायककें रुस्तमसँ सब जानकारी भेटि गेलैक । कोन शहरमे के प्रमुख अछि, कोन तरहक बच्चाक्कें एहि धंधामे आनल जाइत अछि । बच्चाक तस्करी ककरा अधीन अछि । सुभान भायक अपन डाक्टर आ अस्पताल छन्हि जे गोदामे परिसरमे छैक जाहिमे बच्चा सभक्कें चोराक' आनल जाइत छैक । ककरो हाथ तँ ककरो पयर काटि देल जाइत छैक । ककरो आँखि तँ ककरो किडनी बहार क' लेल जाइत छैक । ओ आँखि बीस-पचीस हजारमे आ किडनी दू-तीन लाखमे बिकैत छैक । ई थिकैक सुभान भायक मुख्य

कमाइ । नायक तँ सुनिक' सन्न' रहि गेलाह, मुदा अपन प्रयोजनकेँ ध्यानमे राखि दम साधि लेलनि । धिया-पूतामे सुनैत छलथिन्ह, जे गाम-गामसँ बच्चा चोराक' लेल जाइत अछि आ ओकर नव पुलक निर्माणमे बलि देल जाइत छैक । एहन भ्रान्ति पसारल गेल छलैक, मुदा आइ सत्यक दर्शन भेलन्हि जे ई चोरी कयल बच्चा कत' जाइत अछि । पुलिसक कमीशन निर्धारित छैक जाहिसँ ओ बेसी छानबीन नहि करैत छैक । आब ई नायकक काज भ' गेलन्हि, जे शहर-शहरमे अधिकारीकेँ निर्धारित कमीशन पहुँचाबथि । जखन कोनो अधिकारी हुनका अजनबी बुझि नाकर-नुकर करैत छलथिन्ह तँ हुनका सुभान भायक देलहा कार्ड देखबैत छलथिन्ह आ ओ मानि जाइत छलथिन्ह । नायकक अपन मूल परिचय-पत्र विभागे रखने छलन्हि आ बदलामे एकटा गुप्त टेलीफोन न. आ गुप्त कोड देने छलन्हि जाहिसँ ओ विभागसँ सम्पर्क क' सकथि । एकटा खुफिया कैमरा सेहो भेटल छलन्हि । तकरा गरदनिमे ताबीज जकाँ लटकौने रहैत छलाह । ओ स्वचालित छलैक तथा ओहिपर आगि-पानिक कोनो असरि नहि होइत छलैक । ओकर संचालन आवश्यकतानुसार विभागे सँ होइत छलैक । ओहिपर केओ संदेह नहि क' सकैत छलैक । सुसुके-सुसुके नायककेँ ओहि सभ गोटेसँ परिचय भ' गेलन्हि जे एहि धंधामे संलिप्त रहथि । सभ केओ समर्पित कार्यकर्त्ता छल । सभक ऊपर खून करबाक आरोप छलैक । स्वयं रुस्तम भायपर तीनटा खून करबाक आरोप छलैक । सभकेँ सुभान भाय अपना रिस्कपर छोड़ौने छलाह । पुलिसक डरेँ केओ ओहि ठामसँ बहराय नहि चाहैत छल । ओ सब ओही ठाम अपनाकेँ सुरक्षित बुझैत छल । ओकरा सभक घरमे ओकरे सभक कमायल टाका सुभान भायक पतासँ जाइत छलैक आ मासमे एक दिन होटलमे ओ सब चुप-चाप अपना-अपना परिवारसँ भेट करैत छल । ओहो सब एहीसँ संतुष्ट छल आ सुभान भायक काज सेहो चलि रहल छलनि ।

एक दिनक घटना अछि । नायक स्टेशन गेल छलाह । गाड़ी अयबामे देरी छलैक । ओ एकटा बेंचपर बैसि गेलाह । ओ देखलन्हि जे एकटा बूढ़ जनिक वयस करीब अस्सी-बिरासी वर्षक होयतन्हि, एकटा

बेंचपर बैसि रोटी-तरकारी खा रहल छलाह । ओहो कोनो गरीबे लोक बुझाइत छलाह जेना कि हुनक पहिरब-ओढ़बसँ लागि रहल छल । मैल चिकाठि धोती, कतेको ठामसँ फाटल आ ओहीक अनुरूप कुर्त्ता । पयरक चट्टी कुकुर जकाँ मुँह बौने । तावत् एकटा भीख माँगनिहारि अपन तीनटा बच्चाकेँ ल' क' आयल आ भीख माँगब शुरू कयलक । ओकर एकटा बच्चा बूढ़ाक सोझाँ ठाढ़ भ' हुनकासँ रोटीक याचना कयलक । बूढ़ा दोसर दिस घूमि गेलाह । पुनः दोसर बच्चा ओम्हरे ठाढ़ भ' गेल जेम्हर बूढ़ा घुमल छलाह । फेर बूढ़ा तेसर दिस घुमि गेलाह । ओकर तेसर बच्चा ओम्हर पहिनहिसँ ठाढ़ छलैक । बूढ़ाकेँ बुझयलनि जे ओ रोटी-तरकारी हुनका कंठमे फँसि जायत । ओ सबटा ओही तीनू नेनाक सोझाँ राखि देलथिन्ह आ अपने जल पीबिक' रहि गेलाह । से देखि नायककेँ ओहि बूढ़ापर दया आबि गेलन्हि आ भिखमंगा छौड़ापर तामस । ओ कनेक कालक लेल बिसरि गेलाह जे एकरहि ओ खेती करैत छथि आ इएह छौड़ा सब हुनकर फसिल थिकैन्हि । ओ ओहि छौड़ा सबकेँ दबारि देलथिन्ह । ओ सब नायककेँ गारि पढ़ि देलक । ताहिपर नायक एकटाकेँ दू चाट मारि देलथिन्ह । पाँच मिनटमे एक सय भिखमंगा ओहि ठाम जमा भ' गेलैक आ सब नायककेँ घेरि गारि-फज्झति देब' लागल । ओ सब हिनका मारबाक लेल सेहो उद्यत भेल । स्टेशनपर हजारो लोक छलैक, मुदा केओ नायकक बचाओमे नहि बाजल । एकटा सज्जन कहलथिन्ह, "किएक एकरा सभसँ मुँह लगबै छी ।"

दोसर गोटे कहलथिन्ह, "कादोमे ढेप फेकब तँ अपनहि ने कादो लागत ।"

जखन स्थिति नियंत्रणसँ बाहर होअय लागल, तँ नायक मेटसँ गप कयलनि । मेट तुरंत पानक दोकानबलासँ गप कयलक । ओहि ठामक प्रभारी ओएह छलैक । ओ पानक दोकानबला रौनककेँ दू हजार जुर्माना कयलक । मेट सेहो रौनककेँ कहलथिन्ह जे अस्तित्वक सवाल छैक । अहाँ जुर्माना द' क' कात भ' जाउ । मेट एकर सूचना रुस्तम भायकेँ आ रुस्तम भाय सुभान भायकेँ देलथिन्ह । दोसर दिन जखन रौनक कार्यालय

गेलाह, तँ रुस्तम भाय रौनकके दू हजार टाका दैत सुभान भायसँ भेट करबाक लेल कहलथिन्ह । रौनक रुस्तम भायसँ पुछलथिन्ह, "ई केहेन टाका थिक आ हमरा किएक द' रहल छी ?"

ताहिपर रुस्तम भाय कहलथिन्ह, "ई ओएह टाका थिक जे काल्हि अहाँ जुर्मानाक रूपमे पानबलाके देने छलियैक । ओ पुनः हमरा लग आपस आबि गेल । अपन कारोबारक अस्तित्वक रक्षाक लेल अहाँके जुर्माना कयल गेल छल । एहिसँ दोसर केओ भिखमंगा समाजपर आक्रमण करबाक विषयमे सोचबो नहि करत । अहाँके जे केओ कहलन्हि जे एकरा सभसँ मुँह किएक लगबै छी वा कादोमे ढेप किएक फेकैत छी, ओहो सब अपने लोक छलाह, केओ अन्य लोक नहि । जखन नायक सुभान भायके भेट कयलन्हि, तँ सुभान भाय पुछलथिन्ह, "रौनक, अहाँ एहन काज किएक कयलहुँ ? अहाँके तँ बूझल अछि जे ओ सब हमरे कारोबारक हिस्सा थिक ।"

नायक कहलथिन्ह, "जी, हम देख' चाहैत छलहुँ जे हमर नेटवर्क कतेक सशक्त अछि ।"

सुभान भाय पुछलथिन्ह, "की परिणाम भेटल ?"

नायक उत्तर देलथिन्ह, "हमर नेटवर्क बहुत सशक्त अछि आ ओहि शहरमे पुनः हमरा नेटवर्कपर हमला करबाक साहस केओ नहि करत । ओहि ठामक समाचारपत्रमे सेहो एकरा प्रमुखतासँ छापल गेल छैक ।''

नायक घटनाक बादे सोचलन्हि जे गप जखन मेट धरि चल गेलैक तँ अवश्य ई रुस्तम भाय धरि सेहो जायत । तेँ ओ अपना बचावक लेल एकरा प्रमुख खबर बनाक' समाचार पत्रमे देने छलाह आ तकर प्रति सुभान भायके देखौने छलाह ।

सुभान भायक मुँहपर एखन धरि तामस वा गम्भीरता छलन्हि । ओ सोचि रहल छलाह जे हम रौनकके जतेक ऊपर ल' गेलहुँ ओ ताहि जोगड़क अछि वा नहि ? अनायास हुनका मुँहपर मुस्कान आबि गेलन्हि आ रौनकक पीठ थपथपौलथिन्ह । एहि तरहेँ नायक ओहि पानक दोकानबलाके चिन्हित क' सूचना मुख्यालयके पठा देलक ।

(3)

एक दिन भोरे-भोर नायक ड्राइवरी करबासँ पूर्व कचराक बोरा ल' क' जा रहल छलाह । बाटमे एकटा परिचित लोक भेटि गेलथिन्ह जे सम्भवतः हुनका सासुरक छल होयथिन्ह । नायक तँ हुनका नहि चिन्हैत छलथिन्ह, मुदा ओ नायकके चीन्हि गेलथिन्ह । ओ कतेको बेर नायकके सोर कयलथिन्ह, मुदा नायक हुनक आवाज नहि सुनबाक बहन्ना कयलन्हि । ओ साकांक्ष भ' आगू बढ़ैत रहलाह । आगन्तुकक आवाजपर ध्यान नहि देलन्हि । नायक अपन असली रूप प्रकट नहि कर' चाहैत छलाह । एहिसँ मीशन विफल भ' सकैत छलन्हि । ओहि आगन्तुकके बड़ छगुन्ता लगलन्हि जे ई उत्तर किएक नहि देलथिन्ह । एकर दुइटा कारण भ' सकैत छलैक । शारदा बाबूक जमाय की तँ बताह होयथिन्ह वा बेरोजगार । मुदा शारदा बाबू तँ लोकके कहने छलथिन्ह जे हुनक जमाय आफीसर छथिन्ह । हम बिना सत्यताक पता लगौने गाम नहि जायब । दोसर दिन ओ पुनः ओही बेरमे नायकक बाट छेकि लेलथिन्ह आ पुछलथिन्ह, "अहाँ के थिकहुँ आ एहि ठाम की क' रहल छी ?"

नायक कहलथिन्ह, "हम रौनक छी आ अपन ड्यूटी क' रहल छी ।"

ओ व्यक्ति जनिक नाम अनूप छलन्हि, पुछलथिन्ह, "हमरा चिन्हैत छी ?"

नायक कहलथिन्ह, "जी...।"

अनूप पुछलथिन्ह, "हम के थिकहुँ ?"

नायक कहलथिन्ह, "अहाँ हमर मामाजी थिकहुँ । गोड़ लगैत छी मामाजी ही...ही...ही...।"

अनूप पुछलथिन्ह, "अहाँ एना किएक करैत छी ?"

नायक कहलथिन्ह, "हम भोजन केने छी । हम आब नहि खायब... ही...ही...ही...।"

अनूप पुछलथिन्ह, "अहाँक गाम कत' अछि ?"

नायक कहलथिन्ह, "हमर माम तँ मरि गेल...ही...ही...ही...।

अनूप पुछलथिन्ह, "अहाँक विवाह कत' भेल अछि ?"

नायक कहलथिन्ह, "धिया-पूता...सात-आठटा...अछि...ही...ही... ही...।"

अनूपकेँ बुझबामे अयलैक जे नायक बताह भ' गेल छथि । ओ अपना गाममे चर्चा कयलन्हि जे शारदा बाबूक जमाय बताह भ' गेल छथिन्ह । ई गप शारदा बाबूक एकटा दियाद सुन्दर बाबू सुनलन्हि, ओ अनूपसँ पुछलथिन्ह, "की हौ अनूप, ई कोन फतूर उड़ा रहल छह जे शारदा भैयाक जमाय बताह भ' गेलथिन्ह । शारदा भैया तँ बड़ सुन्नर वर ताकि बेटीक कन्यादान कयने छलाह, सेहो कोनो पैघ अफसरसँ, देखबा-सुनबामे सेहो बड़ दीब छलथिन्ह । अवश्य तोरा भ्रम भेल होयतह ।"

अनूप कहलथिन्ह, "कत' लिखल छैक जे पढ़ल-लिखल आ सुन्नर लोक बताह नहि भ' सकैत अछि ।"

सुन्दर कहलथिन्ह, "नहि...से तँ नहि लिखल छैक, मुदा ओहने रूप-रंगक केओ आनो तँ भ' सकैत छैक ?"

अनूप कहलथिन्ह, ''नहि...नहि...सुन्दर भैया, हमरा कोनो भ्रम नहि भेल अछि । हम एकटा दोस्तसँ भेट करबाक लेल आजमगढ़ गेल छलहुँ । ओही ठाम देखलहुँ जे नायकजी भोरे-भोर एकटा बोड़ा ल' क' कचरा बिछैत छलाह आ हम जखन टोकलियन्हि, तँ अनाप-सनाप बाजब शुरू क' देलन्हि । हम ईहो प्रयास कयलहुँ जे कहुना हिनका ल' क' गाम

चल आबी । आखिर शारदा बाबूक जमाय थिकथिन्ह, मुदा उनटे ओ हमरे नालीमे ठेलि देलन्हि आ भभाक' हँस' लगलाह । तखन ओही ठामक एक-दू गोटे हमरा पुछलन्हि, "किएक हिनका पकड़ैत छियन्हि ? ई के थिकाह ?"

हम ओकरा सभकेँ सब गप कहलियैक, ''ई हमरा गामक जमाय छथि । हिनकर मन ठीक नहि छन्हि । तेँ हम हिनका अपना गाम ल' जाय चाहैत छी ।''

ओ सब कहलक, ''ई काज एकसर अहाँसँ नहि होयत । एहि लेल तीन-चारि गोटेसँ आउ आ पकड़िक' ल' जैयन्हु ।''

सुन्दर कहलथिन्ह, "हम तँ काल्हिओ शारदाक ओहि ठाम बड़ी काल धरि बैसल छलहुँ । चाह-पान करौलक, मुदा एहि सभक कोनो चर्च नहि कयलक ।"

अनूप कहलथिन्ह, ''कोना करितथि ? ई कोन उत्कृष्टिक गप छलैक वा एखन भ' सकैत अछि जे ओहो गपकेँ नीक जकाँ नहि बुझने होथि ।''

सुन्दर शारदा बाबूक दियाद तँ अवश्य छलथिन्ह, मुदा दुनूमे भितरिया डाह सेहो चलैत छलन्हि । सुन्दर तँ एहने-एहने मौका तकैत छलाह जाहिसँ शारदा बाबूकेँ समाजमे मोलाजिम कयल जा सकैछ । ओ कतेको ठाम एकर चर्चा कयलन्हि । अनूप तँ हिनका मात्र एतबे कहने छलन्हि जे शारदा बाबूक जमाय नायकजी बताह भ' गेल छथिन्ह आ आजमगढ़मे कचरा बीछै छथिन्ह, मुदा सुन्दर ओहि गपकेँ आर नोन-मिरचाइ लगा क' प्रचार करैत रहलथिन्ह ।

एक दिन सुन्दरक भेट त्रिलोकी बाबूसँ भेलन्हि । त्रिलोकी बाबू हालचाल पुछलथिन्ह, तँ सुन्दर कहलथिन्ह, ''सब किछु तँ ठीके-ठाक अछि मुदा ?"

त्रिलोकी बाबू पुछलथिन्ह, "मुदा की...?"

सुन्दर कहलथिन्ह, "भाइ साहेबक जमाय बताह भ' गेल छथिन्ह आ कतौ कोनो शहरमे कूड़ा-कचरा बिछैत छथिन्ह । ई काज तँ दुइए गोटे क' सकैत अछि, की तँ ओ बताह होअय वा बेरोजगार । आब भितरिया

गप की छैक, से तँ हम सब नहि बुझैत छी । कदाचित् पुछबन्हि तँ आगि लागि जयतन्हि ।"

त्रिलोकी बाबू पुछलथिन्ह, "तखन बुझलियैक कोना ? के कहलक ?"

सुन्दर कहलथिन्ह, "हमरा तँ अनूप कहलक । ओएह कतौ देखने छल होयतन्हि ।"

त्रिलोकी कहलथिन्ह, "बजैत छलाह जे दस लाख टाका गनलहुँ अछि । जमाय पुलिस अफसर छथि । घरक सेहो बड़ ठोस छथि । तखन तँ हुनका लोकनिकेँ अस्पताल ने ल' जयबाक चाहियनि ।"

सुन्दर कहलथिन्ह, "चाहियनि तँ सएह, मुदा हुनका कहतन्हि के ?"

त्रिलोकी बाबू कहलथिन्ह, ''सेहो सही कहल अछि । अहाँ तँ नहिए कहबन्हि आ दोसरकेँ मतलबे कोन छैक ।"

एहि तरहेँ सुन्दर कतेको गोटेक बीच प्रसाद बाँटि अयलाह । कोना ने कोना ई गप शारदा बाबूक कनियाँक कानमे गेलन्हि । ओ तुरंत शारदा बाबूकेँ कहलथिन्ह । शारदा बाबू अपना जमायकेँ टेलीफोन लगौलन्हि तँ ओम्हरसँ जबाब भेटलन्हि, "ई सेवा उपलब्ध नहि अछि ।'' शारदा बाबू कतेको बेर टेलीफोन कयलन्हि, मुदा उत्तर वएह पूर्ववते । ओ तमसाक' टेलीफोन पटकि देलन्हि । कनियाँ कहलथिन्ह, ''एना तमसाइत किएक छी ? हमर तँ जमाय छथि । जिनकर बेटा थिकथिन्ह, तिनका पुछियन्हु ने ।''

शारदा बाबू तुरंत सुमंत बाबूसँ गप कयलन्हि । सुमंत बाबू बड़ गम्भीर लोक आ एहि अनकट्ठ, फतूरपर घबरायबला नहि छलाह । ओ तँ बुझैत छलथिन्ह जे हुनक बालक निगरानी विभागमे छथिन्ह । ई सब बहुरुपिया बनब हुनका कार्यक्षेत्रमे अबैत छन्हि । नायक सेहो ड्यूटी जयबासँ पूर्व सुमंत बाबूकेँ कहने छलथिन्ह आ एकटा गुप्त नम्बर देने छलथिन्ह जकर उपयोग विशेष परिस्थितिमे करबाक छलैक, जखन-तखन नहि । ओहि नम्बरक विषयमे ककरो नहि जनयबाक छैक । ओ नम्बर एकदम

गुप्त रहबाक चाहैत छलैक । ओहि नम्बरसँ विभागक प्रभारी अफसरसँ सब हाल-चाल भेटि सकैत छलनि । सुमंत बाबू तुरंत ओहि नम्बरपर गप कयलन्हि । ओम्हरसँ उत्तर भेटलन्हि, ''अपने के थिकहुँ ?''

सुमंत बाबू कहलथिन्ह, ''हम सुजीत नायकक बाबूजी थिकहुँ ।''

ओम्हरसँ उत्तर भेटलन्हि, ''कनेक प्रतीक्षा कयल जाओ ।"

कनेक कालक बाद कोनो अफसर पुछलथिन्ह, "अपने के थिकहुँ ?"

सुमंत बाबू कहलथिन्ह, ''हम सुजीत नायकक पिता सुमंत नायक थिकहुँ ।''

ओम्हरसँ आवाज आयल, ''नमस्कार बाबूजी ! कहल जाओ, की आदेश छैक ?''

सुमंत बाबू पुछलथिन्ह, ''नायकक की समाचार छन्हि आ ओ एखन कत' छथि ?''

ओम्हरसँ आवाज आयल, ''नायक पूर्ण स्वस्थ आ सुरक्षित छथि । ई कहब उचित नहि होयत जे ओ एखन कत' छथि । हँ, अपनेकेँ जँ कोनो कष्ट हो, परिवारिक, आर्थिक तँ कहल जाओ । तकर समाधान कयल जयतैक ।''

सुमंत बाबू कहलथिन्ह, ''नहि...नहि...हमरा कोनो दिक्कत नहि अछि । हुनके विषयमे किछु-किछु सुनबामे आयल अछि, तेँ...''

ओम्हरसँ आवाज आयल, ''ओ एखन बड़ पैघ मीशनपर छथि । ओ जाहि स्थितिमे छथि, हुनका रह' दियन्हु । अपने लोकनि हुनका देखार करबाक कोशिश नहि करिऔन्ह । हुनका देखार भेने हुनको ऊपर खतरा भ' सकैत छन्हि आ विभागक मीशन सेहो फेल भ' जयतैक । अपने हुनकासँ कोनो सम्पर्क करबाक प्रयास नहि करब । कदाचित् अवांछित रूपमे देखने तँ आर नहि । जखन हाल-चाल बुझबाक हो तँ एही नम्बरपर गप करब ।''

एतेक कहैत टेलीफोन कटि गेलैक । ओना सुमंत बाबूकेँ मोटा-मोटी गप बुझले छलन्हि, मुदा शारदा बाबूक व्याकुलतापर ओ टेलीफोन करबाक लेल विवश भ' गेल छलाह । पुनः शारदा बाबूकेँ कहलथिन्ह, ''अपने जे किछु सुजीतक विषयमे सुनल से सही नहि अछि । ओहिना केओ फतूर उड़ौलक अछि । एहिमे कोनो सत्यता नहि छैक । बौआ खूब सुन्दरसँ मुम्बईमे अपन ड्यूटी क' रहल छथि ।''

मुदा शारदा बाबूकेँ एहिसँ संतोष नहि भेलन्हि । ओ अनूपक संगे चारि गोटेकेँ आजमगढ़ पठौलन्हि । ओहो सब बौआ-टौआक' आबि गेलाह, मुदा नायक कतहुँ नहि भेटलथिन्ह । एही क्रममे अनूपकेँ तीन-चारिटा अन्य कचरा बिछनिहार अवश्य भेटलन्हि । तकरो सभसँ पूछा-पूछी कयलन्हि, मुदा ओहो सब नायकक विषयमे कोनो समुचित उत्तर नहि देलकन्हि आ दितन्हि कोना ? ओ लोकनि नायकक विषयमे पुछैत छलाह आ नायक तँ ओहि ठाम छलाहे नहि । ओहि ठाम तँ रौनक छलाह जकरा ई लोकनि चिन्हिते नहि छलाह ।

अनूपकेँ जे तीन-चारि गोटे भेटल छलथिन्ह से कहने छलथिन्ह 'तीन-चारि गोटेसँ आउ आ पकड़िक' ल' जैयन्हु ।' ओ सब निगरानी विभागक सिपाही छलैक जे सादा वेषमे नायकक लग-पास रहैत छलैक । ओकरा सभकेँ विभाग एही लेल पठौने छलैक जे कदाचित् केओ नायकपर कोनो तरहक दबाब बनाबए तँ हुनक बचाओ करय । जखने नायक चिन्हार भ' गेलाह, तखने ओ जगह बदलबाक विचार भ' गेलैक । ओही दिन नायक राजूक भोजनमे चुपचाप एकटा केमिकल मिलौने छलाह जाहिसँ दू दिन धरि पेट झरैत रहितैक, मुदा ओहिसँ कोनो अन्य खराबी नहि होइतैक । ओकर ठीक होयबाक दबाइ सेहो नायक देने छलथिन्ह । ओहि पाछू उद्देश्य इएह छलन्हि जे कदाचित् राजू गाड़ीक चाभी द' क' सुभान भाय लग पठा देथि आ सएह भेलैक । यद्यपि ई काज एतेक आसान नहि छलैक । एहिसँ राजूक नोकरी सेहो खतरामे पड़ि सकैत छलैक । ई योजना पूर्ण नहि भेने दोसर सोचल जइतैक । दोसर योजना छलैक जे एकटा सिपाही सुभान भायक गाड़ीसँ टकरा जाइत आ राजूकेँ

पुलिस पकड़िक' ल' जइतैक । यावत् राजूक जमानत होइतैक, तावत् गाड़ी नायक चलबितए जाहिसँ ओकरा कार्यक्षेत्रमे बदलाओ भ' जइतैक आ एतेक चोरा-नुक्की नहि कर' पड़ितैक, मुदा नायकक पहिले योजना सफल भ' गेलनि । ओ सुभान भायक गाड़ी पकड़ि लेलनि । अनूपक संगे शारदा बाबूक पठाओल लोक सब एक सप्ताहक बाद आपस चल अयलाह आ शारदा बाबूकेँ कहलकनि जे हमरा सभकेँ कतहु नहि भेटलाह । तकर बादो लोकक उलहन सुनैत-सुनैत शारदा बाबू थाकि गेलाह आ दुनू प्राणी हरिद्वार चल गेलाह । एखन ओतहि रहि रहल छथि । गाममे सही गप तँ ककरो बाजिओ नहि सकैत छलाह, तेँ सबसँ उचित इएह बुझना गेलन्हि । किछु दिनक बाद ई हवा सुमंत बाबूक गाममे सेहो पहुँचि गेलनि आ लोक सभ कानफुसकी करब शुरू क' देलकनि । एक दिन तँ हद भ' गेल । भोरे-भोर किछु गोटे सुमंत बाबूक दरबज्जापर आबि गेलाह । सुमंत बाबू माल-जालकेँ सानी लगा रहल छलाह । दू दिन पहिने चरबाह भागि गेल छलन्हि । आइ-काल्हिक हरबाह-चरबाह बड़ दुलारू होइत छैक । ओ मालिकक गप बर्दास्त नहि करैत छैक । कोनो गपपर ओकरा डाँटि देने छलथिन्ह । तेँ ओ भागि गेल । जखन दरबज्जापर माल-जाल रखने छथि, तँ ओकर परिचर्या करहिटा पड़तनि । सुमंत बाबू आगत अतिथिकेँ बैसबाक आग्रह कयलथिन्ह । ओ सब दरबज्जापर राखल चौकी, कुर्सी, जिनका जे भेटलन्हि ताहिपर बैसि गेलाह । सुमंत बाबू जोरसँ चिकरैत कहलथिन्ह, ''यै रामपुरबाली ! सुनै छी ।''

आँगनसँ आवाज आयल, "की कहैत छी ?"

सुमंत बाबू कहलथिन्ह, "देखै नहि छी, दरबज्जापर किछु अभ्यागत लोकनि आयल छथि । दस कप चाह पठा दिअ' । हमर अहोभाग्य जे भोरे-भोर हिनका लोकनिक दर्शन भेल आ स्वागतक अवसर भेटल ।''

कनेक कालक बाद सुमंत बाबू सेहो हाथ-पयर धोक' दरबज्जापर बैसलाह । तावत् चाह सेहो आबि गेलैक । सभ केओ चाहक चुस्कीक संग एम्हर-ओम्हरक गप-सप सेहो क' रहल छलाह । ओना एहन अभ्यागतक आगमन सुमंत बाबूक लेल कोनो नव नहि छलन्हि । एहिना कहिओ काल

किछु गोटे आबिक' गप-सप करैत रहैत छलाह आ चाह पीबिक' जाइत छलाह । जयबा काल सुमंत बाबू आग्रह करैत छलथिन्ह, ''एहिना कहिओ काल कृपा करैत रहल जाय ।''

ओना सुमंत बाबू बहुत प्रेमसँ गप-सप करैत छलाह, मुदा जँ केओ थेथरइपर उतरि जाइत छल, तँ ओकरा उचित गप कहबामे कनेको संकोचो नहि करैत छलाह । तखन ईहो नहि सोचैत छलाह जे एहिसँ ओकरापर की असरि होयतैक ।

एक दिनक गप अछि । जीतन महतो एकटा पंचैतीक लेल सुमंत बाबूकेँ बजब' अयलथिन्ह । जीतन महतोकेँ धनिकपानाक बड़ दाबी आ जकरा दाबी भ' जाइत छैक से अनुचित-उचित किछु नहि बुझैत अछि । ओ जे कयलक सएह उचित । जीतन महतो अपना पड़ोसीक बाड़ीमे दू हाथ घुसिक' घर बना लेने छलथिन्ह, तकरे पंचायत छलैक । सुमंत बाबू कहलथिन्ह, "हम पंचैतीमे नहि जाइत छी । हमर गप के मानत ? अनेरे जाउ आ आउ, एहिसँ की लाभ ।"

जीतन महतो कहलथिन्ह, "जे उचित होयतैक, से सब मानत ।''

ताहिपर सुमंत बाबू कहलथिन्ह, "तखन जयबाक कोन काज । अहाँ जबर्दस्ती खखनाक बाड़ीमे दू हाथ बढ़ाक' घर बनौने छियैक, तकरा छोड़ि दिऔक । कतेको बेर अमीन राखल गेलैक, मुदा अहाँ तकरा मानितहि नहि छियैक । ओहि जमीनक बदला जमीन वा टाका द' दिऔक । झगड़ा अनेरे खतम भ' जायत ।"

जीतन महतो कहलथिनह, "ओहि एवजमे खखनाक बाप हमरासँ दस हजार टाका लेने छल ।"

सुमंत बाबू कहलथिन्ह, "ई गप तँ अहाँ आइ बाजि रहल छी । एकर चर्च तँ आइ धरि ने अहाँ कयने छलहुँ आ ने केओ आर । जँ अहाँक गप सत्य अछि तँ रजिस्ट्री किएक नहि करयलहुँ वा अहाँ लगमे सम्बन्धित कोनो कागत-पत्र अछि ?"

जीतन महतो कहलथिन्ह, "नहि, से तँ नहि अछि । टाका तँ मुखहस्ते देने छलियैक ?"

सुमंत बाबू पुछलथिन्ह, "केओ गवाह अछि । ककरा सोझाँमे टाका देने छलियैक ?"

जीतन महतो कहलथिन्ह, "नहि, कोनो गवाहो नहि अछि । हम तँ विश्वासेपर देने छलियैक ।"

सुमंत बाबू कहलथिन्ह, "तखन हमरा किएक ल' जायब । हम एहन बलधिङ्गरोबला पंचैती नहि करैत छी । बिना गवाहक आ कागत-पत्रक पंचैती नहि होइत छैक । तखन तँ ओहने लोककेँ ताकू जे मुँह देखिक' मुँगबा परसथि ।''

एहन स्पष्टवादी छलाह सुमंत बाबू । एम्हर सुमंत बाबूक ओहि ठाम चाह पीलाक बाद सब केओ कनफुसकी कर' लगलाह ।

रमेश कहलथिन्ह, "बुझाइत अछि जे हिनका किछु नहि बूझल छन्हि ।''

ताहिपर सुमंत बाबू अकचकाइत पुछलथिन्ह, ''ककरा की भेलैक अछि ?'' सुमंत बाबू रमेशक गपक आशय बुझि गेल छलाह । हुनका तँ सब किछु तखनेसँ बूझल छलन्हि जखन शारदा बाबू टेलीफोन कयने छलथिन्ह । तथापि ओ रहस्यकेँ रहस्ये राखब उचित बुझैत छलाह ।

रमेश पुनः पुछलथिन्ह, "की अहाँकेँ वास्तवमे किछु नहि बुझल अछि ?"

सुमंत बाबू कहलथिन्ह, "कोन विषयमे ? विषय ने स्पष्ट करू ।"

रमेश पुछलथिन्ह, "अहीँक सुजीतक विषयमे ।"

सुमंत बाबू पुछलथिन्ह, "की भेलन्हि अछि सुजीतकेँ ?"

रमेश कहलथिन्ह, ''लोक सभ बजैत अछि जे किछु माथा...''

सुमंत बाबू कहलथिन्ह, "रमेशजी ! पर उपदेशे पाण्डित्यम् । अहाँ देखलियनि अछि ?"

रमेश कहलथिन्ह, "नहि, हम तँ नहि देखलियन्हि अछि । लोके सभ..."

सुमंत बाबू कहलथिन्ह, "रमेशजी ! हमरा बड़ खुशी भेल जे अहाँ सनक लोक हमर शुभचिंतक छथि । जे अहाँ देखलियैक नहि तकर तँ एतेक चिंता अछि आ जे नित्य देखैत छी, तकर कोनो चिंते नहि । अहाँक मायक की स्थिति छन्हि से नहि सुझैत अछि । ओ माय जे नौ मास धरि अपना पेटमे रखलन्हि, कोन धरानी सँ अहाँक पालन-पोषण कयलन्हि । अहाँ मात्र तीन वर्षक छलहुँ, जखन अहाँक बाबूजी स्वर्गीय भेल छलाह । पित्ती-पितिआइन कात क' देलन्हि । तखन तँ ओही बूढ़ीकेँ धन्यवाद देबाक चाही, जे जेना-तेना अहाँकेँ ठाढ़ कयलन्हि । बदलामे हुनका अहाँ की द' रहल छियैन्हि ? सेवा तँ दूर, भरि पेट भोजनोपर आफति । अपन टेटर नहि सुझैत अछि आ दोसराक टेटर देखबाक लेल उताहुल छी ।"

रमेशक मुँह तँ अपन सनक भ' गेलन्हि । एखन नवमे मुँहपुरुष बनबाक प्रयास क' रहल छलाह । बेसी फचाँरि जकाँ बजने केओ मुँहपुरुष नहि बनैत अछि । ओहि लेल धीर, वीर आ गम्भीर बन' पड़ैत छैक । ओहि लेल नीक क्रिया सेहो कर' पड़ैत छैक । एहन नहि जे अपना बहुसँ मारि खाउ आ दोसराक बहुक पंचैती करू ।

गणेश कहलथिन्ह, "सुमंत भाय ! एना तमसाउ जुनि । हमरा लोकनि अहाँक हिनस्ताइ करबाक लेल नहि आयल छी । मात्र जिज्ञासाक उद्देश्यसँ आयल छलहुँ । अहाँक बालकक विषयमे किछु सुनलहुँ तेँ सामाजिकताक निर्वाहक लेल अयलहुँ ।"

सुमंत बाबू पुछलथिन्ह, "की सुनलहुँ हमरा बालकक विषयमे ?"

गणेश कहलथिन्ह, "ओ आजमगढ़मे कचरा बिछैत देखल गेलाह । एतेक पढ़ल-लिखल लोक कोन स्थितिमे एहन काज क' रहल छथि ?"

सुमंत बाबू पुछलथिन्ह, "की अपने देखल अछि ?"

गणेश कहलथिन्ह, "जी नहि, हम नहि देखल अछि, ककरो मुँहे सुनल अछि ।"

सुमंत बाबू कहलथिन्ह, "आब अहीँ कहू, कत' मुंबइ आ कत' आजमगढ़ ? अहाँकेँ तँ बूझल अछि जे हमर बेटा-पुतोहु मुंबइमे छथि । रातिओमे हमरा करीब बीस मिनट धरि गप भेल अछि । एहि दुनूमे कतहु ताल-मेल छैक ? आ बाजब तँ कहब तमसाउ जुनि ।''

गणेश कहलथिन्ह, ''नहि, तालमेल तँ नहि छैक । तखन अवश्य केओ फतूर उड़ौने होयत ।"

सुमंत बाबू कहलथिन्ह, "निश्चिते ई सब फतूर छियैक । जकरा कोनो काज नहि रहैत छैक, से बैसल-बैसल इएह सब करैत अछि । ई फतूर एहिना उड़ैत छैक । एकरा कोनो हाथ-पयर नहि होइत छैक । जखन हम भागलपुरमे छलहुँ तँ किछु दिन धरि यावत् डेरा नहि भेटल छल, एकटा ठकुरबाड़ीमे रहैत छलहुँ । भोजन एकटा सम्बन्धीक ओहि ठाम करैत छलहुँ आ रातिक' सुतबाक लेल ठाकुरबाड़ी चल जाइत छलहुँ । ठाकुरबाड़ी बड़ पैघ छलैक आ ओकर पुजारी भलमानुष । ओहि ठाम किछु मजदूर वर्गक लोक सेहो सुतैत छलैक जे दिन भरि मजदूरी करैत छलैक वा रिक्सा चलबैत छलैक आ रातिमे कोनो फुट-फाटक दोकानमे भोजनक' सुतबाक लेल चल अबैत छलैक । ओ सब आपसमे गप करैत रहए जे एक गोटे कमयबाक लेल कामरूप-कामाख्या गेल । ओहि ठाम ओ की कमयलक से तँ नहि पता, मुदा किछु जादू सिखिक' अवश्य आयल । ओ अपना कनियाँकेँ कहलक जे हम एहन जादू सिखिक' आयल छी जे ककरो किछु बना देबैक आ फेर ओकरा पहिलुक रूपमे ल' अनबैक ।

ओकर कनियाँ पुछलकै, ''से कोना ?''

ओ दूटा गिलासमे जल ल' क' मंत्र पढ़ि देलकैक आ कनियाँकेँ कहलकैक, ''एकरा ककरो देहपर छीटि देलासँ ओ बानर भ' जयतैक आ दोसर गिलासक जल छिटलापर पुनः मनुक्ख भ' जयतैक । ओ पहिल गिलासक जल अपनापर छीटिक' बानर भ' गेल आ ततेक जोरसँ ने खोखिआयल जे ओकर कनियाँ दोसर गिलासक जल छीटब बिसरि गेलैक आ ओहि ठामसँ भागि पड़यलैक । आब ओ बानर महल्ले-महल्ले घुमि

रहल अछि । हमहूँ सब दू-तीन गोटा मिलिक' ओहि बानरकेँ देखबाक योजना बनौलहुँ, मुदा देखि नहि सकलहुँ । जकरा पुछियैक से कहैत छल जे आइ अमुक महल्लामे देखल गेलैक अछि । सात दिन धरि बौअयलाक बाद हम सब ओकरा गपे-सपमे पुनः आदमी बना देलियैक आ ओ रिक्साबला जखन चर्चा कयलक तँ हम कहलियैक, "आइ ओ पुनः आदमी भ' गेलैक ।"

ओ रिक्साबला पुछलक, "से कोना ?"

हम कहलियैक, ''आइ बनरबज्झाकेँ बजाक' पहिने ओकरा जालमे बझाओल गेलैक । तकर बाद ओकरे पढ़लाहा दोसर गिलासक जल ओकरा देहपर छीटि देलकैक । ओ मनुक्ख भ' गेल आ अपन काज-धंधा क' रहल अछि ।''

दोसर दिन ओएह रिक्साबला रातिमे कहलक, "हाकिम ठीके ओ बानर मनुक्ख भ' गेलैक । एकर चर्चा समूचा शहरमे अछि । हमरा लोकनिक कनेक प्रयाससँ ओ फतूर एक क्षणमे लुप्त भ' गेल अन्यथा पता नहि कतेक दिन धरि चलैत । तहिना ईहो फतूर कतौसँ उड़ल आ एक दिन खतम भ' जायत । हमरा तँ नित्य दस बजे रातिमे नायकसँ गप-सप होइत अछि । एहन कोनो गप तँ छैक नहि । दोसर गप सुजीत हमर बालक छथि । हुनका विषयमे हम नहि तँ आर दोसर के सोचतैक ? हुनक मन खराब छन्हि तँ हम ने हुनक इलाज करेबन्हि । एहि लेल अहाँक छाती किएक फाटि रहल अछि । किछु लोकक आदति भ' जाइत छन्हि "दोसराक टाटमे पयर घुसिआयब" ।

(4)

निगरानी विभाग आ अपराधक दुनियाँमे सब किछु तँ विपरीते होइत अछि, मुदा एक चीज समान अछि आ से अछि विश्वास आ गोपनीयता । विश्वास आ गोपनीयतामे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध छैक । बिना पूर्ण जानकारीकेँ एक दोसरपर विश्वास नहि कयल जाइत छैक । नायक जखन सुभान भायक ड्राइवर बनल तँ अनजान होयबाक कारणे ओकरा विषयमे सत्य जनबाक लेल सुभान भाय रुस्तमकेँ कहलथिन्ह । रुस्तम भाय मिर्जापुरक एकटा मेटकेँ ई भार देलन्हि । मेट एक पयरक मालिक छलैक आ मिर्जापुरमे प्रायः लोक ओकरा जनैत छलैक । ओकर नाम सुलेमान छलैक आ ओ साइकिल मरम्मतिक काज करैत छलैक । दूर-दूरसँ लोक ओकरा ओहि ठाम साइकिल ठीक करेबाक लेल अबैत छलैक । ओकर दोकान कालेजक बगलमे छलैक । प्रायः कालेजक छात्र-छात्रा ओकरहिसँ अपन साइकिल मरम्मति कराबैत छलैक । जँ कोनो बच्चा कहैत छलैक जे सुलेमान भाय आइ कैंचा ल' क' नहि आयल छी तँ सुलेमानक उत्तर होइत छलैक, 'कोनो बात नहि, काल्हि द' देब' । जँ कोनो बच्चा कहैत छलैक जे सुलेमान भाय, हम एक टाका कम देब तँ ओकर उत्तर होइत छलैक, 'कोनो बात नहि जएह देब से दिअ' ।' ओकर व्यवहार खासक' विद्यार्थीक लेल बड़ नीक छलैक । ओहि कालेजक विद्यार्थी सब सेहो सुलेमान भायकेँ बड़ मानैत छलैक ।

एक दिनक गप अछि । सुलेमानक भिखमंगा समुदायकेँ केओ धमकौने छलैक । ओ सभ करीब पाँच बीघा सरकारी जमीनपर अपन खोपड़ी बनौने छलैक आ ओहिमे करीब पाँच सय भिखमंगा रहैत छलैक ।

ओहि जमीनपर कोनो कारोबारीक नजरि गेलैक । ओ ओहि ठाम कोनो बहुमंजिला घर बनाब' चाहैत छल । सएह जमीनकेँ खाली करयबाक लेल किछु गुंडा आयल छलैक । सम्भवत: ओकरा सभकेँ ओएह कारोबारी पठौने होयतैक । खबरि सुलेमान भायकेँ भेटलनि । सुलेमान भाय बिजलीक गतिएँ जा'क' ओहि गुण्डा सभकेँ पीटि-पाटिक' दोकानपर आबि गेल आ एना भ' क' अपना काजमे तल्लीन भ' गेल जेना किछु भेले नहि हो । थानामे सुलेमान भायक खिलाफ प्राथमिकी दर्ज भ' गेलैक । थाना प्रभारी दोकानपर पहुँचि गेलाह । सुलेमान भाय बाजल, ''अपने एखन जाउ । हम साँझमे अहाँक भेट करैत छी । कतेको बच्चाक साइकिल मरम्मति करबाक छैक । जँ से नहि होयतैक तँ ओकरा सभकेँ घर जयबामे कष्ट भ' जयतैक ।'' मुदा थाना प्रभारी नव आयल छलाह । ओ सुलेमानक पहुँचसँ अवगत नहि छलाह । ओ जबरदस्ती सुलेमानकेँ गाड़ीपर बैसाब' चाहैत छलाह । यद्यपि थाना गेलाक बादो सुलेमान जमानत कराक' पुन: आबि सकैत छल । ओ बुझैत छल जे एकटा थाना प्रभारीक मोले कतेक होइत छैक ? दस वा बीस हजार, मुदा ओ हल्ला करब शुरू क' देलक, ''हम दोकान छोड़िक' कतहु गेले नहि छी । अहाँक अरोप निराधार आ अनुचित अछि । अहाँ सभकेँ नहि किछु भेटैत अछि तँ गरीब आ निरपराधकेँ फँसबैत छी ।'' एही हल्ला-हुल्लीमे कालेजक तीन-चारि सय विद्यार्थी जमा भ' गेलैक । ओ सब एक स्वरसँ बाजि उठल । सुलेमान भाय साइकिल मरम्मति छोड़िक' कतहु गेले नहि अछि । अहाँ जबरदस्ती किएक करैत छियैक । परिस्थितिवश थाना प्रभारीकेँ छुच्छे हाथ घुरय पड़लन्हि ।

सुलेमान भायसँ रौनकक विषयमे जानकारी प्राप्त करबाक एकटा आर मतलब छलैक । रौनक मुसलमान थिक आ सुलेमान सहजे ओकरा विषयमे सब जानकारी हासिल क' लितय । किछु दिनक बाद सुलेमानकेँ पता लागल छलैक जे रौनक नामक एक व्यक्ति मिर्जापुरसँ बाहर गेल छलैक, से पुन: आपस नहि अयलैक । ओकरा विषयमे खबरि अयलैक जे ओ ओतहि मारल गेल छल ।

रुस्तम भाय पुछलथिन्ह, "ओकर लाश आयल छलैक की नहि

आ जँ आयल छलैक तँ ओकरा कत' गाड़ल गेलैक ।"

सुलेमान कहलक, "ओकर लाश गाम नहि आयल छलैक । मात्र खबरि आयल छलैक ।"

रुस्तम भाय पुछलथिन्ह, "खबरि कोन थानासँ आयल छलैक ?"

सुलेमान कहलक, "खबरि तँ आजमगढ़ थानासँ आयल छलैक ।"

रुस्तम भाय पुछलथिन्ह, "कोनो गोटे लाशक पहचान कयने छल ?"

सुलेमान कहलकन्हि, "नहि ।"

रुस्तम भाय पुछलथिन्ह, "से किएक ?"

सुलेमान कहलकन्हि, "के करितै, ओकरा परिवारमे तँ केओ छैहे नहि आ दोसरकेँ कोन मतलब छैक । ओकर चालि-चलन सेहो ठीक नहि छलैक जेना कि लोक सभ बजैत छलैक ।"

रुस्तम भाय पुछलथिन्ह, "ओकरा घर-दुआरि छैक ?"

सुलेमान कहलकन्हि, "हँ छैक, मुदा ढहल-ढनमनायल ।"

रुस्तम भाय सुलेमानसँ प्राप्त सब जानकारी सुभान भायकेँ देलन्हि । एक दिन संध्याकाल सुभान भाय आजमगढ़ थाना पहुँचलाह । ओ थाना प्रभारीकेँ दू हजार रुपैया देलथिन्ह । थाना प्रभारी तँ बुझितहि छलाह जे सुभान भाय किएक आयल छथि । ओहो तँ हुनके प्रतीक्षा क' रहल छलाह तथापि अकचकाइत पुछलथिन्ह, "सुभान भाय ! ई की थिक ?"

सुभान भाय कहलथिन्ह, ''दरोगाजी ! बूझल नहि अछि, राजा, योगी, पेखना...''

दरोगाजी कहलथिन्ह, "मुदा हम तँ ने राजा, ने योगी आ ने पेखना, किछु नहि थिकहुँ ।"

सुभान भाय कहलथिन्ह, "अहाँ ओहूसँ बेसी छी । जाहि दिन ई लोकोक्ति बनल होयतैक ताहि दिन भारत स्वतंत्र नहि छल होयतैक । कदाचित् रहैत तँ एहि लोकोक्तिमे पुलिस सेहो जोड़ा गेल रहैत । खैर जे

से...। हमरा एकटा जानकारी अहाँसँ चाही । तेँ अहाँकेँ कष्ट देल अछि ।"

दरोगाजी कहलथिन्ह, "से तँ हमहूँ बुझैत छी जे सुभान भाय बिनु काजे नहि अबैत छथि, मुदा से तँ एकरो बिना भ' सकैत छैक ।"

सुभान भाय कहलथिन्ह, "भ' तँ सकैत छैक, मुदा उचित नहि होइतैक । थाना आ कचहरीकेँ एतेक पलखति नहि छैक जे बिना दक्षिणाक ककरोसँ गपो करत । घोड़ा जँ घाससँ दोस्ती करत तँ खायत की ?"

दरोगाजी, कहलथिन्ह, "सुभान भाय, अहाँ बड़ पैघ गप बाजि गेलहुँ । कनेक ईहो सोचिऔक जे हमरा लोकनिक ड्यूटी कतेक अछि । दिन-राति खायब-पीयब छोड़ि लागल रहैत छी । एक बेर तँ एहन भेल जे दाढ़ी बनबैत छलहुँ । आधा दाढ़ी बनल छल आ एस.पी. साहेबक टेलीफोन आबि गेल । सब किछु छोड़िक' दौड़ि गेलहुँ । ओहि ठाम गाड़ी लगले छल । चढ़िक विदा भ' गेलहुँ, मुदा एक घंटामे अपराधी पकड़ा गेल । जखन ओकरा जहलमे राखि देलियैक, तखन एस.पी. साहेब हमर दाढ़ी देखि हँसैत पुछलन्हि, ''ई...की...।''

हम कहलियन्हि, ''सर...हम तँ आदेशक पालनमे सब बिसरि गेलहुँ ।'' ओ पीठ थपथपौलन्हि आ हम छओ घंटाक बाद शेष दाढ़ी बनौलहुँ ।

''से तँ केओ नहि देखैत अछि, मुदा...।''

सुभान भाय कहलथिन्ह, "हम तँ मजाक कयलहुँ । कदाचित् अहाँकेँ कष्ट भेल तँ हम अपन गप आपस लैत अहाँसँ क्षमा मँगैत छी । सुभान भाय सोचलन्हि जे ई सब हमर अंग थिक । कदाचित् कष्ट भेने काज बिगाड़ि ने दिअए । तेँ माँफी माँगब आवश्यक बुझेलन्हि ।

दरोगाजी कहलथिन्ह, "तखन कहल जाओ, की जानकारी चाही ?"

सुभान भाय, कहलथिन्ह, "करीब छः मास पूर्व अहाँक इलाकामे एकटा बीस-बाइस वर्षक युवक मारल गेल । कारण जे होअय । ओकर घर कत' छलैक, ओकर नाम की छलैक, ओकर लाश कोन ठाम गाड़ल गेलैक । हम ओकर सत्यापन कर' चाहैत छी ।"

दरोगाजी कहलथिन्ह, "से किएक ? अहाँकेँ ओहिसँ की प्रयोजन ?"

सुभान भाय कहलथिन्ह, "हमर एकटा दूरक सम्बन्धी करीब छः माससँ लापता छथि । तकरहि खोज-बीनसँ पता लागल जे छः मास पूर्व एहि ठाम एकटा घटनामे एकटा युवक मारल गेल । की ओ सएह तँ ने थिक ?"

दरोगाजी कहलथिन्ह, "सुभान भाय, ई थाना थिकैक । ककरो घर वा सासुर नहि । एहि ठाम लाशकेँ ने जराओल जाइत छैक आ ने गाड़ल जाइत छैक । ककरा एतेक पलखति छैक ? पोस्टमार्टम कयलाक बाद चारि-पाँच दिन धरि राखल जाइत छैक । समाचार पत्रमे प्रकाशित करा देल जाइत छैक । तकर बाद नोनक कुण्डमे राखि ऊपरसँ आर नोनक छीटि देल जाइत छैक । ओ अपनहि गलि जाइत अछि । तेँ लाशक पुष्टि करब कठिन अछि । एखन ओ घटना हमरा मोन अछि, हम कहि सकैत छी ।

सुभान भाय कहलथिन्ह, "तखन सएह कहल जाओ ।"

दरोगाजी कहलथिन्ह, "एक दिनक गप छैक । गस्तीदल गस्त लगा रहल छलैक । एही क्रममे देखलक जे दू टा छौड़ा जकर वयस करीब बीस-बाइस वर्षक छल होयतैक, केँ किछु लोक घेरिक' पीटि रहल छलैक । गस्तीदल ओकरा छोड़ा क' थाना अनलक । एहि ठाम एकटा मरि गेलैक । सम्भवतः ओकरा बेसी चोट लागल छलैक । तकर नाम तँ हमरा सभकेँ नहि पता, मुदा ओकर संगी जे दोसर छौड़ा छलैक से बाजल जे एकर नाम रौनक थिकैक आ ई मिर्जापुरमे रहैत अछि । हम ओकरा पोस्टमार्टममे पठा देलियैक आ दोसरकेँ अस्पताल । मिर्जापुर सेहो खबरि क' देलियैक । किछु दिनक बाद पता लागल जे ओ अस्पतालेबला रौनक थिक आ मिर्जापुरमे रहैत अछि आ ओ मरनिहार केओ आर छलैक । सोचलहुँ जे मिर्जापुरसँ केओ पहचान करबाक लेल आओत तँ भूल सुधार क' लेब, मुदा एखन धरि केओ नहि आयल अछि ।"

सुभान भाय कहलथिन्ह, "ई कोना भ' सकैत छैक जे मरि गेल सेहो रौनक आ जे जीबैत अछि सेहो रौनक ?"

दरोगाजी कहलथिन्ह, "सुभान भाय ! ई सब खूब होइत छैक । खास क' बीमा कम्पनीकेँ चूना लगयबाक लेल । हम तँ कतेको एहन केस देखि चुकल छी । तेँ एखन धरि मृत्यु प्रमाणपत्र नहि देलियैक अछि । जँ मरनिहारक बीमा होयतैक तँ केओ ने केओ अवश्ये सोझाँ आओत ।"

सुभान भाय कहलथिन्ह, "जँ से नहि होयतैक, तखन ?"

दरोगाजी कहलथिन्ह, ''तखन ई गोलमाल किएक करैत । हमरा विश्वास अछि जे ओकर बीमा अवश्य होयतैक ।"

सुभान भाय कहलथिन्ह, "की हम ओकर फोटो देखि सकैत छी ?"

दरोगाजी कहलथिन्ह, ''अवश्य, किएक नहि । हम तँ अहीँक लेल बैसल छी । हम तँ फोटोकेँ अखबारमे सेहो देने छलियैक जाहिसँ केओ परिचित आबि लाशक पहचान क' सकथि ।''

सुभान भाय ओहि फोटोकेँ देख' लगलाह । ओहिमे एकटा फोटो रौनकसँ मिलैत-जुलैत छलैक आ दोसरकेँ ओहो नहि चिन्हैत छलथिन्ह । ओ सोचमे पड़ि गेलाह जे रौनक तँ जीवित अछि । ओ आधार कार्ड आ ड्राइविंग लाइसेंस सेहो देखौने छल, मुदा पुलिसक रेकार्डमे तँ रौनक मारल गेल छल । आखिर ई रहस्य की थिकैक ? ओ गुत्थीकेँ जतेक सोझरयबाक प्रयास करैत छलाह, ओतबहि ओझरा जाइत छलाह । ओ सोचलन्हि, ''की एहि विषयमे रौनकसँ पूछा-पूछी कयल जाय ?''

फेर सोचैत छथि, ''नहि, जँ ओ पुलिसक आदमी होयत तँ आर सतर्क भ' जायत । तेँ नीक रहत जे एहि रहस्यपर पर्दा खसले रह' दियैक आ गुप्त रूपेँ ओकर गतिविधिकेँ देखल जाय । तदनुसार कोनो कारबाइ करब उचित होयत ।''

हुनका मौन देखि दरोगाजी पुछलथिन्ह, "की भेल सुभान भाय । कोन दुनियाँमे भुतिआ गेलहुँ ?"

सुभान भाय ओहि फाइलकेँ दरोगाजीकेँ दैत कहलथिन्ह, "रौनक नामक हमर एकटा दूरक सम्बन्धी अछि । हमरो ककरो माध्यमे सूचना

भेटल अछि जे ओ छः माससँ लापता अछि आ एकटा रौनक छः मास पूर्व आजमगढ़मे मारल गेल । तेँ हम आयल छलहुँ, मुदा ई फोटो ओकर नहि थिकैक आ अहाँक सूचनानुसार रौनक जीवित अछि, मुदा कत' अछि, से भाँज नहि लागल । खैर, जत' होअय, सुरक्षित होअय ।''

एतेक कहि सुभान भाय विदा भ' गेलाह आ थाना प्रभारीकेँ कहलथिन्ह, "बेकारे हम अपनेकेँ कष्ट देल । एहि लेल क्षमा चाहैत छी ।"

दरोगाजी कहलथिन्ह, "एहिमे कष्टक कोन गप छैक । ई तँ हमर कर्त्तव्य थिक आ एहन कष्ट जँ अपने नित्य दी तँ हमरा बड़ आनन्द होयत ।''

सुभान भाय हँसैत-हँसैत विदा भ' गेलाह । थाना प्रभारीकेँ अनुमान लागि गेलन्हि जे नायक उपयुक्त स्थानपर पहुँचि गेलाह । तेँ सुभान भाय एतेक गहन परीक्षण क' रहल छलाह । ई सबटा काज तँ योजनाबद्ध तरीकासँ कयले गेल रहैक । असली रौनककेँ मारि नकली रौनक बनाओल गेल रहैक आ नायकक सब कागत-पत्र रौनकक नामसँ बनबाओल गेल छलैक, मुदा फोटो नायकक साटल गेल छलैक ।

(5)

ओहि पानक दोकानबलाक नाम दीनू छलैक । दीनू सुभान भायक सञ्जालक एकटा सक्रिय सिपाही छल । ओ सम्पूर्ण स्टेशन परिसरकेँ सम्हारैत छलैक । दीनूक एकटा पयर पता नहि कोना कटि गेल छलैक, मुदा दीनू कहैत छल जे बच्चेमे ओकरा पयरमे कोनो असाध्य घाव भ' गेलाक कारण ओकर पयर काट' पड़ल रहैक । पता नहि ओहिमे कतेक सत्यता छैक ? एक पयरक होयबाक कारणे दीनूकेँ सभक सहानुभूति भेटि जाइत छलैक । ओ गुप्त रूपेँ चरस आ गाँजाक तस्करी सेहो करैत छल । नायकक सूचनापर किछु दिनक बाद मुख्यालयसँ लालबाबू नामक एकटा अधिकारीक प्रतिनियुक्ति भेल छलनि जिनका रेलवे अधिकारीक सम्पर्कसँ प्लेटफार्मेपर दीनूक आमने-सामने एकटा दोकान खोलि देल गेल छलनि । ओहि दोकानमे केवल पोथी आ पत्रिका बिकाइत छलैक । दुनू दोकानक दूरी करीब बीस गज छलैक । लालबाबू किताब कम बेचैत छलाह, मुदा दीनूक निगरानी बेसी करैत छलाह । एही लेल हुनका पठायलो गेल छलन्हि । किछु दिनक बाद दीनू आ लालबाबूमे दोस्ती भ' गेलन्हि, मुदा ओएह साँप-छुछुन्नरिबला । दीनूक स्वभाव छलैक जे ओ सबसँ दोस्ती करैत छल आ सबमे पैसि जाइत छल । लालबाबू ठीक ओकर विपरीत छलथिन । हुनकासँ स्टेशन अधीक्षककेँ छोड़ि सभ केओ अनभिज्ञे छलथिन । स्वयं स्टेशन अधीक्षक हुनका डी.आर.एम.क आदमी बुझैत छलाह । हुनका एहि विषयमे डी.आर.एम.क निर्देश भेटल छलन्हि । तेँ लालबाबू के थिकाह, कत'सँ आयल छथि आ किएक आयल छथि, से केओ नहि जनैत छल । दीनू तँ सब अधिकारी-कर्मचारीमे पैसल रहैत छल । कौखन कोनो अधिकारीकेँ पयरो जाँत' लगैत छलैक । तेँ सभ केओ ओकरासँ

विशेष स्नेह करैत छलैक वा बुझू जे ओहि स्टेशनमे ओ सभक दुलरुआ छल । दोसर दिस लालबाबू सबसँ दूरी बनौने रहैत छलाह । भरि दिन दोकानपर आ संध्याकाल डेरा । हुनका ने ककरोसँ सम्पर्क छलन्हि आ ने हुनका तकर प्रयोजन छलन्हि । हुनका तँ जतेक कम लोक चिन्हितनि, ततेक नीक । सएह गप दीनूक चिंता आ आशंकाक कारण छलैक । दीनू लालबाबूकेँ बहुत कोड़बाक प्रयास कयलक मुदा पता नहि ओ कोन माटिक बनल छलाह । ओ हँ आ नहि छोड़ि किछु नहि बजैत छलाह । हुनका तँ मात्र अपना मीशनसँ मतलब छलन्हि जाहि लेल ओ आयल रहथि । दोकान तँ एकटा बहन्ना छलैक । हुनका पोथीक बिक्रीसँ की सरोकार ? पोथी बीकल सेहो नीक आ नहि बीकल सेहो नीक । हुनका दोकानपर बेसी चहल-पहल सेहो नहि । दिन भरि माँछी रोमैत रहैत छलाह आ अपना मीशनपर चौचंग छलाह ।

आइ-काल्हि कतेक गोटे किताब पढ़ैत छथि आ सेहो कीनिक' ? आब तँ लोककेँ मोबाइल आ टी.भी. ततेक ने व्यस्त बना देलकैक अछि जकर वर्णने नहि हो । निगरानीक क्रममे लालबाबू देखलन्हि जे केओ-केओ दोकानपर अबैत अछि आ ओकरे संगे दीनू आधा घंटाक लेल पता नहि कत' चल जाइत अछि आ पुनः एकसरे अबैत अछि, मुदा हुनका ई नहि बूझल भेलन्हि जे ओ सामग्रीक भंडारण कत' कयने अछि । लालबाबूकेँ एतेक तँ बुझल छलन्हि जे दीनू चरस-गाँजाक एजेन्ट अछि । खुदरा-खुदरी तँ एही ठाम बेचैत छल । थौक कारोबार सम्भवतः डेरासँ होइत छलैक से लालबाबूक अनुमान छल । ओना दीनू दिन-राति स्टेशनेपर रहैत छल । भोजन-भात सेहो स्टेशनेपर करैत छल । तखन ओकरा डेराक कोन प्रयोजन रहितैक । ओहिमे ओकर संग महुआ सेहो दैत छलैक । एक दिन जखन डेरासँ दीनू आयल छलैक, तँ लालबाबू पुछि देने छलथिन्ह, ''दीनू, कत' गेल छलह ?"

दीनू कहलकन्हि, "कनेक डेरा चल गेल छलहुँ ।"

लालबाबू पुछलथिन्ह, "ओ के आयल छलथुन्ह ?"

दीनू कहलकन्हि, "ओ एकटा सम्बन्धी छलाह ।"

एहि गपपर दीनू कोनो प्रतिक्रिया तँ नहि देखौलक, मुदा ओ

भीतरसँ बेसी सतर्क भ' गेल । आखिर लालबाबू हमरासँ ई प्रश्न किएक कयलन्हि ? की ई हमर जासूसी तँ नहि क' रहल छथि ?

एक दिन लालबाबू दीनूकेँ कहलथिन्ह, "दीनू, हम कनेक गाम जाइत छी । दू दिनक बाद आयब । तोँ कनेक हमरो दोकान दिस नजरि रखिह'...।"

दीनू बाजल, "हँ...हँ...किएक नहि...एकटा पड़ोसीक कर्त्तव्य इएह सभ ने होइत छैक ।" लालबाबू कतौ नहि गेलाह । ओ वेष बदलिक' स्टेशने परिसरमे घूमि रहल छलाह । दीनू जखन अपना गहिंकीक संग डेरा विदा भेल तँ लालबाबू सेहो ओकर पछोड़ धयलन्हि । दीनू घुरि-घुरिक' पाछू सेहो देखि रहल छल, जे केओ पछोड़ तँ नहि धयने अछि । दीनू जखन पाछाँ तकैत छल तँ लालबाबू अढ़ भ' जाइत छलाह आ दीनूक आगाँ बढ़लापर ओहो आगू बढ़ैत छलाह । महल्ला तँ एहन छलैक जे नाक नहि देल जाइत छलैक । चारू भाग झोपड़पट्टी, सेहो अधिकांश खाली । ओहि खोपड़ी सभमे भिखमंगे सब रहैत छलैक जे दिन भरि भीख मँगैत छलैक आ रातिमे अपना खोपड़ीमे आराम करैत छलैक । कोनो-कोनो खोपड़ीमे देहसँ लाचार वा बीमार सभ छलैक । ओहि झोपड़पट्टीक बीचमे दीनूक डेरा छलैक ।

दीनूक डेरामे माटिक देवाल छलैक आ छतपर ओहिना करिया प्लास्टिक छलैक जे प्रायः सब खोपड़ीपर छलैके । कोनो भद्र लोक ओहिमे एको घंटाक लेल नहि रहि सकैत छलाह आ जँ रहि जइतथि तँ हुनको अवश्य कोनो ने कोनो असाध्य रोग भ' जइतनि । लालबाबूकेँ आश्चर्य सेहो लगैत छलन्हि जे एहिमे लोक कोनाक' रहि रहल अछि आ एखन धरि जीवित कोना अछि । तखन ओहिमे रहनिहारो तँ प्रायः लोक अपंगे छल । तेँ ओ सभ समाजक कृपापात्र बनि भिक्षाटन करैत छल । लालबाबूक जुत्ता आ फुलपेंटक हालत तँ ओहने लगैत छलन्हि जेना केओ बुरूशसँ जड़लाहा मोबिल पोति देने होन्हि । लालबाबू दीनूक डेरेक नहि पता लगौलन्हि अपितु ओहि ठामक फोटो सेहो खीचिक' दीनूक डेराकेँ चिन्हित कयलन्हि आ योजना बनौलन्हि जे एही समयमे आ एही ठाम

छापामारी करब उपयुक्त होयत । कारण जे एखन एहि ठाम केओ नहि छल आ दीनू मालक संग पकड़ा सकैत छल । दोकानपर सब भिखमंगा ओकरा बचाओमे आबि सकैत छलैक । तखन योजना फेलो क' सकैत छल । संगहि ईहो सब सतर्क भ' जाइत । तेँ गोदामेमे आ दुपहरेक समय छापामारी हेतु उपयुक्त बुझना गेलन्हि । तदनुसार पूर्ण अनुशंसाक संग लालबाबू मुख्यालयकेँ अपन प्रतिवेदन पठा देलथिन्ह ।

किछु दिनक बाद तीन-चारिटा अधिकारी अयलाह आ लालबाबूक संग गुप्तरूपेँ वेष बदलि क' पूरा जाँच-पड़ताल कयलन्हि । आब बस प्रतीक्षा छलन्हि दीनूक जे कखन ओ अपना गहिँकीक संग गोदाम आओत । चारू भाग सादा वेषमे पुलिस राखि देल गेल छल आ तीन भागसँ गोदामक घेराबंदी भ' गेल छलैक । मात्र एक दिससँ खाली छलैक जाहि बाटे दीनू अपना गोदाममे जाइत । ठीक दू बजे दीनूक दोकानपर दू गोटे अयलैक । दीनू चारू भाग देखि लेलक । लालबाबू मुँहपर समाचार पत्र राखि पढ़ि रहल छलाह । दीनू दोकानसँ उतरिक' गहिँकीक संग विदा भेल । लालबाबूक इशारा पबितहि जे अधिकारी आयल छलाह से दीनूक पछोड़ धयलन्हि । दीनू गोदाम खोलि दुनू गहिँकीक संग भीतर गेल । तुरंत ओ अधिकारी आ सादा वेषमे जे पुलिस सभ छल, सबकेँ पकड़ि लेलक । सभटा मालक संग दीनू आ ओकर दुनू गहिँकीकेँ पकड़िक' चलान क' देल गेल । खोपड़ीमे किछु स्त्रीगण छलैक जे एहि घटनाकेँ देखि रहल छलैक । ओ सब किछु करैत, मुदा सब देहसँ लाचार छल आ सिपाहीक आगाँ ओकर संख्या सेहो कम छलैक । दीनू ओकरा सभक राजा छलैक, भगवान छलैक । ओ ओकरा सभक कोनो विपत्तिमे ठाढ़ रहैत छलैक, मुदा संख्या बलक कारण ओहो सब विवश छल । दीनू चारू दिस दौड़िक' हल्ला कयलक, मुदा जाधरि लोक जुटैत, दीनू थाना पहुँचि गेल छल । महुआ लालबाबूकेँ इशारा करैत देखने छलन्हि, मुदा ओ ई नहि बुझि पओलक जे ई इशारा दीनूकेँ पकड़यबाक लेल कयल गेल छलैक । जखन दीनू पकड़ा गेल तखन महुआकेँ विश्वास भ' गेलैक जे एहि नाटकक सूत्रधार आर केओ नहि लालबाबू छथि । दू दिनक बाद लालबाबूक दोकान बन्द भेटलन्हि । स्टेशन अधीक्षक सभकेँ लालबाबूक

विषयमे पुछैत छलथिन्ह, मुदा केओ समीचीन उत्तर नहि दैत छलन्हि । मुख्यालयकेँ लालबाबूसँ सम्पर्क नहि होयबाक कारणे स्टेशन अधीक्षकसँ पुछारि भेल छलन्हि । तेँ स्टेशन अधीक्षक एतेक व्यग्र छलाह । स्टेशन अधीक्षककेँ चारि दिनक बाद पश्चिमक केबिन स्टाफसँ बगलक झाड़ीमे विचित्र दुर्गन्धक शिकायत प्राप्त भेलन्हि । ओ रेलवे पुलिसकेँ ल' क' ओहि स्थानपर गेलाह । झाड़ी बड़ पैघ आ बेसी दूरमे पसरल छल । लग-पासक लोक सभटा बाहरन-सोहरन ओम्हरे फेकैत छलैक । दुर्गन्धक सेहो एकटा कारण छलैक । रेल पुलिस तँ सएह कहि अपन पिण्ड छोड़ौलक, मुदा गुमटी स्टाफ बाजल, "दुर्गन्ध तँ एहिमे पहिनहुँ छलैक, मुदा ई विचित्र दुर्गन्ध काल्हिसँ छैक । लगैत अछि जेना कोनो मरल जानवर आदि फेकल गेल हो ।"

स्टेशन अधीक्षककेँ संतोष नहि भेलन्हि । ओ सफाइकर्मीकेँ ओहि झाड़ीमे घुसौलन्हि आ नीक जकाँ खोज शुरू भेल । ओहि सफाईकर्मीकेँ एकटा लाश भेटलैक जे खस्सी-बकरी जकाँ खंड-खंड क' देल गेल छलैक । ईहो पता नहि चलैत छलैक जे लाश मनुक्खक थिकैक वा जानवरक, मुदा जखन ओकर मुड़ी झाड़ीसँ भेटलैक आ सब अंगकेँ जोड़ल गेलैक तखन विदित भेलैक जे ई कोनो मनुक्खेक लाश थिक । ओहि लाशपर अनगनती माँछी भिनकि रहल छलैक आ चिन्हब तँ कठिन छलैहे । स्टेशन अधीक्षक निगरानी मुख्यालय आ स्थानीय पुलीस अधीक्षककेँ सूचित कयलन्हि । आश्चर्य जे लाशक लग-पास कोनो कपड़ो धरि नहि छलैक, जाहिसँ चीन्हब सुलभ होइतैक । नाकपरक तिलबासँ चिन्हल गेल जे ई लालेबाबूएक लाश थिक । विभागक चिन्हमे नाकपरक तिलबा देखाओल गेल छलैक । लाशक पोस्टमार्टन कराय परिजनकेँ सौंपि देल गेलन्हि । दीनूबला गप तँ नायक बुझिये गेलाह । किएक तँ दीनू सुभान भायक संजालक रीढ़ छलैक । दीनू सनक कतेको लोक सुभान भायक संजालमे आयल आ गेल, मुदा दीनूक विकल्प नहि छल । ओकरा बिना आजमगढ़क अपराधी सभ नेतृत्व विहीन भ' गेल छलैक । दीनूक जमानत करायब आवश्यक छलैक, से सुभान भायक सोच छलन्हि । तकर समर्थन रुस्तम भाय आ रौनक सेहो कयलक । दीनू जतेक

फुर्तीसँ स्थितिकेँ बिगाड़ि सकैत छल आ पुनः ओकरा सम्हारियो सकैत छल, से दोसर नहि क' सकैत छल । तकर ज्वलंत उदाहरण तँ रौनके छलाह । सुभान भायकेँ स्टेशनक किछु कर्मचारी आ महुआसँ पता लगलन्हि जे ई काज लालबाबू छोड़ि दोसर ककरो नहि थिक । जकरा-जकरासँ लालबाबू दीनूक विषयमे पूछ-पाछ कयने रहथिन, सब सुभान भायकेँ ओएह गप कहलथिन्ह जे लालबाबू कहने छलनि । सुभान भाय वा दीनूसँ सभ खुश छल । ओ यथोचित सभक सेवा करैत छलन्हि, मुदा लालबाबूसँ केओ खुश नहि छल । हुनकासँ ककरो किछु प्राप्त नहि होइत छलैक । ओ तँ स्टेशन अधीक्षकक धाखे केओ किछु नहि बजैत छलैक । दीनूकेँ पकड़यलाक बाद दोसर दिन योजनाक अनुसार महुआ लालबाबूक दोकान लग गेल । ओ दोकान बन्द करबाक मुद्रामे छलाह । महुआ जकर वयस बीस-बाइस वर्षक होयतैक, तकर रंग-रूप तँ लाली गोराइवला छलैक, मुदा नाक आ चेहरा कटगर छलैक । ओकर भाव-भंगिमामे बेस आकर्षण छलैक । आसमानी रंगक साड़ी आ लाल रंगक आँगी ओकर यौवनक माधुर्यकेँ बढ़ा रहल छलैक । तेहने कजरायल आँखि आ गदरायल जवानी ककरो बेहोश करबाक लेल पर्याप्त छलैक । ओ आबिक' लालबाबूसँ पुछलक, "हमरा किएक बजौने छलहुँ ?"

लालबाबू अकचकाइत कहलथिन्ह, "हम अहाँकेँ किएक बजायब ? अवश्य अहाँकेँ भ्रम भेल होयत ।"

मुदा महुआ लालबाबूक संग बकझक करऽ लागल । ओहि ठाम जतेक भिखमंगा समाजक लोक छलैक, सभ लालबाबूपर टूटि पड़ल । हुनका सम्हरबाक मौका सेहो नहि देलकन्हि । ओ कहुनाक' भागि क' स्टेशन अधीक्षक लग चल गेलाह । अधीक्षक बीच-बचाओ करैत हुनका बचा लेलथिन्ह । भिखमंगा सब बजैत चल गेल जे जे हमरा सभक बहु-बेटीक संग छेड़खानी करत, तकरा जीब' नहि देबैक । जँ जीबाक होइक तँ एहि ठामसँ कतहु अन्यत्र चल जाओ । तकर बाद तँ ने लालबाबू दोकाने खोललन्हि आ ने कतहु देखिये पड़लाह आ चारि दिनक बाद तँ लाशे भेटलन्हि ।

किछु दिनक बाद दीनूक जमानत भ' गेलैक । दीनूक संग जे सामान

पकड़ायल रहैक, सभकेँ थानामे बदलि देल गेलैक आ चार्जशीट दीनूक पक्षमे क' देल गेलैक । एहि लेल थाना प्रभारीकेँ दू लाख टाका देल गेलन्हि । ई सभ काज करयबामे सुभान भाय माहिर छलाह । जखन एहि विषयपर मुख्यालयसँ नायक तलब कयल गेलाह, तँ ओ कहलथिन्ह, "जँ हम एहि विषयपर जाँच करब तँ हम देखार भ' सकैत छी जे मीशनक कामयाबीक लेल उचित नहि । हम जतेक आगू बढ़ि गेल छी से पुनः प्राप्त करबामे दिक्कत भ' सकैत अछि । तेँ उचित होयत जे कोनो दोसर गोटेसँ छानबीन कराओल जाय वा ईहो प्रकरण सुभाने भायक खातामे जोड़ि देल जाय । मिला-जुला क' ईहो हुनके चेला-चपाटीक कार्य थिकन्हि ।''

नायककेँ एतेक तँ पता लागिये गेलन्हि जे लालबाबूकेँ भिखमंगा सब मिलिक' मारने अछि । ओ जनैत छलाह जे एहिमेसँ अधिकांश लोक दिनमे भीख मँगैत अछि आ रातिमे लूट-पाट करैत अछि । जे जनानी लालबाबूकेँ फँसौलक सेहो केओ आर नहि दीनूक प्रेमिका थिकैक । ओहो राति-दिन एही तरहेँ अपन कमाइ करैत अछि ।

एक दिन नायक स्टेशनपर घुमि रहल छलाह । ओ देखलनि जे स्टेशनक एकटा कुली आ दीनू खूब गारा-गारी क' रहल अछि । नायक दीनूक पक्ष ल' क' ओहि कुलीकेँ किछु बाजल । यद्यपि गलती दीनूक छलैक । पहिने ओएह शुरू कयने छलैक, मुदा नायककेँ तँ दीनूक संग देब लाचारी छलनि, किएक तँ दीनू सुभान भायक एकटा मजबूत सिपाही छल । ओकर क्रियाकलाप तँ नायक पहिनहुँ देखि चुकल छलाह । दीनू नायककेँ ओहि रूपेँ नहि चिन्हैत छलन्हि आ ने नायककेँ तकर कोनो आवश्यकते छलन्हि । जखन नायक दीनूक पक्ष लेलन्हि, तँ ओ कुली बाजल, "बाबू ! अहाँ अपन बाट पकड़ू । अहाँ यात्री थिकहुँ । अहाँ एहि लफड़ामे नहि पड़ू । ई साला महाहरामी अछि । ई जाहि पातपर खाइत अछि, ओहीमे छेद करैत अछि ।''

नायककेँ बुझयलैक जे ओहि कुलीक आक्रोश सम्भवतः लालबाबूक दुःखद मृत्युक कारण भ' सकैत छैक, मुदा ओहि समयमे दीनू तँ जेलमे छल । तखन ई कोना भ' सकैत छलैक ? खैर जे से, नायक ओहि कुलीकेँ

कहलथिन्ह, "सुनू...दुनू गोटेतँ दिन राति स्टेशनेपर रहैत छी । तेँ दुनू गोटे मिलिक' रहू जाहिसँ दुनू गोटेकेँ लाभ होयत ।"

कुली बाजल, "छोड़ू सर ! ई सार की हमरा फायदा देत । हमर अपने यूनियन एहन अछि जे ककरोसँ भिड़ि सकैत अछि, मुदा हम सब एतेक घृणित काज नहि करैत छी, जेहन ई सब करैत अछि ।"

नायक ओहि ठामसँ ससरि गेलाह एहि लेल जे बात बढ़लासँ ओहो देखार भ' सकैत छलाह । ओ तँ अपने फूकि-फूकिक' डेग धरैत छलाह । भ' सकैत छलैक जे सुभान भायक जासूस हुनकोपर नजरि रखने होइनि । तेँ ने एतेक पैघ खेलाड़ी एखन धरि सरकारक हाथ नहि आयल छल । सरकारक सब तंत्रे सुभान भायक ओहि ठाम बन्हक लागल छल आ सब कुकुर जकाँ कौड़ा पयबाक लेल नाङ्गरि डोला रहल छल ।

नायकक सोच छलन्हि जे बड़का पकड़ल जयबाक चाही, छोटका तँ देखियेक' सुधरि जायत ।

एहिमे एकटा कड़ी महुआ सेहो छलैक । ओना तँ कहबाक लेल महुआ दीनूक प्रेमिका छलैक, मुदा वस्तुस्थिति इएह छलैक जे ओ सभक खेलौना छलैक । ओकरा संगे जखन-तखन सभ खेलाइत टा छल । खाहे ओ रेलवे अधिकारी होथि वा जी.आर.पी. आदि । ई गप दीनू सेहो जनैत छल । एहि लेल कौखन दुनूमे खूब गारा-गारी होइत छलैक । पुनः घंटा दू घंटाक बाद स्थिति सामान्य । ई गप नायककेँ ओहि कुलीसँ विदित भेलनि जे दीनूक संग गारा-गारी करैत छल । ओ कुली अनटेटाह छल । ककरो मुँहेपर ओकर गलती बाजि दैत छल । ओ ककरोसँ डेराइत नहि छल । ओकरो यूनियन बड़ सशक्त छलैक । एक बेर एकटा भिखमंगा आ कुलीमे झगड़ा भ' गेल छलैक । स्टेशनमे करीब एक हजार भिखमंगा पहुँचि गेल । एम्हर कुलीओ करीब एक सय रहए । दुनूमे भिड़ंत भ' गेलैक । कुली सब, सब भिखमंगाकेँ मारिक' भगा देलक । एक मास धरि केओ स्टेशनपर नहि आयल । तखन दुनू दिससँ कतेक मान-मनौअलि भेलैक । कुली सब राजी भेल । तेँ कुली सभकेँ एकरा सभक कोनो डर नहि होइत छलैक । लालबाबू जँ किछु कुलीकेँ मिलाक' रखितथि तँ आइ हुनकर एहन दुर्दशा

नहि होइतन्हि । ओ कुली नायकसँ बहुत किछु कह' चाहैत छल, मुदा नायके कहलथिन्ह, "छोड़ह ई सब, जाहि पाप ताहि खाय।"

नायक सब सूचना गुप्त कोडपर मुख्यालयकेँ पठा देलथिन्ह । चारि दिनक बाद महुआ पकड़ायल । ओकरा पकड़ि विभाग कत' रखने छैक, केओ नहि बुझि रहल छैक । सुभान भायक पूरा पलटन ओकरा पाछू बेदम छल, मुदा महुआक कोनो पता नहि चललैक । पूरे शासन-प्रशासन महुआक़ तक्काहेरीमे लागल छल किएक तँ सुभान भाय प्राथमिकीमे महुआकेँ अपन घरक सेविकाक रूपमे जनौने छलाह । हवाइ अड्डापर सेहो पता लगाओल गेलैक । ओहि ठामक सी.सी.टी.भी.क फुटेजसँ पता लगलैक जे ठीक ओहने रंग-रूप आ मुँह-कानबाली एकटा जनानी दिल्ली गेल अछि, मुदा ओकर नाम रजनी छलैक, महुआ नहि । महुआकेँ ल' क' एकटा सी.आइ.डी. अधिकारी सोझे दिल्ली चल अयलाह । पहिने तँ महुआ किछु कहबामे नाकर-नुकुर कयलक जे एहि धंधामे लिप्त रहनिहार प्रायः लोक करैत अछि, मुदा महिला अधिकारी द्वारा जखन ओकरा उत्पीड़ित कयल गेलैक आ यौन प्रताड़ना देल गेलैक, तखन ओ अपनाकेँ रोकि नहि सकल आ जे किछु बयान देलक से एहि तरहेँ छलैक–

''हम एकटा अनाथ, पता नहि के जन्म देलक, के पालन-पोषण कयलक आ के नाम देलक महुआ । जखनसँ होश सम्हारल अछि, ओही भिखमंगाक टोलीमे रहैत छी । भीख मँगैत छी आ खाइत छी । कहबाक लेल तँ हम अविवाहित छी, मुदा हमर विवाह कतेको गोटेसँ भ' चुकल अछि आ नित्य भ' रहल अछि । ई हमर लाचारी अछि आ आब नियति बनि गेल अछि । हम जनैत छी जे हम दलदलमे छी, नर्कमे छी, मुदा ओहिसँ बहरायब कठिने नहि अपितु असम्भव अछि । कदाचित् जँ बहरयबो करब तँ के अपनाओत हमरा । हमरा सन-सन कतेको अछि जे ओहि दलदलमे फँसल अछि । लालबाबूकेँ हम अपना समाजक लोकक उकसयलापर फँसेलहुँ । हुनकापर आरोप छलन्हि जे ओ दीनूकेँ पुलिससँ पकड़बौलन्हि । ओकर व्यापार तहस-नहस करबा देलथिन्ह । हम सब किछु बर्दास्त क' सकैत छी, मुदा धंधामे व्यवधान वा नुकसान बर्दास्त नहि

क' सकैत छी । इएह हमर आकाक ओसूल छन्हि ।

अधिकारी पुछलथिन्ह, "अहाँक आका के छथि ? हुनकर की नाम छन्हि ? ओ कत' रहैत छथि ?"

महुआ कहलकन्हि, "ई गप तँ हमरो नहि बूझल अछि ।"

अधिकारी, ''तखन दीनूकेँ बूझल होयतैक ?"

महुआ, ''नहि, ओकरो नहि बूझल छैक ।''

अधिकारी, "तखन ककरा बूझल छैक ?"

महुआ, ''जँ अहाँ दीनूक संग किछु नहि करियैक, तँ हम बाट देखा सकैत छी । दीनू हमर प्रेमी थिक । हम ओकरासँ प्रेम करैत छी आ ओकरे लेल हम ईहो सब करैत छी ।''

अधिकारी, ''केओ प्रेमी चाहत जे ओकर प्रेमिका ओकरा छोड़ि अन्यत्र...।''

महुआ, ''नहि चाहत, मुदा केवल मध्यम वर्गीय समाजमे, जाहि ठाम एहि तरहक क्रिया-कलापपर प्रतिबंध लागल छैक । एहन क्रिया-कलापपर समाजसँ बहिष्कृत कयल जा सकैत छैक, मुदा उच्चवर्गीय समाजमे एहन गप फैशन बूझल जाइत छैक । तखन ने राति-राति भरि लोक क्लबमे रहैत अछि । निम्नवर्गीय समाजमे तँ ई आम बात छैक । तखन एहिसँ कहिओ काल दीनूकेँ हमरा प्रति कष्ट अवश्य होइत छैक, ओ गारि-फज्झति सेहो दैत अछि, मुदा जकर जी-ठोर बहसि गेलैक तकरा समेटब कठिन छैक । पुनः हम दीनूकेँ बुझा दैत छियैक । दीनूकेँ जत' कोनो काज अड़ि जाइत छैक, तकरा हमहीँ अपना युक्ति आ यौवनक जोरपर सरिआ दैत छियैक । से गप दीनू सेहो बुझैत अछि ।

अधिकारी : ''तोँ तँ पढ़लो-लिखलो नहि छेँ । एतेक गूढ़ गप कोना बुझैत छही ?''

महुआ : ''ज्ञान की स्कूले गेलासँ होइत छैक । हम तँ एकसँ एक पैघ हाकिमक संसर्गमे राति-दिन रहैत छी । हमरासँ किछु चोरायल थोड़हि अछि ।''

अधिकारी : ''ठीक छै, दीनूकेँ किछु नहि कयल जयतैक ।''

महुआ : ''हमरा सभक पछोड़ धयने अहाँकेँ वर्षो लागि जायत, मुदा अहाँ गन्तव्य धरि पहुँचब वा नहि, कहि नहि सकैत छी किएक तँ एहन केओ नहि अछि जे दादा-परदादाक नाम कहत । बेसीसँ बेसी बापक नाम कहि सकैत अछि । सेहो आसानीसँ नहि । कारण ककरो बुझलो नहि छैक । घर-परिवारमे जे बाप-दादाक नाम सिखाओल जाइत छैक से तँ केओ मने नहि रखैत अछि आ एहि धंधामे ककरो नाम लेब वा पूछब अनुचित छैक । एहन स्थितिमे के ककर नाम कहत आ कहबो करत तँ से कतेक सही होयत, कहि नहि सकैत छी । एहि ठाम केवल अपना काजसँ मतलब राखू आ अपन बोइन लिअ' ।''

अधिकारी : ''अपन बोइन लिअ' मतलब...?''

महुआ : मतलब ई जे हम सब जे कमाइत छी से मेट लग जमा क' दैत छियैक । ओहिमे आधा हमर भेल आ आधा हमरा आकाक जे हमरा सभक सुरक्षाक भार उठौने अछि, खोपड़ीक लेल जगहक इन्तिजाम करैत अछि, जे बुलबासँ असमर्थ अछि, तकरा लेल ठेलाक आ एक अलग ठेलाचालकक इन्तिजाम करैत अछि ।''

अधिकारी मनमे सोचैत छथि, ''भीखोमे शोषण । पता नहि ई दुनियाँ कत' जायत ।'' पुनः पुछलथिन्ह, ''हँ जे कह' चाहैत छलेँ, से तँ बीचहिमे रहि गेल । तकरा पूरा कर ।''

महुआ : ''हम तँ कहिए रहल छलहुँ । अहीँने बीचमे बात बदलि देलियैक ।''

अधिकारी : ''ठीक छै बाज ।''

महुआ : हमरा सभक माध्यमे बड़ सीढ़ी चढ़' पड़त आ बहुत कड़ीकेँ जोड़' पड़त । एहिमे बहुत समय सेहो लागत आ ऊपर धरि पहुँचि पायब वा नहि, कहि नहि सकैत छी, किएक तँ बीचमे बहुत खतरा सेहो छैक । अहाँक जानो जा सकैत अछि जेना लालबाबूक संग भेलन्हि ।

अधिकारी कनेक तुनकलाह तँ महुआ कहलकन्हि, "सरकार ! अहाँ

तमसाउ जुनि । अहाँ वा केओ अमृत पीबिक' थोड़हि आयल छियैक । आइ ने काल्हि तँ सब मरबे करतैक । केओ गोटे अपन जीवनक सबटा लक्ष्य पूर्ण नहि क' सकैत अछि । किछु ने किछु बाँकिये रहि जाइत छैक । जँ अहाँकेँ जल्दी आगू बढ़बाक हो तँ पुलिस अधिकारीकेँ पकड़ल जाओ । ओहीसँ भेद खूजत जे ओ के थिक । एहिना लालबाबू दीनूकेँ पकड़बौने छलाह । एस.पी. साहेबकेँ जेबी गरम क' क' दीनूकेँ छोड़बाओल गेल । ओ के व्यक्ति छलैक जे एस.पी. साहेबक जेबी गरम कयलक । ओ अत्यन्त लगक कड़ी भ' सकैत अछि । अहाँ सब हमरा सभक छेद तकैत छी । अहाँक तँ अपनहि शासन-प्रशासनमे छेदे-छेद अछि । तकरा किएक नहि तकैत छी ।"

अधिकारी : ''महुआ, तोरा तँ बहुत किछु बूझल छौक । तोँ एतेक कोना बुझैत छही ?

महुआ : ''हम तँ पहिनहि कहलहुँ जे हम मूर्ख अवश्य छी, मुदा रहलियैक तँ बबुआने सभक संग । कखनहु क' मूर्खो लोकक गप पढ़ल-लिखल लोककेँ चकरा दैत छैक । हमर जे स्टेशनमे छोटा बाबू छथि से एकटा खिस्सा कहैत छथिन्ह, ''हुनके गामक जामुन महतो, अर्जुन महतोक बाँसक बीटसँ पाँचटा बाँस काटि लेलकन्हि । अर्जुन महतो दूरेसँ देखलथिन्ह जे केओ बाँस काटि रहल अछि । ओ हल्ला कयलन्हि आ यावत् नजदीक आबथि, तावत् जामुन महतो एकटा बाँस ल' क' भागि अयलाह । अर्जुन महतो शेष चारू बाँस उठाक' अपना ओहि ठाम ल' गेलाह आ सोचलन्हि जे व्यर्थक रोका-तोकीसँ नीक कानूनीये कारबाइ रहत । ओ थानाकेँ खबरि कयलन्हि आ गामक किछु प्रबुद्ध लोककेँ सेहो बजौलन्हि । दरोगाजी आबि गेलाह आ जाँच शुरू भेल । गामक जे प्रबुद्ध लोक छलाह से सोचलन्हि जे दरोगाजीक कारबाइपर गामक बदनामी भ' सकैत अछि । ओ लोकनि दरोगाजीकेँ कहलथिन्ह, 'सर, ई छोटछीन मामिला छैक, हम सब एकटा पंचायत क' तय क' लेब । अपने किएक कष्ट करैत छी ।'' दरोगाजीकेँ सुझाव नीक लगलन्हि । ओ आपस चल गेलाह । तकर बाद पंचायत शुरू भेल । जामुन महतो बजाओल गेलाह, मुदा ओ आबिये नहि रहल छलाह । हुनकर कनियाँ पुछलथिन्ह, 'किएक नहि जाइत छियैक ?'

जामुन महतो कहलथिन्ह, 'हम कोना जायब । हम तँ दोषी छीहे ।''

हुनक कनियाँ कहलथिन्ह, ''दोषी छी वा दोषी नहि छी से तँ पंचायतक बादे ने तय होयतैक । पहिने कोना बुझि गेलियैक ? अहाँ तँ पुरुष छी । एना कतेक दिन घरमे घुसिआयल रहब । अहाँ पंचायतमे जाउ आ हम जे सिखबैत छी सएह कहबैक ।''

जामुन महतो पंचायतमे गेलाह । हुनका एकटा प्रोफेसर साहेब जे पंचमे छलाह पुछलथिन्ह, ''की अहाँ अर्जुनजीक बाँसक बीटसँ पाँचटा बाँस कटलियैक अछि ?''

जामुन महतो कहलथिन्ह, ''जी, बाँस तँ हम कटलियैक अछि, मुदा अपन हिस्सा...।''

प्रोफेसर साहेब : ''अपन हिस्सा-मतलब ?''

जामुन महतो कहलथिन्ह, ''मतलब जमीन हिनके छियैन्हि, मुदा ओहिमे बाँस हमर बाबूजी लगौने छलाह एहि शर्त्तपर जे आधा हिनकर आ आधा हम्मर । ई शर्त्त हिनका बाबूजी आ हमरा बाबूजीक बीच भेल छलन्हि । ई किछु दिन पूर्व पाँचटा बाँस काटि क' ल' गेलाह । हमरा तखन जरूरति नहि छल । आब जखन जरूरति भेल तँ हमहूँ बाँस काटिक रखलहुँ । एकटा ल' गेलहुँ । शेष चारिटा लेबाक लेल यावत् आबी, ई उठा क' ल' गेल छलाह । पंचैती तँ हम बैसाब' चाहैत छलहुँ, मुदा इएह बैसौलन्हि तँ ईहो हमरे काज कयलन्हि । एहि लेल हिनका धन्यवाद, मुदा ओ चारू बाँस हमरा द' देथि, अन्यथा हम आठटा बाँस काटि लेबन्हि ।''

सब पंच आ अर्जुन महतो अवाक् रहि गेलाह । पंच सब कनफुसकी करब शुरू क' देलन्हि जे किछु तँ अवश्य छैक जे जकरा सब नहि बुझि पाबि रहल छी आ पंचैती अनिर्णीते रहि गेल ।

दोसर दिन प्रोफेसर साहेब जामुन महतोसँ पुछलथिन्ह, ''जामुन भाय, एहन तर्कतँ एतेक पढ़ल-लिखल रहितहुँ हमहूँ सब नहि सोचि सकैत छलहुँ आ अहाँ कोना सोचि लेलियैक । अहाँ तँ एकदम फैसला पलटि देलियैक आ सेहो मूर्ख भ' क' । ई ज्ञान के देलक ?

जामुन महतो कहलथिन्ह, "हमर कनियाँ ।"

अधिकारी : ''वाह ! बहुत सुन्नर खिस्सा कहलह । आब कहह हम जँ एस.पी. लग जायब, तँ ओ गछबे नहि करत । ओकरा पकड़बाक लेल तँ साक्ष्य चाही, गवाह चाही, से कत' सँ आओत ?

महुआ : ''साक्ष्य तँ अहाँ लग अछिये । आब अहाँ देखि नहि रहल छी, तँ हम की करू ?''

अधिकारी : ''हमरा लग... हमरा लग कोन साक्ष्य अछि ?''

महुआ : ''दीनूक जमानत भेलैक की नहि ?''

अधिकारी : ''हँ, से तँ भेलैक ।''

महुआ : ''कोना भेलैक ?''

अधिकारी : ''मतलब...?''

महुआ : ''मतलब जे अहाँक अधिकारी जतेक गाँजा-चरस जप्त कयने छलाह, सबटा दू लाख टाका देखि धानक भुस्सी बनि गेल । ओहि दरोगासँ पुछिऔक, ई कोना भेलैक ?''

अधिकारी : ''वाह महुआ, तोँ त' बड़ काजक लोक छेँ । की तोरा छोड़ि दिऔक ?''

महुआ : ''एहन काज नहि करू । हमरा जँ छोड़ि देब तँ हम मारल जायब । हमरे लोक हमरापर विश्वास नहि करत । ओ हमरा अपन दुश्मन बुझत । हमरा कतौ जहलमे राखि दिअ' आ जेलर साहेबकेँ कहि दिऔन्ह जे हमरा केओ तंग नहि करय आ अपने सौंसे सोर क' दिऔक जे लालबाबूक मामिलामे महुआ पकड़लि गेलि, मुदा ओ मुँह नहि खोलि रहल अछि । उनटे ओएह लालबाबूपर छेड़खानीक आरोप लगा रहल छन्हि । ओ बताहि जकाँ केवल टक-टक देखि रहल अछि । किछु बाजि नहि रहल अछि । पता नहि पुलिसक डरेँ वा अपना आकाक डरेँ ।'' महुआ पुनः कहलक, ''अहाँकेँ जखन जे जानकारी चाही से जेलर साहेबक माध्यमसँ भेटि जायत । दीनूकेँ किछु नहि होयबाक चाही । हमरा जखन केओ जमानत कराओत, हम तखने बाहर जायब ।''

(6)

सुभान भायक गिरोहमे शामिल होयबासँ पूर्व सुजीत नायक अपन पूर्ण तैयारी क' लेने छलाह । रौनकक नामसँ परिचय पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस आदिक संग मुसलमानक किछु आचरण यथा बाजब-भूकब, उठब-बैसब, नमाज पढ़ब सिखि लेने छलाह । तेँ ल' क' हुनका सुभान भायक संग घुलबा-मिलबामे कोनो दिक्कत नहि भेलन्हि । शुरूमे तँ सुभान भाय बड़ कड़ाइ करैत छलथिन्ह, प्राय: ओ हुनक परखबाक कसौटी छल होयतन्हि वा व्यापारिक व्यवस्था, मुदा आब रौनककेँ कतहु अयबा-जयबासँ रोक नहि छलैक । रौनक यदा-कदा सुभान भायक घरपर जाइत छलाह, सेहो अनावश्यक नहि, काजेक मादे । एही क्रममे रौनकक परिचय सुभान भायक छोटकी बेगमसँ भेलन्हि । सुभान भायकेँ दूटा बेगम छलथिन्ह । बड़की जमीला आ छोटकी नूरा । नूरा देखबा-सुनबामे अपूर्व सुन्नरि छलथिन्ह आ तेँ सुभान भायक सिनेह सेहो बेसी नूरे बेगम दिस छलन्हि । ओना जमीला बेगम सेहो ठीके-ठाक छलथिन्ह, मुदा नूरा सनक नहि । कमजोर रंग-रूप आ मुँहपरक गोटीक दाग हुनक सुन्दरताकेँ बिगाड़ि रहल छलन्हि । जमीला बेगमकेँ तीनटा कन्या छलथिन्ह आ नूरा बेगमकेँ एकटा, जिनकर नाम छलन्हि बेबीनूर । बेबीनूर सेहो अद्‌भुत सुन्नरि छलीह । ठीक अपन मायक प्रतिबिम्ब । गोर देह आ पातर-छितर, आँखि पैघ-पैघ, वयस करीब चौदह वर्षक । यद्यपि हुनका देखलासँ हुनकर वयसक अनुमान लगायब कठिन छलैक, मुदा एक दिन गपक क्रममे नूरा बेगम स्वयं रौनककेँ कहने छलथिन्ह । बेबीनूरक दृष्टि नायकपर पड़ल । ओ नायकक गस्सल आ स्वस्थ देह देखि ओकरापर मोहित भ' गेलीह आ एहि विषयमे

अपन माय नूरा बेगमसँ गप कयलन्हि । नूरा बेगम सेहो एकर जनतब सुभान भायकेँ देलथिन्ह । नूरा बेगम नहि चाहैत छलीह जे हमरहि गोदाममे काज कयनिहार हमर नोकर हमरा बेटीक संग निकाह करए । ओ बेबीनूरकेँ बहुत तरहेँ बुझौलथिन्ह । कतेको दृष्टान्त देलथिन्ह, मुदा प्रेमतँ आन्हर होइत अछि । ओ राजा-रंक किछु नहि देखैत अछि । यद्यपि ई प्रेम एकदिसाहु छलैक । रौनक एहि प्रेमसँ बेखबर छलाह । ओ तँ एखन धरि बेबीनूरकेँ देखलहुँ नहि छलाह । एहन स्थितिमे प्रेमक गप कोना सोचितथि ? बेगम नूरा सुभान भायकेँ कहलथिन्ह, ''आब तँ पानि माथक ऊपर भ' गेल । किछु ने किछु करहिटा पड़त ?''

सुभान भाय : ''की करबैक ?''

नूरा बेगम : ''हमरा तँ किछु नहि सुझैत अछि । कतेक बुझौलियैक, मुदा ओ किछु बुझबाक लेल तैयार नहि अछि ।''

सुभान भाय जनैत छलाह जे रौनकक जीवन-स्तर की छैक, मुदा काल्हि घरमे कलह होअय वा कोनो अप्रिय घटना घटय, ताहिसँ नीक जे समय रहैत एकर उचित उपाय कइये लेल जाय ।

सुभान भाय नूरा बेगमकेँ कहलथिन्ह, "रौनक अनाथ अछि । ओकरा माय-बाप केओ नहि छैक । ई अपने गोदाममे कचरा जमा करैत छल । ई तँ हम संयोगवश वा ओकरा गुणसँ प्रभावित भ' अपन ड्राइवर बना लेलियैक । ई अहाँक जमाय बनबाक लेल उपयुक्त रहत ?''

बेगम नूरा कहलथिन्ह," से गप तँ हम बुझिये रहल छियैक, मुदा अहाँक बेटी बुझय, तखन ने । ओ तँ खायब-पीयब सब त्यागि देने अछि ।''

सुभान भाय कहलथिन्ह, "तखन तँ एकेटा उपाय अछि जे रौनककेँ अपने सनक बनाब' पड़त ।"

बेगम नूरा पुछलथिन्ह, "मतलब ?"

सुभान भाय कहलथिन्ह, ''मतलब ई जे ओकरा रहन-सहन पहिरन-ओढ़न, बैसब-उठब सभमे बदलाओ कर' पड़तैक । ओकरा रहबाक

लेल एकटा फ्लैटक इन्तजाम कर' पड़तैक । तखन हमरा समाजक लोक ओकरा चिन्हतैक । नहि तँ कहत 'सुभान भाय कत'सँ उठा अनलन्हि अछि ।' एहिमे किछु समय लगतैक । तावत् जँ बेबीनूर मानि जाय तँ अति उत्तम ।

बेगम नूरा कहलथिन्ह, "जखन एतेक बनाइये देबैक । तखन निकाहसँ परहेज किएक ?"

सुभान भाय कहलथिन्ह, "ई काज जे रौनक क' रहल अछि से कोनो इज्जति-प्रतिष्ठाबला काज नहि छैक आ ठाम-ठाम खतरा सेहो छैक । हम तँ बेबीकेँ एकसँ एक डाक्टर वा इंजिनियर देबाक लेल सोचि रहल छलहुँ । रौनकक गुण आ स्वभाव अवश्य नीक छैक, मुदा अछि तँ जाहिले ।

नूरा बेगम कहलथिन्ह, "अहाँ कतौ ओकरा लेल खराब सोचबैक, मुदा ओ नहि मानत । ओकरा दिमागमे रौनक पैसल छैक । पता नहि ओकरामे की देखलक । तावत् ओकरा किछु आश्वासन तँ द' दियौक जाहिसँ ओ खायब-पीअब शुरू करय ।"

सुभान भाय : ''आश्वासन ककरा चाही, अहाँकेँ वा बेबी केँ ?''

बेगम नूरा : ''ओकरे ने आश्वासन चाही ।''

सुभान भाय : ''से तँ अहाँ ने देबैक । हम तँ अहाँकेँ द' सकैत छी ।''

बेगमनूरा : ''ठीक छै, एके बात भेलैक ।''

सुभान भाय : ''आश्वासन तँ द' देलहुँ, मुदा निकाहसँ पहिने रौनकसँ कोनो गप-सप नहि होयबाक चाही ?"

बेगम नूरा : "ओ सेहो नहि मानत । ओकर आकर्षणक परिधि बहुत आगू बढ़ि गेल छैक ।"

सुभान भाय : "की रौनकक सेहो झुकाओ छैक ?"

बेगम नूरा : नहि, रौनकक कोनो क्रिया-कलाप हमरा तेहन नहि बुझाइत अछि । ओ मुड़ी गोतने मात्र हँ...हू...मे उत्तर दैत छैक । आँखि उठाक' देखितो नहि छैक ।

सुभान भाय सोचलन्हि, एकर एकेटा उपाय भ' सकैत अछि जे रौनककेँ बाटसँ हटा दी, मुदा एहिमे ओकर तँ कोनो गलती नहि छैक । ओकरा अकारण दण्डित करब उचित होयत ? कदाचित् जँ योजना असफल भ' जाय तँ ओ प्रबल विरोधी बनि सकैत अछि आ ओकरा एतेक जानकारी भ' गेल छैक जे हमरा आ हमरा कारोबारकेँ बर्बाद करबाक लेल पर्याप्त होयतैक । उचित इएह होयत जे दुनूक निकाहक स्वीकृत द' देल जाय । ओना रौनकक इच्छा बुझब आवश्यक छलैक, मुदा ओकरा तँ जएह कहबै, सएह करत । ओ नूरा बेगमकेँ कहलथिन्ह, "ठीक छै, बेबीनूर रौनकसँ केवल अपना घरेमे गप-सप करथि । बाहर बाजार वा सिनेमा हाँलमे खास पर्दाक ख्याल राखथि ।"

नूरा बेगम कहलथिन्ह, "हँ एतेक भ' सकैत अछि ।"

सुभान भाय कहलथिन्ह, "बेबी नूर तँ सबसँ छोट छथि । हुनकासँ पैघ तीनू बहिनिक निकाहक बादे हुनकर निकाह होयतन्हि । तावत् प्रतीक्षा कर' पड़तन्हि ।"

नूरा बेगम कहलथिन्ह, "हमहूँ कहाँ कहि रहल छी जे आइये, तीनूक बादे करब । एतेक तँ मानबेक चाहियनि । तावत् हमरा सभकेँ रौनकक इच्छा बुझ' दिअ' । हुनकासँ सम्पर्क बढ़ाब' दिअ' ।"

सुभान भाय विचार कयलन्हि जे नूरा बेगमक सलाह उचित अछि । हमरा कारोबारक नीक जानकारी रौनककेँ भ' गेल छैक । ओ हमर कारोबार नीक जकाँ सम्हारि सकैत अछि । हमरा एकटा उत्तराधिकारीयो ने चाही । ताहि लेल रौनकसँ बढ़ि दोसर केओ नहि भ' सकैत अछि । ई गप आइ धरि हमरा दिमागमे किएक नहि आयल । आइ नूरा बेगम हमरा आँखिक पट्टी हटा देलन्हि । तेँ ने स्त्रीगणकेँ जननी सेहो कहल गेलैक अछि आ प्रकृति सेहो । प्रकृतिक बिना पुरुष अपूर्ण मानल गेल अछि । स्त्रीहीन देवता सेहो शक्तिहीन होइत छथि आ स्त्रीयुक्त शक्तिशाली ।

एक दिन सुभान भाय रौनकसँ पुछलथिन्ह, "रौनकजी ! अहाँक गाम कत' अछि आ अहाँक वालिद के छथि ?''

ओना तँ गोदामसँ हटलाक बाद सुभान भाय एहीना सबसँ मित्रवत् गप-सप करैत छलाह, मुदा आइ धरि कहिओ नायककेँ रौनक छोड़ि रौनकजी नहि कहने होयथिन्ह । ई अतिशय प्रेम नायकक मनमे संदेह उत्पन्न क' देलकनि । ओ सम्हरि गेलाह आ कहलथिन्ह, "सुभान भाय ! हम तँ कतेक दिन अहाँकेँ कहलहुँ । हम तँ अहीँक गोदामक लेल कचरा बिछैत छलहुँ आ एकटा कचरा बिछनाहरक गाम कत' आ वालिद के भ' सकैत अछि ? हमरा अपन गाम आ वालिदक विषयमे किछु नहि बूझल अछि । जखन होश सम्हारलहुँ तँ अपना-आपकेँ खालाक कोड़मे पओलहुँ । हम तँ ओकरे अपन माय वा वालिद बुझैत छलहुँ । ओ मिर्जापुरमे रहैत छलीह । ओहो हमरा एहि विषयमे किछु जनतब नहि देलन्हि । हुनका गुजरलाक बाद विदित भेल जे ओ हमर माय नहि, मायक बहिन छलीह । हुनक स्नेहक शीतलतासँ कहिओ हमरा सत्यक आभास नहि भेल । खालाक नहि रहने हमर दिन-चर्या बदलि गेल । हम अबारा कुत्ता जकाँ एम्हर-ओम्हर बौआय-टौआय लगलहुँ । हँ, कहुनाक' गाड़ी चलायब अवश्य सीखि लेलहुँ जाहिसँ भुखमरीक समस्यासँ उबरि सकी । रोजगार तकबाक क्रममे जखन आजमगढ़ अयलहुँ, तँ राजू भेटि गेल । राजूक विवाह मिर्जेपुर थिकैक । ओ कहलक जे कोनो ड्राइवरक विषयमे हमरा नहि बूझल अछि, मुदा लोक सब पुछारि करैत रहैत छैक । तखन यावत् ड्राइवरीक काज नहि होइत अछि, तावत् कचराक कारबार क' सकैत छी ।

हम कहलियन्हि, "राजू भाय ! कारोबार आ हम ? हम तँ काल्हि की खायब से सोचि रहल छी आ कोनो कारोबारमे तँ पूजीक आवश्यकता होइत छैक, से कत'सँ लायब ?''

राजू भाय हँस' लगलाह आ कहलन्हि, "हमरा कहबाक अभिप्राय से नहि छल । जँ अहाँ कचरा बीछिक' जमा करी तँ हम ओकरा बेचबाक जोगाड़ क' देब । हमरा मालिककेँ कचराक गोदाम छन्हि । ओहिसँ हजारो गोटे अपन जीविका चला रहल छथि । शनि आ रविक' ओ कचरा ट्रकमे भरिक' बाहर पठाओल जाइत छैक ।"

हम सोचलहुँ, काज तँ काज होइत छैक आ पेट भरबाक लेल तँ

काज करब आवश्यके छैक । ओना कतोक गोटे भीखो माँगि अपन गुजर क' लैत छथि, मुदा से वृत्ति हमरा पसिन्न नहि । एखन भगवान हाथ-पयर देने छथि आ तंदुरुस्त सेहो छी । जे काज भेटत, से करब । कोनो काजकेँ वा काज केनिहारकेँ हेय दृष्टिसँ नहि देखबाक चाही । एक गोटे हमरे गामसँ भागिक' कलकत्ता गेलाह । हुनकर नाम छलन्हि भोलू । भोलू गरीब घरक छलाह आ बेसी पढ़लो-लिखल नहि छलाह । विवाह-दान भ' गेल छलन्हि, मुदा अपेक्षित राशन-पानिक जोगाड़ करबामे विफल रहैत छलाह । सदिखन दुनू प्राणीमे ठनले रहैत छलन्हि । कनियाँ हुनका उपार्जन करबाक लेल जोर दैत छलथिन्ह, मुदा भोलू अहदी भ' गेल छलाह । एक दिन भोलूकेँ हुनक कनियाँ कहलथिन, 'जँ अहाँ बाहर नहि जायब तँ हम नैहर चल जायब आ कहिओ घुरिक' नहि आयब ।' अंततः भोलूकेँ गामसँ भाग' पड़लनि आ ओ कलकत्ता चल गेलाह । ओहि ठाम भोलूकेँ तुरंत कोनो काज नहि भेटलनि । गामसँ जे किछु ल' क' गेल छलाह, सब खतम भ' गेलनि । ओ भूखल-प्यासल नोकरीक खोजमे एम्हर-ओम्हर बौआ-टौआ रहल छलाह । रोडक कातमे बैसल एकटा महात्मासँ भोलूक भेट भेलनि । ओ महात्मा हस्तरेखा विशेषज्ञ छलाह । ओ लोकक हाथ देखि भूत, भविष्य, वर्त्तमान कहैत छलथिन्ह । भोलू सेहो सहटिक' महात्माक बगलमे बैसि गेल । ओ महात्मा सभसँ पाँच टाका लैत छलथिन्ह, तखन ओकरा विषयमे सब किछु कहैत छलथिन्ह । भोलूक संगमे पाँचटा पाइयो नहि छलनि । जखन सब केओ चल गेल, तखन महात्माक नजरि भोलूपर पड़लन्हि । ओ पुछलथिन्ह, ''की बौआ । तोँ किएक बैसल छह ?"

भोलू बजलाह, ''बाबा ! हमरो बुझबाक छल जे कतहु नोकरी भेटत वा नहि ? मुदा...।''

महात्मा बुझि गेलाह जे एकरा संगमे टाका नहि छैक । ओ हाथ देखि भोलूकेँ कहलथिन्ह, ''तोरा हाथक रेखा कहि रहल अछि जे तोँ नोकर रखबह, मुदा ताहिमे किछु दिनक समय लगतह । तावत् तोरा जे कोनो काज भेटतह, से बिना कोनो झिझककेँ भगवानक आशीर्वाद बूझि करिह' । भ' सकैत अछि, ओहीसँ तोरा भाग्यक पट खुजि जाओ । काज अधलाहो

भ' सकैत छैक जे तोरा पसिन्न नहि होअ', मुदा संकोच नहि करिह' ।

दू दिनक बाद भोरे-भोरे भोलू कतहु जा रहल छलाह । एक गोटे बजौलथिन्ह, "औ भाय साहेब, कनेक एम्हर आउ ।"

भोलूक वेश-भूषा सेहो कोनो भंगीसँ कम नहि लगैत छलनि । मैल चिकाठि धोती, सेहो ठेहुन धरि आ ऊपरसँ कारी खट-खट गंजी, सेहो कतेको ठामसँ चहकल । जकरा पेटक ज्वाला नहि शान्त होयतैक, से बगयक की चिंता करत । भोलू ओहि ठाम पहुँचल, तँ ओ कहलथिन्ह, "हमर कुकुर मरि गेल अछि । से जँ अहाँ फेकि दियैक, तँ हम अहाँकेँ दू सय टाका द' सकैत छी ।" पहिने तँ भोलू कुकुरक नामे सुनिक' सकपकयलाह । पुनः महात्माजीक वचन मन पड़ितहि ओ तैयार भ' गेलाह आ सोचलन्हि, 'ई अपना मनसँ दू सय टाका कहैत अछि । भ' सकैत छैक जे एहि काजक मजदूरी बेसी होइक ।'

ओ कहलथिन्ह, "श्रीमान् ! हम कुकुरकेँ फेकि तँ देब, मुदा दू सय टाकामे नहि ।"

ओ व्यक्ति पुछलक, ''तखन कतेक लेबहक ?''

ओहो व्यक्ति बुझैत छलैक जे दू सय टाका कम भेलैक । कलकत्ताक हिसाबसँ ओकर मजदूरी चारि-पाँच सय टाका होयबाक चाही, मुदा से जँ पहिने कहि दितैक, तँ मोल-भावमे आर बढ़ि सकैत छलैक । तेँ ओ दू सय कहने छलैक ।

भोलू कहलथिन, "पाँच सय टाकासँ कम नहि लागत । एखनहि हम पाँच-पाँच सय टाकामे दूटा फेकि आयल छी । रहैत-रहैत आ देखैत-सुनैत हुनका शहरक हवा लागि गेल छलनि । कनेक काल दुनू गोटेमे घमर्थन भेलनि आ चारि सय टाकामे भोलू ओहि कुकुरकेँ फेकबाक लेल तैयार भ' गेलाह । ओ महात्माजीकेँ मनेमन धन्यवाद कयलनि । हुनके प्रेरणासँ भोलूकेँ चारि सय टाकाक कमाइ भेल छलनि । ई कोनो गाम नहि थिकैक, जे लोक हँसतैक । एहि ठाम ककरा के चिन्हैत छैक ? ओना तँ एहन महात्मा अपन धंधा चलयबाक लेल झूठ-मूठ ककरो किछु कहि दैत छैक, मुदा भोलूक संग भोजनक समस्या छलनि । ओ गाम

आपस नहि जा सकैत छलाह । कोनो ने कोनो काज करब हुनक मजबूरी छलनि, से गप महात्मा बुझि गेलाह । जेना कि भोलू स्वयं कहने छलन्हि, ओ भविष्यक आशा देखाक' कोनो ने कोनो काज करबाक लेल प्रेरित कयने छलथिन्ह आ भोलू ओहि महात्माकेँ दक्षिणो नहि द' पओलनि ।

भोलू गृहस्वामीसँ चारि सय टाका आ एकटा डोरी लेलनि । ओ टाकाकेँ डाँड़मे खोँसैत कुकुरक टाङ्गमे डोरी बान्हि, ओकरा घीचिक' ल' जा रहल छलाह । भोरुक पहर छलैक । बाजारमे लोकक आबाजाही सेहो कम छलैक । बाट एकदम सुनसान छलैक । आगू बाटक कातमे एकटा झाड़ी छलैक जाहिमे ओहि कुकुरकेँ फेकबाक लेल भोलू सोचि रहल छलाह । तावत् ओकर डोरी टुटि गेलैक । भोलू पुनः डोरी बान्हि ओकरा घिचबाक प्रयास कयलनि, मुदा कुकुर नहि घिचायल । भोलू कुकुरक लगमे गेलाह आ ध्यानसँ देखलनि । कुकुरक टाङ्ग कोनो वस्तुमे फँसल छलैक । ओ कोनो चमकवला पाथर छलैक । भोलू ओहि पाथरकेँ माटिसँ निकालि अपना डाँड़मे खोँसि लेलनि आ कुकुरकेँ ओहि झाड़ीमे फेकि स्नान-भोजन क' एकटा सोनारक दोकानपर गेलाह । सोनार कहलकनि, ''ई तँ हीरा थिक । एकर दाम दू लाख टाका भ' सकैत अछि ।"

भोलू कहलथिन, ''हमरा तँ तीन लाख टाकाक आवश्यकता अछि । हम ओहिसँ कममे नहि बेचब ।" भोलूकेँ बूझल छलैक जे हीरा बेशकीमती पाथर होइत छैक । एकर उपयोग करोड़पतिये लोक सब करैत छथि, मुदा भोलू लग ओकर कोन उपयोग । जकरा पेटमे अन्न नहि, देहपर वस्त्र नहि आ रहबाक लेल कोनो ठौर नहि, से जँ हीराक औंठी पहिरिक' बहरायत, तँ लोक ओकरा चोरे-उचक्का ने बुझतैक । मोल-भाव करैत ओ सोनार भोलूकेँ अढ़ाइ लाख टाका देलकनि आ भोलू ओहि टाकासँ एकटा किरानाक दोकान खोलि लेलनि । आइ भोलूक ओहि ठाम एकटा के कहए चारि-चारिटा नोकर छनि । आइ कुकुरे घिचलासँ भोलूक भाग्योदय भेलनि । तेँ कोनो काज वा ओ काज कयनिहारसँ घृणा नहि करबाक चाही आ ने ओकरा हेय दृष्टिसँ देखबाक चाही । एहि विषयपर एकटा आर घटना उल्लेखनीय अछि । एकटा विद्यार्थी छलाह नीलाम्बरजी । ओ

वर्गमे प्रथम अबैत छलाह । बी.ए. पास कयलाक बाद हुनका लिपिकक पदपर नियुक्तिक लेल अवसर भेटलन्हि । ओ ओहि अवसरकेँ ठोकरा देलन्हि, ई कहैत जे 'हम एहन छोट-छीन काज नहि करब । हम कोनो पैघ अधिकारी बनब ।' ओना हुनकर सोच अनुचित नहि छलन्हि, मुदा हुनकर उत्तर अनुचित छलन्हि । ओ अहंकारवश लिपिकक पदकेँ तुच्छ वा हीन बुझलन्हि, से उचित नहि । लोककेँ नीक सपना अवश्य देखबाक चाही । ताहि आधारपर ओकरा प्राप्त करबाक लेल सोचबाक चाही । ओ ईहो कहि सकैत छलथिन्ह जे हम एखन नोकरी नहि करब । एखन हमरा आर पढ़बाक अछि । हुनका कोनो काजकेँ हीन भावनासँ नहि देखबाक चाहियनि । ओहो तँ मनुक्खे छलाह । परिणाम भेलन्हि जे नीलाम्बरजीकेँ कोनो नोकरी नहि भेटलन्हि आ जखन नोकरीक वयस खतम भ' गेलन्हि, तँ ग्रामीण पोस्टमास्टरक लेल एक लाख टाका घूसो देब स्वीकार कयलन्हि आ सेहो नहि भेलन्हि । सभटा प्रयास आ पैरवी बेकार भ' गेलन्हि । उपरोक्त गपकेँ ध्यानमे राखि हम कचराक काज शुरू कयल । तकर बादक तँ सभ गप अहाँकेँ बुझले अछि ।"

सुभान भाय गपकेँ घुमाक' कहलथिन्ह, "रौनकजी ! अहाँ तँ जनैत छी जे हमरा बालक नहि अछि आ ताहि लेल हमरा कोनो चिन्तो नहि अछि । हम एही लेल दोसर निकाह कयल । ओना अपना समाजमे बहुविवाह प्रचलित अछि । लोक कतेको निकाह करैत छथि । पुत्र रहितो आ पुत्र नहि रहने तँ सहजहि, मुदा हमरा ओ पसिन्न नहि । हम एहि प्रचलनक विरोध नहि करैत छी किएक तँ ई हमरा सभक धार्मिक भावनासँ जुड़ल अछि, मुदा एक व्यक्तिक रूपमे हमरा ई उचित नहि बुझाइत अछि । हम दोसर जे निकाह कयल से अपना इच्छासँ नहि, जमीला बेगमक दबाबसँ । खैर...जे...से...। बालक नीक होअय वा अधलाह, सम्पत्तिक अधिकारी ओएह होयत । जँ नीक भेल, तखन तँ कोनो गपे नहि आ जँ अधलाह भेल तँ सभ कयल-धयल पानिमे चल जायत आ बाप-दादाक नाम सेहो बूड़त । तेँ जँ पूत नहि अछि तँ हम अपन उत्तराधिकारी चयनक लेल स्वतंत्र छी । हम एहि विषयमे कतेको गोटेसँ गप कयल अछि । ओहि चिट्ठामे एकटा अहूँ थिकहुँ । तेँ अहाँसँ हम एतेक गप कयल । एकरा

अन्यथा नहि मानब । हम अहाँक उत्तरसँ एकदम संतुष्ट छी । अहाँ आइ रातिक भोजन हमरे ओहि ठाम करी से हमर आग्रह अछि ।"

नायक कहलथिन्ह, "सुभान भाय । हम अहाँक आग्रह नहि मानब ?"

सुभान भाय कनेक उत्तेजित सन भेलाह । ओ नहि सुनबाक आदी नहि छलाह । पुनः अपनाकेँ संयमित करैत पुछलथिन्ह, "से किएक ?"

नायक कहलथिन्ह, "हम तँ केवल अहाँक आदेशक अनुचर छी । तेँ ईहो आदेशे बुझि मानि लेब, आग्रह नहि ।" दुनू गोटे भभाक' हँस' लगलाह ।

सुभान भायक दलमे नायकक ट्रेनिंग खतम भ' गेल छलन्हि । ओ दू नम्बरक ओहदापर आबि गेल छलाह । हुनका आब कार्यक्षेत्रमे रुस्तम भायक कोनो आवश्यकता नहि छलन्हि । मात्र औपचारिकतावश सलाह-विचार होइत छलन्हि । ओहो आब सीधे सुभान भायक अधीनस्थ छलाह । दू नम्बर विभागक मतलब भेल, कारोबारक समस्त अर्थव्यवस्थाक देख-रेख करब । कत'सँ कतेक धनराशि अबैत अछि आ कत' कतेक खर्च होइत छैक । सम्बन्धित प्रशासनिक अधिकारीसँ संम्पर्क राखब आ ससमय यथोचित कमीशन पहुँचायब । ताहि सूचीमे प्रायः जिलाधिकारी आ आरक्षी अधीक्षक सेहो होइत छलाह । ओएह अपना अधीनस्थ अधिकारीकेँ विषय-वस्तुसँ सम्बन्धित निर्देश दैत छलाह । किछु अपवादो छलाह जे एहि सूचीमे नहि छलाह आ ताहि ठाम सुभान भायक कारोबार मंद छलन्हि । नायक विभागसँ सम्पर्क क' ओहि अधिकारी सभकेँ सेहो अपना सूचीमे अनलन्हि आ हुनका कहलथिन्ह जे अहाँ लोकनि चिंता नहि करू । अहाँ सरकारकेँ मदति क' रहल छियैक ।"

एकटा अधिकारी कहलथिन्ह, "हम एहन गलत काज किएक करब । घूस लेब आ जँ पकड़ायब तँ सजायक संग बदनामी सेहो होयत ।"

निगरानी महानिदेशक कहलथिन्ह, "अहाँकेँ हम चिट्ठी दैत छी । अहाँकेँ किछु नहि होयत । अहाँकेँ बूझल अछि जे घूस देनिहार आ लेनिहार दुनू समान रूपसँ दोषी मानल जाइत छैक ?"

ओ अधिकारी कहलथिन्ह, "जी...।"

महानिदेशक कहलथिन्ह, "मुदा जखन निगरानी विभाग नोटपर रंग लगा दैत छैक वा दस्तखत क' दैत छैक, तँ केवल लेनिहारे पकड़ाइत अछि, देनिहार नहि, किएक तँ देनिहारक संग मजबूरी रहैत छैक । एहि ठाम लेनिहारक संग मजबूरी छैक । ओकरा सरकारक आदेश छैक । सरकार ई देख' चाहैत अछि जे घूस देनिहार ओकरासँ कतेक गलत काज करा रहल छैक आ ओ के थिक ।

ओ अधिकारी पुछलथिन्ह, "एहि लेल हमरा की कर' पड़त ?"

महानिदेशक कहलथिन्ह, "एहि लेल अहाँकेँ आजमगढ़क जिलाधिकारीसँ सम्पर्क क' सब गप बूझ' पड़त । एतेक गप फोनपर कहब उचित नहि । अहाँकेँ जे कमीशन भेटत, तकरा अहाँ जँ चाही तँ पुरस्कार बुझि राखि सकैत छी वा निगरानी विभागक खातामे जमा क' सकैत छी । अहाँकेँ ओकरा गतिविधिमे ढिलाइ दैत, ओकर सब गतिविधिकेँ कैमरामे कैद करैत विभागकेँ सूचित करबाक अछि । एकरा आदेश नहि, आग्रह बूझल जाय । ओ अधिकारी तहिना कर' लगलाह । एहि तरहेँ एकाधकेँ छोड़ि सब अधिकारी सुभान भायक गिरोहसँ सहानुभूति रखनिहारक सूचीमे आबि गेलाह आ एहिसँ हुनका सभक आमदनी सेहो खूब बढ़ि गेलन्हि । एकर श्रेय रौनककेँ भेटलनि । सुभान भाय रौनकक एहि काजसँ बड़ प्रभावित भेलाह आ रौनक सुभान भायक लेल नम्बर एक बनि गेलाह । तथापि विषय अर्थसँ जुड़ल रहबाक कारणे कम्पनीमे नम्बर दूएसँ विख्यात रहलाह किएक तँ अर्थवृद्धिमे ई सबसँ उपयुक्त साबित भेलाह । जे काज स्वयं सुभान भाय नहि क' सकलाह से रौनक क' क' देखा देलथिन्ह । उपयुक्त लोक नहि भेटबाक कारणे नम्बर दूक काज स्वयं सुभान भाय देखैत छलाह, मुदा आब वयस बेसी भ' गेलाक कारणे आ ताहिपर रौनकक चतुराइसँ प्रभावित भ' ई भार ओ रौनकेकेँ द' देलथिन्ह । तेँ सुभान भाय बेगम नूराक गप मानबाक लेल तैयार भेलाह । रौनककेँ ओ कोनो स्थितिमे अपनासँ दूर नहि राख' चाहैत छलाह । हुनको बेगम नूराक प्रस्ताव उचित बुझना गेलन्हि आ विचारलनि जे ई रहस्य एकटा उचित अवसर अयलापर प्रकट करताह ।

संध्याकाल नायक सुभान भायक ओहि ठाम पहुँचलाह आ केवाड़ खटखटौलथिन्ह । भीतरसँ आवाज आयल, "के थिकहुँ ?"

नायक उत्तर देलथिन्ह, "हम रौनक थिकहुँ, भाय ।"

सुभान भाय कहलथिन्ह, "भितरे आबि जाउ ।"

केवाड़ तँ खुजले छलैक । मात्र एकटा चमचमौआ पर्दा लटकल छलैक । नायक औपचारिकतावश केवाड़ खटखटौने छलाह । सुभान भायक आवाजपर ओ पर्दा उठाक' भीतर गेलाह आ कोठलीक सजावटि देखि दंग रहि गेलाह । पहिल बेर ओ भीतर प्रवेश कयने छलाह । एहिसँ पूर्व सेहो ओहि ठाम कतेको बेर गेल छलाह । खासक' ड्राइवरीक समयमे तँ नित्य जाइत छलाह । घंटो सुभान भायसँ गप-सप होइत छलन्हि, मुदा दलानेपर । भीतर जयबाक अवसर नहि भेटल छलन्हि आ ने सुभाने भाय कहिओ कहने छलथिन्ह । तकर एकटा ईहो कारण भ' सकैत छलैक जे मुसलमानमे पर्दाक विशेष ख्याल राख' पड़ैत छैक आ दोसर कारण ई जे सुभान भायक घर बाहरसँ किछु आर छलन्हि आ भीतरसँ किछु आर । ओ नहि चाहैत छलाह जे ई रहस्य सबकेँ विदित होअय, मुदा रौनक तँ आब हुनके बनि रहल छलाह, तँ हुनकासँ आब की पर्दा आ परहेज ।

कोठलीमे चारिटा कुर्सीक अलावा, एकटा टेबुल लागल छलैक जकर उपयोग सम्भवत: भोजनेक समयमे होइत छलैक । बीचवला कुर्सीपर सुभानभाय आ दुनू कातबलापर दुनू बेगम बैसल छलथिन्ह । पहिने तँ नायक भीतर जयबामे सकपकयलाह, मुदा सुभान भायक आग्रहपर भीतर गेलाह आ सुभान भायक संग दुनू बेगमकेँ सेहो अस्सलाम वालेकुम कयलथिन्ह । ओम्हरसँ सेहो प्रत्युत्तरमे वालेकुम अस्लाम भेटलन्हि । संगहि रौनककेँ खाली कुर्सीपर बैसबाक इशारा कयल गेलनि । रौनकक शिष्टाचार देखि दुनू बेगम अति प्रसन्न छलीह । ओना तँ रौनकक स्वभाव आ व्यवहारपर दुनू बेगम हुनका अपन जमाय बना सकैत छलथिन्ह, मुदा जमीला बेगमक बेटीक वयस रौनकसँ बेसी छलन्हि, तेँ बड़की बेगमकेँ कोनो आपत्ति नहि भेलन्हि आ ने ईर्ष्या । सभ गोटेक बीच बहुत तरहक गप-सप भेलन्हि, मुदा एकहु बेर कारोबारक विषयमे कोनो चर्चा नहि

भेलैक । सम्भवतः हुनक कारोबारक विस्तृत जानकारी हुनका घरो-परिवारक लोककेँ नहि छलन्हि । ओ सब मात्र कचराक गोदामक विषयमे जनैत छलथिन्ह जे पैतृक छलन्हि । रौनक सेहो बहुत सतर्क छलाह । आखिर निगरानीक चतुर-चालाक कर्मीमे हुनकर गनती होइत छलन्हि । गपक क्रममे रौनक देवालपरक फोटो सब बहुत गौरसँ देखि रहल छलाह । अधिकांश फोटो पीर-पैगम्बरक आ किछु फोटो सुभान भायक पूर्व आ वर्त्तमान परिवारक । ओहि कोठलीमे विशेष प्रकारक शीशा लागल छलैक जाहिसँ दलानक पूर्ण परिदृश्य परिलक्षित भ' रहल छलैक । तथापि दलानपरसँ किछु देखबामे नहि अबैत छलैक । सम्भवतः ई व्यवस्था महिलाक लेल कयल गेल छलैक जाहिसँ ओ पर्दामे रहैत बाहरक सभ गतिविधिपर नजरि राखथि । रौनक अनुभव कयलन्हि जे केओ गोटे दोसर कोठलीसँ हुलकी मारि हुनका देखबाक प्रयास क' रहल छन्हि आ हुनक मूड़ी उठबितहि अढ़ भ' जाइत अछि । ओएह बेबी नूर छलीह । हुनक रूप आ यौवनपर केओ मोहित भ' सकैत छल । हुनक वयस मात्र चौदह वा पन्द्रह वर्षक होइतन्हि, मुदा देखबा-सुनबामे ओ अठारहसँ कम नहि लगैत छलीह । एकदम मद-मस्त सनक छलीह । किएक नहि रहितथि ? आखिर सुभान भायक छोटकी संतान छलीह । हुनका ओहि ठाम कोन वस्तुक अभाव छलैक जे देहक विकासमे बाधक होइत । छोट होयबाक कारणे सभक प्रेम आ स्नेह भेटिते छलन्हि । सुभान भायक ओहि ठाम रौनकक खूब स्वागत भेलन्हि । बुझू तँ जमाइये जकाँ दुनू बेगम खूब आग्रह क' क' भोजन करौलथिन्ह । भोजनोपरान्त रौनककेँ एहि आग्रहक संग विदा कयल गेलन्हि जे एकरा अपनहि घर बुझथि आ जखन इच्छा होन्हि अबैत-जाइत रहथि, मुदा नायककेँ तँ कोनो लोभ नहि छलन्हि सिवाय एकर जे सम्पर्क बढ़ने कोनो ने कोनो भेदक जानकारी भेटि सकतन्हि ।

किछु दिनक बाद तँ नायक सुभान भायक परिवारमे ततेक ने घुलि-मिलि गेलाह जे हाट-बजार जे किछु हो बिना रौनकजीक नहि होइत छल । ओना ड्राइवरक रूपमे नायक गाड़ी ल' क' हाट-बजार पहिनहुँ जाइत छलाह, मुदा तखन ओ गाड़ीमे बैसल रहैत छलाह । सुभान भायक

संग बेगम आ धिया-पूता कीनैत-बेसाहैत छलथिन्ह, मुदा आब हुनका लोकनिक संग मात्र रौनक जाइत छथि अथवा रौनके सब काज करैत छथि । हुनके पसिन्न कयल वस्तु कीनल जाइत छैक । एतेक भेलाक बादो नायक जाहि उद्देश्यसँ सुभान भायक घरमे पैसल छलाह, से अपूर्णे रहि गेलन्हि । व्यापार सम्बन्धी कोनो तरहक गप नहि खूजल । सम्भवतः ई सुभान भायक गोपनीयताक प्रभाव छलैक । कचरा गोदाम छोड़ि ककरो कोनो जानकारी नहि छलैक ।

एक दिन गपक क्रममे छोटकी बेगम नूरा रौनकसँ बेबीनूरक संग निकाह करबाक विषयमे पुछलथिन्ह । रौनककेँ कोनो आश्चर्य नहि भेलन्हि । ओ तँ सुभान भायक आतिथ्य आ व्यवहारेसँ बुझि गेलाह जे किछु नव सम्बन्धक विषयमे गप अवश्य छैक अन्यथा हमरा सोझाँ दुनू बेगम किएक अबितथि । हुनका पोटबाक किछु तँ मतलब अवश्य होयतनि, मुदा एतेक नहि बूझल छलन्हि जे ओ बेबीनूरे थिकीह जिनका लेल एतेक ओरिआओन भ' रहल अछि, मुदा नायक एहि जालमे फँस' नहि चाहैत छलाह । ओ तँ मात्र नोकरीक विवशता छलन्हि जे ओ एकरा नकारियो नहि सकैत छलाह । नायक स्वयं विवाहित छलाह आ कनियाँ मुख्यालयमे छलथिन्ह । जखन ओ कोनो बहन्ने मुख्यालय जाइत छलाह तँ अपनहि डेरापर ठहरैत छलाह । ओ अपन मीशनकेँ ध्यानमे राखि कहलथिन्ह, ''बेबीनूर तँ सबसँ छोट छथि । हुनकासँ पैघ जे तीनटा बहिन छथिन्ह, पहिने तनिकर निकाह होयतन्हि, तखन ने बेबीनूरक नम्बर अओतन्हि । एतेक पहिने ई सब गप-सप उचित नहि बुझाइत अछि । तखन हमर मालिक बुझू, आश्रयदाता बुझू वा अभिभावक बुझू, सब किछु तँ सुभाने भाय छथि । हम हुनका नहि कोना कहबनि ? अपना भगवानकेँ केओ रुष्ट नहि कर' चाहैत अछि । हम तँ अनाथ बौआ-टौआ रहल छलहुँ । हमरा ई नवजीवन तँ हुनके देल अछि ।''

(7)

सुभान भाय अपन सबटा काज रौनकके॑ समर्पित क' चुकल छलाह, मुदा राजनीति आ राजनीतिज्ञसँ भेट-घाँट करब अपनहि लग रखने छलाह । ओ बुझैत छलाह जे कतबहु सज्जन आ सीधा लोक एक बेरि जँ एम.एल.ए. वा एम.पी. बनि जाइत अछि, तँ ओ अकाशेसँ गप करैत अछि । ओकर दाँव-पेंच बढ़ि जाइत छैक आ रौनक एखन ओतेक परिपक्व नहि भेल छथि । ओ ककरो ऊपर चढ़ा सकैत छलाह तँ ककरो नीचाँ सेहो खसा सकैत छलाह । हुनका लग धनबल आ जनबल दुनू छलन्हि ।

एक दिनक गप अछि । तत्कालीन विधायक माननीय श्रीरामलालजी सुभान भायक ओहि ठाम अयलाह । हुनका चुनाव लड़बाक लेल चंदा चाहैत छलनि । ओ सुभान भायसँ दू लाख टाकाक याचना कयलन्हि । सुभान भाय ओतेक टाका देबामे असमर्थता व्यक्त करैत स्वेच्छासँ एक लाख टाका देबाक वचन देलथिन्ह । विधायकजी भड़कि उठलाह आ सुभान भायक कारोबारके॑ सी.बी.आइ. सँ जाँच करयबाक धमकी द' देलथिन्ह । सुभान भाय सोचि लेलन्हि जे एहि बेर एकरा अवश्य खसायब अन्यथा ई बहुत अनर्गल करत । ओ व्यवहारमे जतेक कोमल छलाह, कारबाइमे ओतबहि कठोर । ओ विकल्पक खोजमे लागि गेलाह ।

किछु दिनक बाद एक गोटे भेटलन्हि जे काफी हट्टा-कट्टा आ शैतानीसँ भरपूर छल । गाम-घरमे ओकरासँ सब केओ परेशान रहैत छलैक । ओ जकरा जे किछु कहैत छलैक, से करब वा मानब ओकर बाध्यता छलैक । कतेको बेरि पिटायल सेहो छलैक आ लोकक उलहनपर

कतेको बेर ओकरा पुलिस पकड़ि क' ल' गेल छलैक । दू-चारि दिन राखि डाँटि-डपटिक' वा किछु टाका ल' क' पुनः छोड़ि दैत छलैक । एक तरहे॑ ओ इलाकाक आतंक छल आ ओकर नाम छलैक शिवराज । ओकरा आगू-पाछू केओ नहि छलैक । नेनपनहिमे माय-बाप मरि गेलाक कारणे ओ उद्दंड भ' गेल छल । ककरहुसँ किछु छीनि लेब वा मारि-पीट करब ओकर नियति बनि गेल छलैक । शिवराज कोनो अपराधमे थानामे बंद छलैक आ थाना प्रभारी कहलथिन्ह, ''तो॑ सभक नाकमे दम क' देने छे॑ । एहि बेर यावत् तोरा केओ जमानत नहि देतौक, तावत् नहि छोड़ल जयबे॑ ।''

सुभान भायके॑ सेहो एहने लोकक प्रयोजन छलन्हि । ओ थाना प्रभारीसँ अनुरोध कयने छलथिन्ह । थाना प्रभारी सुभान भायके॑ टेलीफोन कयलथिन्ह आ टेलीफोनेपर शिवराजक विषयमे कहलथिन्ह । ओ थाना प्रभारी सेहो सुभान भायक सिडींकेटसँ जुड़ल छलाह । सुभान भाय ओहि पुलिस चौकीमे गेलाह आ शिवराजसँ पुछलथिन्ह, "अहाँक नाम ?"

उत्तर भेटलन्हि, "शिवराज !"

सुभान भाय : कत' रहैत छी ?

शिवराज : "रहमतपुर ।"

सुभान भाय : 'की करैत छी, मतलब कोनो हाल-रोजगार ?'

शिवराज मौन रहि गेल । किछु उत्तर नहि देलकनि ।

सुभान भाय : 'ई जीवन नीक लगैत अछि ?'

शिवराज : 'मतलब...?'

सुभान भाय : 'मतलब, ई चोर-सिपाहीक खेल ?'

शिवराज : 'तखन की करू ?'

सुभान भाय : 'करबाक लेल तँ बहुत किछु छैक । अहाँ कर' की चाहैत छी ?'

शिवराज चुप रहि गेल ।

सुभान भाय : 'घरमे के सब छथि ?'

शिवराज : 'केओ नहि ।'

सुभान भाय : 'एखन अहाँ जुआन छी, स्वस्थ छी, बहुत किछु क' सकैत छी । एखन तँ अहाँकेँ बड़कीटा जिनगी अछि । एना कतेक दिन चलत । अहाँकेँ हम जे कहब से करब ?'

शिवराज : 'की करबाक लेल कहब ?'

सुभान भाय : 'ओ तँ नहिएँ, जे एखन अहाँ क' रहल छी ।'

शिवराज : 'तखन...?'

सुभान भाय : 'कोनो अधलाह काज अहाँसँ नहि करायब, एतेक सुनिश्चित अछि ।'

शिवराज : 'ठीक छै, हम तैयार छी, मुदा हम एहि ठामसँ बहरायब तखन ने ।'

सुभान भाय : 'तकर चिंता अहाँ किएक करैत छी ।'

सुभान भाय थाना प्रभारीकेँ पाँच हजार रूपैया देलथिन्ह आ कहलथिन्ह, 'हमरा जमानतपर शिवराजकेँ छोड़ि दियन्हु ।'

थाना प्रभारी : 'एकर कोन आवश्यकता छैक । अहाँ ओहिना शिवराजकेँ ल' जैयन्हु ।'

सुभान भाय : 'आवश्यकता छै ने, एकरा राखू । कानून कानून होइत छैक । अहूँ लोकनिकेँ तँ देखाब' पड़ैत होयत जे कोना ककर जमानत भेलैक ।'

सुभान भाय शिवराजकेँ ल' क' एकटा होटलमे गेलाह आ पहिने मनपसन्द वस्तु सब खोऔलथिन्ह-पिऔलथिन्ह । तकर बाद गप शुरू भेल ।

सुभान भाय कहलथिन्ह, 'अहाँक नाम जँ शिराज राखल जाय तँ कोनो आपत्ति ?

शिवराज : 'से किएक ?'

सुभान भाय : एहि लेल जे आइ धरि अहाँ जे किछु कयलहुँ सब शिवराजक नामक संग खतम भ' जायत । अहाँपर जतेक थानामे केस दर्ज अछि, सब खतम भ' जायत आ आइ सँ शिराज नव दुनियाँमे, नव काजक संग आ नव कलेवरमे प्रवेश करताह, तेँ ।'

शिवराज; 'कोनो हर्ज नहि ।'

सुभान भाय कहलथिन्ह, 'अहाँकेँ राजनीतिमे अयबाक अछि आ ताहि लेल कोनो तरहक दाग नहि होयबाक चाही, मुदा अहाँक शिवराजक जीवन तँ दागेसँ भरल अछि । तेँ नाम बदलब आवश्यक छैक । ओना नेता तँ दागीये लोक होइत अछि, मुदा ओकर कतहु अभिलेख नहि होयबाक चाही । अहाँकेँ विधायक बनबाक अछि, सेहो वर्त्तमान विधायक माननीय श्रीरामलालजीकेँ हरा क' ।'

शिराज बाजल, 'सुभान भाय ! हम तँ मूर्ख छी आ राजनीति तँ हम किछु बुझिते नहि छियैक । हम कोना राजनीति करब । दोसर गप जे हम कोना ओकरा हरा सकब । ओकरा लेल लोक सब जान दैत अछि आ हमरा तँ सभ केओ...।'

सुभान भाय कहलथिन्ह, 'तकर चिंता अहाँ नहि करू । अहाँ तँ सुनने होयब, चाणक्य आ चन्द्रगुप्तक कथा । की चन्द्रगुप्त महाराज नन्दकेँ पछाड़बाक लेल समर्थ छलैक ? कथमपि नहि, मुदा चाणक्य ओकरा ओहि अनुरूप बनाक' ओकरा महाराज नन्दसँ लड़बाक लेल ठाढ़ कयलन्हि । ओ चन्द्रगुप्तमे रजोगुण देखलथिन्ह । हमहूँ किछु ओहने अनुभव क' रहल छी । यद्यपि हम चाणक्यक पयरक नऽहो नहि भ' सकैत छी । अहाँकेँ जतबहि कहल जाय, ओतबहि बाजब । बेसी बजबाक प्रयास नहि करब आ ककरोपर तमसायब तँ एकदम्मे नहि । मारबो-पिटबो करत, तैओ नहि ।'

शिराज तैयार भ' गेलाह । शिराजक लेल सबसँ पहिने एकटा नीक डेरा ताकल गेलनि जत' रहि ओ अपन क्रिया-कलापक विस्तार करितथि । खादीक दसटा कुर्त्ता-पयजामा बनबाओल गेल । चारि जोड़ चप्पल छलैक तँ नव, मुदा गर्दा लगाक' ओकरा पुरान सनक कयल

गेलैक। हुनक दाढ़ी-केश बनबाओल गेलनि, छोट-छोट दाढ़ी जेना नेता लोकनि रखैत छथि। एकटा शिक्षक राखल गेलैक जे भाषण तैयार क' पहिने सुभान भायकेँ देखौतन्हि आ तकर बाद ओकरा बैसिक' शिराजकेँ रटाओत। शिराजक संगे पचीसटा युवा झंडा लेने इनक्लाब-जिन्दाबाद करैत छलैक, संगहि बाहरी आक्रमणसँ सुरक्षा सेहो। शिराजकेँ कोनो पार्टीक चुनाव-चिह्न नहि भेटलैक, मुदा सत्ताधारी पार्टीसँ आश्वासन अवश्य भेटलैक जे चुनाव जितलाक बाद ओकरा पार्टीमे मिला लेल जयतैक, सेहो सुभान भायक प्रभावेँ। ओकर नामांकन स्वतंत्र प्रत्याशीक रूपमे भेलैक। ई गप सत्य छलैक जे शिराजकेँ सामर्थ नहि छलैक रामलालकेँ हरयबाक। रामलाल दू बेरसँ विधायक छलैक आ चुनाव लड़बामे माहिर सेहो। ओ सभ कलामे निपुण छलैक, मुदा अहंकार तँ सभक टुटैत छैक। रामलालजीकेँ हरायब कठिन छलैक, से गप सुभान भाय सेहो बुझैत छलाह, मुदा ओ तँ अपने माँजल खेलाड़ी छलाह। ओ पीठ ठोकिक' तरुणजीकेँ सेहो ठाढ़ कयलनि। तरुणजी सभ चुनावमे रामलालक विरूद्ध चुनाव लड़ैत छलाह आ हारि जाइत छलाह। तेँ ओ एहि बेर चुनाव लड़' नहि चाहैत छलाह, मुदा सुभान भायक आग्रहकेँ टारि नहि सकलाह। तरुणजीक माध्यमे रामलालक गढ़ टुटि गेलैक। खूब जोर-शोरसँ प्रचार-प्रसार शुरू भेलैक। शिराज अपना भाषणमे कहैत छलैक–

"आदरणीया भाय बहिन, हमर अभिभावक लोकनि आ उपस्थित भाय-बन्धु, हम कोनो नेता नहि छी आ ने कोनो सामाजिक कार्यकर्त्ता थिकहुँ। हम अहीँ सभक बीचक एकटा अबोध नेना थिकहुँ आ नाम अछि शिराज। हम ग्रामीण जनता, किसान-मजदूर आ शोषित समाजक दुर्दशा देखि अपनाकेँ रोकि नहि सकलहुँ आ वर्त्तमान व्यवस्थाकेँ उखारि फेकबाक लेल प्रतिबद्ध छी। आइ धरि हमरा ओहि ठाम ने समुचित शिक्षा आ ने ढंगक विद्यालय भेल। ने समुचित आवागमनक व्यवस्था भेल आ ने नीक सड़के बनल। गाम-गाममे पेय जलापूर्तिक नामपर सरकार अरबो रुपैया खर्च कयलक वा कहू जे लुटा देलक किएक तँ कतहुँ पाइप जाम छैक, तँ कतहुँ मोटर जरि गेलैक आ जत' जल आबिओ जाइत छैक तँ ओहिमेसँ विचित्र दुर्गन्ध बहराइत छैक। कतहु अनेरो जलक बहन्ने

बाट-घाट से घिनायल रहैत छैक। किएक तँ जलक बहाओ लेल नाली नहि छैक। सबसँ पहिने तँ रोडक संग नालीक व्यवस्था होयबाक चाही। हमरा सभक स्थिति नालीक कीड़ोसँ बदतर अछि। महँगी दिनानुदिन सुरसाक मुँह जकाँ बढ़िये रहल अछि। रोजगारक तँ गपे छोड़ि दिअ'। एक दिस सरकार आरक्षण द' क' हमरा लोकनिक मन गद्गद् क' देलक आ दोसर दिस नोकरीये अलोपित। औजी, जखन नोकरीये नहि, तखन आरक्षण कथिक लेल ? ओना देशमे नोकरीक अभाव नहि छैक। अभाव छैक तँ ओकरा हासिल कयनिहारक। एखन जे हमरा देशक शिक्षा प्रणाली अछि, ताहिसँ कहिओ देशमे समानता नहि आबि सकैत अछि। आइ देशक सार्वजनिक प्रतिष्ठानकेँ चलौनिहारक कमी भ' गेल छैक। जकरा सरकारी नोकरी भ' गेलैक से अपनाकेँ अंग्रेजेक औलाद बुझि रहल अछि। मंत्रीसँ संतरी धरि देशकेँ लूटि रहल अछि। नेता लोकनि आवाज उठौताह जे निजी उद्योगमे सेहो आरक्षण होयबाक चाही, एहि लेल जे एहिसँ आरक्षित वर्गक वोट बटोरि सकथि, मुदा एम.पी. आ एम.एल.ए. क' लेल अपनहि खानदानक लोककेँ चुनताह। एखन जे विधायकजी छथि, माननीय श्रीरामलालजी, हुनकर कनियाँ आ बेटा सेहो विधायक थिकथिन्ह। की हमरा लोकनि हुनक बंधुआ मजदूर थिकहुँ जे केवल हुनके घरक लेल छी ? अहाँ सब स्वतंत्र छी। जे अहाँक हितक रक्षा करथि, अपन वोट हुनके दियन्हु। एहि कुव्यवस्थाकेँ समूल उखाड़ि फेकबामे हमरा अहाँ सभक सहयोग आ आशीर्वाद चाही। हमरा चुनाव लड़बाक ने बुद्धि अछि आ ने ओकाति। हम तँ मात्र एहि नेता सभक खेल देखिक', कुकृत्य देखिक' एहि दंगलमे कूदि पड़लहुँ। परिणाम जे होउक। अपने लोकनि जँ हमरा विचारसँ सहमत होइ आ सहयोग करबाक इच्छुक होइ, तँ एक वोट आ एकटा नोट द' क' हमरा आश्वस्त करी, धन्यवाद।"

भाषण खतम होइतहि शिराजक ऊपर नोटक वर्षा होमय लगलैक आ थोपड़ीक गड़गड़ाहटिसँ चारू दिस गुञ्जायमान भ' गेलैक। नोटक वर्षा कयनिहार आ थोपड़ी बजौनिहारमे अधिकांश लोक सुभान भायक छलैक। जतेक ओहि इलाकाक मेट छलैक सब अपन हाल-रोजगार छोड़ि बीस-पचीस गोटेकेँ ल' क' ओहि सभामे गेल छलैक आ मेट सब भरि

चुनाव झंडा ल' क' शिराजक संग घूमि रहल छल ।

शिराजक भाषणसँ लोक खूब प्रभावित होइत छल । सुभान भायक सुझावपर शिराजक पहिल चुनावी सभा रहमतेपुरमे आयोजित कयल गेलैक । रहमतपुर शिवराजक घर छलैक आ ओहि ठाम सफल भेने कतहु दिक्कत नहि होइतैक । से गप सुभान भाय कहने छलथिन्ह । ओहि ठाम किछु लोककेँ शंका सेहो होइत छलैक जे ई दोसर केओ नहि शिवराजे थिक, मुदा से पुछबाक साहस ककरो नहि भेलैक । ओकर एतेक बदलल स्वभाव देखि सभक शंका मेटा जाइत छलैक ।

भाषण खतम भेलाक बाद एकटा जनानी, जकरा संग शिवराज कहिओ अनुचित कयने छलैक, मंचपर चढ़ि तीन-चारि चप्पल मारि देलकैक आ बाजलि, 'रे सरधुआ...तोहर सराध करू, टुनकीबला नहितन...चोला बदलने की तोरा लोक नहि चिन्हतौक आ एहि सबसँ तोहर पाप धोआ जयतौक ? अयलाह अछि वोट लेबाक लेल । रे, तोरा ऊपर तँ बज्र खसतौक, टटीबा नहितन ।'

शिराज एक क्षणक लेल तँ आवेशमे आयल, मुदा सुभान भायक शिक्षा मन पड़ितहिँ हाथ जोड़ि ओकरा पयर लग बैसि गेल आ बाजल, 'माताजी ! हमरासँ कोन कसूर भेल जे अहाँ एतेक कष्ट कयल ?'

ओ जनानी बाजलि, 'छः मास पूर्व तोँ हमरा संगे की कयने छलेँ, से मन नहि छौक । तोँ की बुझलही जे लोक तोरा नहि चिन्हतौक ?'

शिराज बाजल, 'माताजी ! ओ हम नहि थिकहुँ । अवश्य अहाँकेँ भ्रम भेल अछि । ओकर की नाम छलैक ?

ओ जनानी बाजलि, 'ओकर नाम शिवराज छलैक ।'

शिराज पुछलक, 'कतेक दिनक गप कहैत छी ?'

ओ जनानी बाजलि, 'करीब छः मास पूर्वक गप अछि ।'

शिराज पुछलक, 'ओ चोरी-डकैती सेहो करैत छलैक ?'

दोसर जनानी बाजलि, 'ओकरासँ कोनो कर्म नहि छूटल छलैक ।'

शिराज बाजल, 'अहाँ ठीक कहैत छी । आइसँ करीब चारि वा

पाँच मास पूर्व शिवराज जकर चेहरा-मोहरा हमरासँ मिलैत छलैक, एकटा डकैती केसमे पुलिसक संग मुठभेड़मे मारल गेल । हम समाचार पत्रमे देखने छलियैक । हमरा घरपर समाचार पत्र राखल अछि, मुदा हमरा ई नहि बुझल छल जे ओ रहमतेपुरमे रहैत छलैक । तखन तँ अहाँक तामस उचिते छल । एके रंगक चेहरा-मोहरा होयबाक कारण ओकर दण्ड हमरो भोग' पड़ल । खैर कोनो गप नहि, एहन होइत छैक ।'

आब तँ ओहि जनानीकेँ काटू तँ खून नहि । ओकरा एखनहुँ विश्वास नहि होइत छलैक जे ई शिवराज नहि थिक, मुदा ओहि ठामक परिस्थिति किछु आर छलैक । शिराज ततेक सफाइसँ गपकेँ बदलि देलक जे सभकेँ विश्वास कर' पड़लैक । ओ जनानी लजा गेलि आ बाजलि, 'हम भ्रमित भ' गेल छलहुँ । हम अहाँकेँ शिवराजे बुझैत छलहुँ । ओ हमरा संग जे व्यवहार कयने छल, तकरा हम जीवन भरि बिसरि नहि सकैत छी । हमरासँ गलती भेल । हमरा माफ करू ।'

शिराज बाजल 'एहन परिस्थितिमे ई ककरो संग भ' सकैत छलैक । जे भेलैक से भेलैक, एहि लेल कोनो पश्चात्ताप नहि होयबाक चाही । हम तँ अहाँक बेटाक समान थिकहुँ ।'

एहि घटनासँ सभक मोनमे जे शिवराजक भ्रम छलैक, से खतम भ' गेलैक आ शिराज पहिल मोर्चापर विजय पओलक । शिराज जखन सुभान भाय लग एहि घटनाक चर्चा कयलक, तँ सुभान भाय पुछलथिन्ह, 'तोरा तामस नहि भेलहु ?'

शिराज कहलकन्हि, 'हँ...भेल, कनेक कालक लेल, मुदा अहाँक हिदायत मन पड़ितहि तामस छू-मंतर भ' गेल । तकर बाद हाथ जोड़ि हम ओकरासँ माफी मँगलहु आ कहलियैक, 'अहाँकेँ अवश्य भ्रम भेल अछि । हम तँ शिराज थिकहुँ आ पहिल बेर एहि गाममे आयल छी ।'

सुभान भाय कहलथिन्ह, 'तोँ चुनाव जीति गेलह ।'

शिराज : 'से कोना ?'

सुभान भाय : 'जे व्यक्ति आनि-अपगरानि, मान-अपमान,

तामस-पित्त आदिपर विजय प्राप्त तँ नहि कहबह, किएक तँ एहिपर विजय भगवान विष्णु छोड़ि केओ नहि पओने अछि । हँ, एकरा सभकेँ जे काबूमे राखि लेलक, तकरा लेल कोनो काज असम्भव नहि छैक । खासक' नेतामे एहने गुण होयबाक चाही । जे नेता जतेक बेसी गारि सुनबामे पटु होइत अछि, ओकर कुर्सी ओतेक बेसी दिन चलैत छैक । ई तोहर परीक्षा छलह । एही लेल हम तोरा पहिने रहमतपुर पठौने छलियह । आब कह' शिराज आ शिवराजमे की फर्क छैक ?'

शिराज : 'बहुत फर्क छैक । शिवराज गलीक अबारा कुकुर छल आ शिराज सम्भ्रान्त एनसिसियन ।'

सुभान भाय : 'छी...छी...।'

सुभान भाय पुनः पुछलथिन्ह, 'आइ कतेक टाका बटोरलह ?'

शिराज बैगकेँ सुभान भायक आगू बढ़ा देलक ।

सुभान भाय : 'कतेक भेल, से ने बाजह ?'

शिराज : 'लगभग पाँच हजार ।'

सुभान भाय : 'सभामे कतेक लोक छलैक ?'

शिराज : 'लगभग पन्द्रह हजार ।'

सुभान भाय : 'आइ तोँ पाँच हजार टाका आ दस हजार वोट हासिल कयलह ।'

शिराज : 'से कोना ? टाका तँ पाँचे हजार भेल, तेँ वोटो तँ पाँचे हजार ने होयबाक चाही ।'

सुभान भाय : भाषण सुननिहार सब टाका ल' क' आबय, से कोनो आवश्यक नहि छैक आ ककरो ई गप बुझलो तँ नहि छलैक जे तोरा दिससँ टाकाक माँग कयल जयतैक । आब तोहर चहेता अधिकांश लोक टाका ल' क' अओतह आ तोरा संग जे अभद्रता कयलकह से वा ओकरा ग्रुपक लोक तोरा टाका नहि देने होयतह, मुदा वोट अवश्य देतह । ओ जत' जत' एहि गपक चर्च करतैक, तोहर वोटर बढ़तह । ई घटना तोरा जे लागल होअ', मुदा तोरा भविष्यक लेल वरदान भेलह । काल्हि एहिसँ

बेसी लोको रहतह आ टाका सेहो बेसी भेटतह ।'

शिराज : 'एहि टाकाकेँ की कयल जयतैक ?'

सुभान भाय : 'टाका कथिक लेल होइत छैक । खर्चे करबाक लेल ने । जाह सब कार्यकर्त्ता मिलिक' खा-पीअह आ मनसँ प्रचार-प्रसार करह । ई हमरो प्रतिष्ठाक प्रश्न अछि । हर हालतमे हमरा ई चुनाव जितबाक अछि ।

सुभान भायक अनुमान सही भेल । दोसर दिनक सभामे करीब बीस हजार लोक छलैक आ टाका सेहो तेरह हजार भेल छलैक । पहिल दिन तँ दू हजार भिखमंगा सेहो छलैक जे सुभान भायक निर्देशपर गेल छलैक आ सब एक-एक टाका देने छलैक जाहिसँ जनता सेहो उत्साहित भ' टाका देअय लागल । एहि तरहेँ शिराज अपना चुनाव क्षेत्रमे नीक पइठ बना लेलक । जखन रामलालकेँ आभास भेलैक जे ओकर वोट बैंक ससरि रहल छैक, तँ ओ शिराजकेँ बहुत तरहक प्रलोभन देलक आ बैसि जयबाक आग्रह कयलक, मुदा शिराज ओकर कोनो गपपर कान नहि देलक आ दैत कोना ? ओकरा रामलाल की दितैक ? ओहिसँ बेसी तँ ओकरा सुभान भाय द' रहल छलथिन । सुभान भाय ओकरा मनुक्ख बना देलथिन, नहि तँ अबारा कुकुर जकाँ गली-मोहल्लामे छिछिआयल फिरैत आ लोकक गारि-मारि सहैत रहैत । समाजमे जे ओकर मान-सम्मान बढ़लैक अछि, से तँ सुभाने भायक बदौलति ने । हुनका छोड़ि ओ रामलालक संग कोना देत ? जँ भगवान चाहलथिन तँ ओ रामलालक बाप बनि सकैत अछि । जखन शिराज रामलालक प्रस्तावकेँ ठोकरा देलक, तँ रामलाल ओकरा विषयमे फतूर उड़ायब शुरू कयलक, 'ई शिराज नहि, शिवराज थिक जे कतेको घरकेँ बर्बाद कयलक, कतेकोक बहु-बेटीक इज्जति लुटलक, मुदा जे शिवराजकेँ देखने छलैक, से सब मानबाक लेल तैयार नहि भेलैक । सभ केओ ओकर व्यवहार देखि चुकल छलैक । शिराजक व्यवहार शिवराजक व्यवहारक विपरीत छलैक । लोक सभक कहब छलैक जे व्यक्तिक आचरण आ स्वभाव कहिओ नहि बदलि सकैत छैक । कतबो मधु चटयलासँ बीछ डंक मारब नहि छोड़ि सकैत अछि ।

तेँ शिराज आ शिवराज एक नहि भ' सकैत अछि । जँ ओ शिवराज रहैत तँ ओहि दिन ओहि जनानीसँ मारि खा' क' शांत नहि रहैत आ ने माफी मँगैत । ओ तँ ओतेक कालमे आगि लगा देने रहैत । अंतमे रामलाल किछु गुण्डाकेँ पठौलक जकर अनुमान सुभान भायकेँ पहिनहिसँ छलन्हि । हुनक सेना तँ सब दिनसँ शिराजक संग छलैक । ओ रामलालक गुण्डापर भाड़ी पड़लैक आ सभकेँ नाङ्गरि सुटकाक' भाग' पड़लैक । सुभान भायक जे लोक छलैक, से सुभान भायक एक इशारापर अपन गरदनि कटा सकैत छलैक, मुदा रामलालक गुण्डा पेशेवर छलैक जे मारि तँ खा सकैत छलैक, मुदा मर' नहि चाहैत छलैक ।

निर्धारित समयपर चुनाव भेलैक । शिराज चालीस हजार वोटसँ चुनाव जीति गेल आ रामलाल तेसर नम्बर पर चल गेलाह । हुनक सबटा ऐंठी खतम भ' गेलन्हि । शिराज अपना क्षेत्रमे बहुत काज कयलक आ अपनहु लेल कोठी आ कारक व्यवस्था कयलक । तीन बेर विधानसभा चुनाव जितलाक बाद वर्त्तमानमे प्रदेशक गृहमंत्री छथि । गृहमंत्री बनलाक बाद शिराज सुभान भायक ओहि ठाम आयल छल । तेँ छोटकी बेगम नूराकेँ बुझल छलन्हि जे गृहमंत्री सुभान भायक दोस्त थिकथिन्ह । जखन शिराज सुभान भायक ओहि ठाम आबय, तँ सुभान भाय कहैत छलथिन्ह, 'अहाँ किएक अयबाक कष्ट करैत छी । एहिसँ अहाँक प्रतिष्ठा घटत । पदक किछु मर्यादा ने छैक । जँ आवश्यक होअय, तँ हमरे बजा लेल करू । अहाँ प्रदेशक गृहमंत्री थिकहुँ । एहि आबर-जातसँ कतेको गोटेकेँ इर्ष्या सेहो भ' सकैत छैक ।'

शिराज : 'प्रदेशक गृहमंत्री भेने केओ अपना बापकेँ बिसरि जायत ? हमरा सनक लुच्चा-लफंगाकेँ आइ एहि मोकामपर अहींने अनने छियैक । अहाँकेँ हम कोना बिसरि सकैत छी । अहाँ तँ हमर जीवनधारा बदलि देलहुँ । शिवराजकेँ मारि शिराजक जन्म देलहुँ । अहाँ तँ शिराजक जन्मदाता थिकहुँ । एतेक तँ ककरो बापो नहि करैत होयतैक । माइयो-बापकेँ अपना बच्चासँ स्वार्थ रहैत छैक जे बुढ़ारीमे ताक-छेम करत, मुदा अहाँकेँ तँ हमरासँ कोनो स्वार्थो नहि अछि । अहाँ मानव नहि महामानव थिकहुँ ।

दोसर गप, हम बादमे प्रदेशक गृहमंत्री छी, पहिने जनप्रतिनिधि छी । तेँ हमरा सभक ओहि ठाम जयबाक चाही आ हमरासँ सभ केओ सुगमतापूर्वक भेट क' सकथि । सैह तँ हमर उद्देश्य आ कर्त्तव्य अछि । सेहो पाठ पढ़ौनिहार तँ अपनहिँ थिकहुँ । अहाँकेँ जे बिसरि जायत, तकरा सनक कृतघ्न के होयत ? यावत् शिराज बजैत रहल, सुभान भाय मुस्काइत रहलाह आ कहलथिन्ह, 'अहाँ आब ओ शिराज नहि छी । अहाँ तँ आब बहुत बुधियार भ' गेलहुँ अछि ।'

शिराज : सबटा अहीँक प्रताप आ दुआक प्रतिफल थिक ।'

सुभान भाय भरि पाँज क' शिराजकेँ उठा लेलन्हि आ प्रसन्न चित्तसँ विदा कयलथिन्ह ।

(8)

एक दिन सुभान भाय रौनकसँ पुछलथिन्ह, 'रौनक, हमरा एकटा गपक बड़ आश्चर्य लगैत अछि ?'

रौनक : 'कोन गपक भाइजी ?'

सुभान भाय : 'हम एतेक दिनसँ एहि धंधामे छी, मुदा जे काज हमहूँ नहि क' सकलहुँ, तोँ एके वर्षमे क' लेलह, से कोना ?'

रौनक : 'कोन काज भाइजी ?'

सुभान भाय : 'ओएह किछु अधिकारीकेँ पटयबाक काज । हम कतेक प्रयास कयलहुँ, कतेक प्रलोभन देलियैक ,मुदा सफल नहि भ' पओलहुँ, आ तोँ चुटकी बजाक' सभकेँ पटा लेलह । आखिर ई भेलैक कोना ?'

रौनक हँसैत कहलथिन्ह, 'भाइजी ! सबटा अहीँक मंत्रक असरि अछि ।'

सुभान भाय : 'हमरा मंत्रक.... से कोना ?'

रौनक : 'भाइजी ! हम अहाँकेँ पुछने छलहुँ जे कारोबार बढ़यबाक लेल जँ किछु अडन्डो खर्च कर' पड़तैक, तँ कयल जयतैक वा नहि । ताहिपर अहाँ कहने छलहुँ जे तोँ जे चाह' से क' सकैत छह । तोरापर हमरा पूर्ण विश्वास अछि । दोसर गप अहाँ कहने छलहुँ जे जाहि ठाम पुरुषसँ काज नहि चलय, ताहि ठाम स्त्रीगणकेँ ढाल बनयबाक चाही, मुदा ओकरा संगे कोनो अभद्रता वा अनैतिकता नहि होयबाक चाही ।'

सुभान भाय : 'हँ... से तँ कहने छलियह ।'

रौनक : 'हम सएह कयल । एक दिन सफियाबादक जिलाधिकारीक डेरापर गेलहुँ । साहेब अपने तँ कार्यालय गेल छलाह, मुदा मैडम किछु सहेलीक संग बाहर लॉनमे गप-सप क' रहल छलीह । हमहूँ माथपर एकटा साड़ीक मोटा लेने आवाज देलहुँ, 'साड़ी लेब साड़ी...साड़ी लेब साड़ी...।' हमर संयोग नीक छल जे ओहिमेसँ एकटा सहेली हमरा दिस देखि हाथ उठौलन्हि । हम रुकि गेलहुँ आ फाटक लग ठाढ़ भ' गेलहुँ । ओहि ठामक सुरक्षा व्यवस्था बहुत सख्त रहैक आ रहितहुँ छैक । मैडम सिपाहीकेँ किछु आदेश देलथिन्ह । एकटा सिपाही आयल आ फाटक खोलि देलक । दोसर सिपाही हमर सम्पूर्ण देहक आ सामानक निरीक्षण कयलक आ बाजल, 'जाउ, मैडम बजा रहल छथि ।'

हम हुनका सभकेँ लॉनेमे बैसि साड़ी देखाब' लगलहुँ । ओ एकटा साड़ी पसिन्न कयलन्हि आ दाम पुछलन्हि । हम ओकर दाम पाँच हजार टाका कहलियन्हि । ओ सब अवाक् रहि गेलीह । ओ सब आपसमे बतिआय लगलीह जे ई कपड़िया अवश्य बताह अछि वा ई चोरीक माल भ' सकैत छैक । एहि साड़ीक दाम दस हजारसँ कम नहि होयतैक । वास्तवमे ओ साड़ी छलैहो दस हजारक । ओ मैडम हमरासँ नाम, गाम आदि पुछलन्हि । हमहूँ सभटा कहलियन्हि । फेर ओ सब अपनामे गप कयलन्हि, 'बताह तँ नहि लगैत अछि । अवश्य ई चोरीक माल होयतैक ।'

मैडम पुछलन्हि : 'ई माल चोरीक थिकौक की ?'

हम कहलियन्हि : 'मैडमजी ! अहाँकेँ चीज पसिन्न अछि वा नहि, से ने कहू । माल कत'सँ आयल छैक, कोना आयल छैक, ताहिसँ कोन प्रयोजन अछि ।'

मैडम : 'से तँ ठीके, मुदा ई सब चीज बुझबाक चाही ।' मैडम दूटा साड़ी लेलन्हि आ कहलन्हि जे अबैत-जाइत रहिहेँ । सिपाहीकेँ सेहो कहलथिन्ह जे रौनककेँ रोकिहक नहि । आवश्यक जाँच-पड़ताल क' आब' दिहक ।

एक दिन मैडम पुछि बैसलीह, 'रौनक सत्य कह, ई साड़ी तँ बहुत बेसी दामक छैक आ तोँ एकरा कम दाममे किएक बेचैत छेँ ? हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे ई माल अवश्य चोरीक थिक ।'

हम कहलियन्हि, 'मैडमजी ! अहाँक संदेह उचित अछि, मुदा ई चोरी हम नहि करैत छी । हमरा जाहि दाममे भेटैत अछि, ताहिमे सय-दू सय अपन मजदूरी लैत बेचि दैत छी । इएह साड़ी जे अहाँकेँ देल अछि, बजारमे दस-एगारह हजारमे भेटत, सेहो खुदरामे, थौकमे कमे होयतैक, मुदा हमरा सभकेँ साढ़े चारि हजारमे भेटैत अछि जकरा घरे-घरे घूमिक' बेचैत छी आ अपन घर चलबैत छी ।

मैडम : 'दस हजारक साड़ी साढ़े चारि हजारमे बेच'वला बताहे ने हैत ?'

हम कहलियन्हि, 'मैडमजी ! ओ बताह नहि, बहुत चतुर-चलाक अछि ।'

मैडम : 'से कोना ?'

हम कहलियन्हि, 'मैडमजी ! एहिमे बहुत पैघ घपला छैक । सेठकेँ जखन मालक बिलटी अबैत छैक तँ ओकरा कतहु अन्यत्र गोदाममे राखि दैत अछि आ रातिमे अपन गोदामक ताला तोड़बाक' थानामे शिकायत करैत अछि । ताहि आधारपर मालक पूरा दाम बीमा कम्पनीसँ ओसूल करैत अछि आ एहि मालकेँ औने-पौने भावमे बेचि दैत अछि । हम सब ओकरहिसँ आ ओएह माल कीनिक' अनैत छी ।'

मैडम : 'ई तँ बड़ पैघ घोटाला छैक । एहिपर पुलिस कारबाइ नहि करैत छैक ?'

हम कहलियन्हि, 'ओकरे मेल-पाँचसँ सब किछु होइत छैक । एहि ठाम दूधक धोअल के अछि ? अपन हाकिम इमानदार छथि, तँ दुनियोँकेँ इमानदारे बुझैत छियैक ।'

हमरा मुँहसँ हाकिमक इमानदारीक गप सुनि मैडम बड़ प्रसन्न

भेलीह आ मुस्की दैत पुछलन्हि, 'से तँ छथि, मुदा ई गप तोँ कोना बुझैत छेँ ?

हम कहलियनि : 'हम सब तँ एकरे पारखी थिकहुँ । अपनो साहेबसँ नीचाँबला ऑफीसरक डेरापर गेल छलहुँ । ओ पाँचटा साड़ी किनने छलीह आ अहाँ एकटासँ बेसी नहि लैत छी । ताहिसँ हम अनुमान लगौलहुँ ।'

मैडम : 'हम तँ कतेक कहैत छियैन्हि जे दुनियाँ देखिऔक । लोक कमा क' की की ने करैत अछि । बंगला-गाड़ी सब कीनैत अछि आ ऐशो-आरामसँ रहैत अछि । एखन तँ नोकरीमे छथि । गाड़ी-बंगला सब भेटल छन्हि । जखन रिटायर करताह तखन कत' जयताह, मुदा ओ कहैत छथि जे हम ई सब नहि करब । हमरा जतबहि भेटैत अछि, ततबहिमे संतोष अछि ।'

एक दिन हुनकर कोनो सखी-बहिनपा नहि छलथिन्ह । मात्र मैडम आ हम दुइये गोटे छलहुँ । तेँ साहस कय पुछलियन्हि- 'मैडम ! हम एकटा प्रार्थना करू । एकरा अन्यथा नहि ने लेबैक ।'

मैडम : 'की कहबाक छह, कहह ने ।'

हम कहलियन्हि : 'हमरा सेठक किछु आपत्तिजनक माल बाहरसँ अबैत छैक । हाकिम जँ तकरा बिना जाँच-पड़तालकेँ आगू बढ़ा देथि, तँ हम अहाँकेँ मन मोताबिक सेवा करब आ करैत रहब । ई गप केओ बुझिओ नहि सकैत अछि । केवल हमरे अहाँक बीच रहत ।'

मैडम : 'ठीक छै, तोँ काल्हि अबै'... । हम साहेबसँ गप करैत छी ।'

सुभान भाय पुछलथिन्ह : 'तकर बाद की भेलैक ?'

रौनक : तकर बाद हम दोसर दिन पहुँचलहुँ, तँ मैडम कहलन्हि, 'हम साहेबकेँ पटा लेलियह । तोँ रवि दिन भोरे सात बजे आबि जाह । साहेब तोरासँ किछु बूझ' चाहैत छथि ।

हम पुछलियन्हि, 'मैडम ! मुदा साहेब तँ बड़ कड़क छथि, कदाचित्... ।'

मैडम : 'हँ... साहेब कड़क अवश्य छथि, मुदा दुनियाँक सोझाँ । मैडम सभक सोझाँमे केहनो कड़क साहेब मोम बनि जाइत छथि ।'

हम डेराइत कहलियन्हि, 'मैडम ! हमरा एकसर साहेबसँ गप करबाक साहस नहि होइत अछि । पता नहि ओ एकरा कोन रूपमे लेताह ।'

मैडम : तोँ चिंता किएक करैत छेँ । गप हमरा सोझाँमे होयतैक ।'

हम पुनः रवि दिन सात बजेसँ पूर्वहि पहुँचि गेलहुँ । गेटपर सिपाही रोकलक । ई कोन बेर छैक कपड़ा बेचबाक । जो तीन बजे अबिहेँ ।'

हम कहलियैक, 'मुदा मैडम तँ हमरा एखनहि बजौने छथि ।

सिपाही बाजल, 'ओना तँ आइ ककरो अयबाक अनुमति नहि छैक । मात्र एस.पी. साहेब आ राजनेता दूटा कखनहुँ आबि सकैत छथि । तथापि तोरा मैडम बजौने छथुन्ह, तँ हमरा कनेक पूछि लेब' दे ।'

ओ सिपाही भीतर गेल आ ओम्हरसँ आयल तँ बाजल, 'तोँ भीतर जा सकैत छेँ ।'

हम गेलहुँ तँ साहेब चाह पीबि रहल छलाह आ मैडम सेहो संगे छलथिन्ह । साहेब पुछलन्हि, 'तोँ की कह' चाहैत छेँ ?'

हम कहलियन्हि, 'सर ! हमर मालिक किछु कपड़ाक रोजगार करैत छथि जे एहि ठाम प्रतिबंधित छैक । ओहिमे अपनेक सहयोगक अपेक्षा रखैत छथि ।''

साहेब पुछलन्हि, 'केहन अपेक्षा ? हमरा की करबाक अछि ?'

हम कहलियन्हि, 'बस जाहि ट्रकमे हम बैसल रही, तेकरा चेकिंग नहि कयल जयतैक ।'

साहेब पुछलन्हि, 'मुदा हम कोना बुझबैक जे तोहर माल कहिया अबैत-जाइत छौक ?

हम कहलियन्हि, 'हम अहाँकेँ समय आ तिथिक सूचना एक दिन पूर्वहि द' देल करब ।'

साहेब कहलन्हि, 'ठीक छै, मुदा ई गप कोनो आनक कानमे नहि जयबाक चाही आ जँ गेलौक तँ हम तोरा आ तोरा मालिक दुनूकेँ जहल पठा देबौक आ ततेक ने धारा लगा देबौक जे भरि जिनगी जहलेमे सड़ैत रहि जयबेँ ।'

रौनक सुभान भायकेँ कहलकन्हि, 'एहि तरहेँ हम कतेको अधिकारीपर मैडम लोकनिकेँ ढाल बनाक' फतह पबैत रहलहुँ आ अपन कारबार बढ़बैत रहलहुँ ।'

ई गप तँ सत्य छलैक जे रौनक कारबारकेँ बढ़ौने छलैक अवश्य, मुदा ई कथा जे रौनक सुभान भायकेँ सुनौने छलैक से मनगढ़ंत छलैक । सत्य तँ ई छलैक जे ओ निगरानी महानिदेशकक सहयोगसँ ओहि तमाम ऑफीसरकेँ अपना सहयोगीक सूचीमे अनने छलैक । रौनकक वाक्-पटुतासँ सुभान भाय बड़ प्रसन्न भेलाह आ रौनकक पीठ ठोकि ओकर सफलतापर बधाइ दैत कहलथिन्ह, 'वाह रौनक ! बाप सेर तँ बेटा सवा सेर । आइ हम अपना निर्णयपर गर्वक अनुभव क' रहल छी ।

(9)

नायक सुभान भायक परिवारसँ एतेक घुलि-मिलि गेल छलाह जे जहिया कहिओ नागा करैत छलाह, सुभान भायकेँ बेगम नूराक दिससँ उलहन भेटि जाइत छलन्हि । बेगम नूरा कहैत छलथिन्ह, 'आइ रौनकजी किएक नहि अयलाह ? अहाँ किछु कहलियन्हि की ?'

यद्यपि बेगम नूरा सेहो बेबीनूरक हुलकौने हुलकैत छलीह । सुभान भाय मनेमन कहैत छलाह, 'रौनककेँ आर कोनो काज नहि छैक की ? ओकरा ऊपर कतेक भार छैक ? ओ मासमे बीस दिन तँ बाहरे रहैत अछि । ओकरा अयने हम भारमुक्त छी ।' ऊपरसँ हँसैत कहथिन्ह, 'कमायबो तँ जरूरी छैक । आइ एकसर छथि । काल्हि पर-परिवार होयतन्हि आ परसू धिया-पूता । ताहि लेल तँ किछु ने किछु उपार्जन करहि पड़तनि ।''

'हँ, से तँ जरूरीये छैक' बेगम नूरा कहैत छलथिन्ह ।

सुभान भायक अनुमति भेटि गेलाक बाद बेबीनूर बेसीसँ बेसी समय रौनकक संग बिताब' चाहैत छलीह, मुदा नायककेँ बेबीनूरमे कोनो अभिरुचि नहि छलन्हि । ओ तँ मात्र अपना मीशनक सफलताक लेल सब किछु बरदाइस कऽ रहल छलाह । तथापि एकर अभास ककरो नहि होअय दैत छलथिन्ह । कौखन बेबीनूर अपन सीमा तोड़बाक प्रयास करैत छलीह, तँ नायक कहैत छलथिन्ह, 'निकाह धरि धैर्य राखू । फेर तँ ई रौनक अहींक थिक ।'

नायक जखन मुम्बइ पहुँचैत छलाह, तँ ऑफीसक काजक बाद डेरापर सीमासँ भेट करैत छलथिन्ह आ ओतहि रात्रि-विश्राम सेहो करैत छलाह । सीमा नायकक गृहसंगिनी छलथिन्ह आ सुन्नरताक सीमा पारक'

देने छलीह । गोर देह पातर-छितर आ आँखि हरिण सनक ककरो मंत्रमुग्ध करबाक लेल पर्याप्त छलैक । ओना तँ बेबीनूर सेहो बड़ सुन्नरि छलीह, मुदा सीमाक सोझाँ हुनक कोनो मोजर नहि छलनि । एक दिन टेबुलपर खसल एकटा परिचय पत्र सीमाकेँ भेटलन्हि । पता नहि ओ गलतीसँ खसि पड़ल छलैक वा जानि-बूझिक' ओकरा नायके खसौने रहथि, सीमासँ मजाक करबाक उद्देश्यसँ । सीमा ओहि परिचय पत्रकेँ उठौलन्हि । ओहिपर रौनक, मिर्जापुर लिखल छलैक । ओ नायकसँ पुछलथिन्ह, 'ई ककर भ' सकैत छैक ।'

नायक कहलथिन्ह, 'ई हमरे स्टाफक थिकैक ।' तावत् सीमा ओकर भीतरी भाग देख' लगलीह । सीमा अकचका उठलीह, 'ई कोना भ' सकैत छैक ?'

नायक पुछलथिन्ह, 'की भेल ? की कोना भ' सकैत छैक ?'

सीमा हुनका ओ फोटो देखौलथिन्ह, जाहिमे एक भाग नायकक आ दोसर भागमे बेबीनूरक फोटो लागल छलैक । नायक हँसैत कहलथिन्ह, 'ई हमरे परिचय पत्र थिक । हम एखन जाहि ठाम छी से वेष आ नाम बदलि क' छी आ ई बालिका हमरा बॉसक बेटी थिकथिन्ह जिनकासँ हमरा प्रेम भ' गेल अछि ।

सीमा : 'तखन देरी कथिक ? शुभस्य शीघ्रम् । जल्दीसँ जल्दी विवाह कऽ लिअ' ।'

नायक : 'अहाँ अधीर जुनि होउ । ई प्रेम एकदिसाहु छैक । ओ हमरासँ करैत अछि, मुदा हम नहि करैत छियैक । तखन जाधरि ओहि ठाम छी, अस्वीकार सेहो नहि क' सकैत छियैक ।'

सीमा : 'तखन...।'

नायक : 'तखन एकटा गप छैक । हमरा ओहि ठामक काज मात्र साल-दू सालक अछि आ ओकरा निकाहमे कमसँ कम तीन वर्ष लगतैक ।'

सीमा : 'से किएक ?'

नायक : 'ओ चारि बहिनमे सबसँ छोट अछि आ सब एखन धरि

कुमारिये अछि । एकर नम्बर अयबामे कमसँ कम तीन वर्ष अवश्य लगतैक ।' तखन जा क' सीमाकेँ संतोष भेलन्हि ।

किछु दिनक बाद सुभान भायक बड़की बेटीक निकाह भेलन्हि । निकाह बिना कोनो ताम-झामक भेलन्हि । ने बेसी बरिआती आ ने बेसी आडम्बर, मुदा बेटीक विदाइमे नौ-दस लाखक सामग्री देल गेलैक । ओ टाका सुभान भाय अपना दिससँ नहि देलथिन्ह । ओ जोगाड़ हुनक दस नम्बरी सेना कयलक, जाहिमे एकटा नायको छलाह । सबकेँ अलग-अलग सामग्रीक लेल सूची थम्हा देल गेल छलैक आ तदनुसार सभ केओ सामग्री पहुँचौलन्हि । एहि सबसँ चैन भेटले छलनि कि विभागसँ रिपोर्टक लेल तलब कयल गेलनि । हुनक रिपोर्ट आ सुझाओपर विभाग छापामारीक आयोजन कयलक । ताहि लेल उपयुक्त समय छलैक छ: बजे प्रात:काल, किएक तँ ओहि समयमे कोनो भीड़-भाड़ नहि रहैत छैक ।

निर्धारित दिन आ समयपर छापामारी कयल गेलैक । ओहिसँ दू दिन पूर्वहि नायक सुभान भायकेँ सूचित क' कोनो काजे बाहर चल गेलाह आ ओ अपना विभागकेँ सूचना देलथिन्ह जे हम गाम जा रहल छी । ठीक छ: बजे प्रात:काल निगरानीक टीम आबि गेल । गोदामकेँ घेरि सब प्रहरीकेँ कब्जामे ल' लेल गेल । ओकरा सबसँ पूछ-पाछ कयल गेलैक, मुदा केओ किछु उत्तर नहि देलकैक । ओ सभ मात्र रुस्तम भायक नाम कहलकैक आ ईहो जनौलकै जे ओएह हमरा सभक मालिक छथि । एहिसँ बेसी हम सभ किछु नहि जनैत छी । सत्यता तँ सैह छलैक जे एतेक गुप्त रूपेँ ई काज होइत छलैक जे ककरो एकर कनेको भनक नहि होइत छलैक आ जकरा छलैक, से भीतरेमे रहैत छलैक । प्रहरी तँ केवल गेट पासक आधारपर आगन्तुककेँ भीतर प्रविष्टि दैत छलैक । स्वयं ओकरो सभकेँ भीतर जयबाक अनुमति नहि छलैक । गोदामकेँ सील क' देल गेलैक । आवश्यक कागजात सबकेँ जप्त कयल गेलैक आ ओहि ठाम उपस्थित करीब पचीस गोटेकेँ गिरिफ्तार क' लेल गेलैक ।

निगरानीक एकटा ग्रुप दूटा सिपाहीकेँ ल' क' सुमान भायक ओहि ठाम गेल आ सुभान भायसँ पुछलकन्हि, 'अपने सुभान भाय थिकहुँ ?'

'जी...।'

'कचरा गोदामक मालिक ?'

'जी... ।'

'अपने के थिकहुँ ?'

'हम आजमगढ़क नया दरोगा... ।'

'जी... कहल जाओ ।'

'अपनेक गोदामक बगलमे एकटा लाश राखल छैक । तकरे शिनाख्त करबाक छैक । तेँ अपनेसँ आग्रह जे कनेक ओहि ठाम चलू । हम पुन: आधा घंटामे अहाँकेँ पहुँचा देब ।'

सुभान भाय एतेक बुझि नहि पओलन्हि । ओ ओकरे संगे विदा भ' गेलाह, मुदा एहि ठाम अबितहिँ हुनक दिमाग चकरा गेलन्हि । एहि ठाम कोनो लाश नहि छलैक आ ने ओ आजमगढ़क दरोगा छल । एहि ठाम हिनकर पचीसटा स्टाफ एक लाइनसँ ठाढ़ छलन्हि । सभक हाथमे हथकड़ी लागल छलैक । सुभान भायकेँ सेहो गिरिफ्तार क' लेल गेलन्हि । हुनका सभकेँ निगरानी मुख्यालयमे आनि पूछ-पाछ शुरू कयल गेल ।

एहि बीचमे नायकक गाम आ सासुरमे जे भ्रान्ति छलैक, तकरो दूर करब आवश्यक छलैक । जे सुनलक से आबिक' पुछारि शुरू कयलक । नायकक एकेटा उत्तर छलन्हि, 'हम तँ सरकारी काजसँ अमेरिकामे छलहुँ । शारदा बाबू सेहो हरिद्वारसँ गाम आबि गेलाह आ जमायकेँ देखि प्रफुल्लित भेलाह ।

सुभान भायक गोदामसँ प्राप्त कागत-पत्तरक आधारपर सब अधिकारी आ संलिप्त सभ गोटेपर कारबाइ शुरू भेल । मात्र ओहि अधिकारीकेँ किछु नहि कयल गेलन्हि, जे विभागक सहमतिसँ एहिमे पैसल छलाह । जखन सुभान भाय गिरिफ्तार भ' गेलाह, तँ सगरो हल्ला भ' गेलैक । सुभान भायकेँ तँ बच्चासँ बूढ़ धरि सब केओ चिन्हैत छलन्हि । ओ लोको तँ तेहने छलाह । हुनक व्यवहारसँ केओ अप्रसन्न नहि छल । सैह तँ हुनक खूबी छलन्हि । दू दिनक बाद जखन घरक लोक सब बुझलक तँ सब

अकचकायले रहि गेल । सुभान भाय एहन कोन काज करैत छथि जे हुनका पुलिस पकड़ि लेलकन्हि । टोल-पड़ोसमे तँ पहिनेसँ कानफुसकी चलि रहल छलैक । छोटकी बेगम नूराकेँ ई गप बूझल छलन्हि जे प्रदेशक गृहमंत्री सुभान भायक दोस्त थिकथिन्ह । कतेको बेर ओ डेरापर आयल छलथिन्ह आ सुभान भाय खूब हुनकर स्वागत-सत्कार करैत छलथिन्ह । बेगम नूरा गृहमंत्रीकेँ टेलीफोन कयलन्हि । ओम्हरसँ आवाज आयल, 'के बजैत छी ?'

बेगम नूरा पुछलथिन्ह, 'अपने के बजैत छी ?'

ओम्हरसँ अवाज आयल, 'हम गृहमंत्रीजीक पी.ए. बाजि रहल छी ।'

बेगम नूरा कहलथिन्ह, 'हम सुभान भायक बेगम बाजि रहल छी । कनेक मंत्रीजीसँ गप करा सकैत छी ?'

पी.ए. कहलथिन्ह, 'हँ...हँ... अवश्य करा सकैत छी । अहाँ फोन राखि दिऔक । कनेक कालक बाद स्वयं मंत्रीजी अहाँसँ एही नम्बरपर गप क' लेताह ।'

पूरे महकमामे सुभान भायसँ के परिचित नहि छलाह । सभ केओ तँ हुनके भीखपर जिबैत छलाह । ओ तुरंत मंत्रीजी लग गेलाह आ कहलथिन्ह, 'श्रीमान् ! सुभान भायक बेगम अहाँसँ गप कर' चाहैत छथि ।'

मंत्रीजी पुछलथिन्ह, 'कत' छथि ओ आ हमरासँ किएक गप कर' चाहैत छथि ? सुभान भाय अपने कत' छथि ? ओ किएक नहि गप कयलनि ?'

पी.ए. कहलथिन्ह, 'श्रीमान् ! ई गप हुनकेसँ पुछि लिऔन जे कोन परिस्थितिमे गप कर' चाहैत छथि ।'

मंत्रीजी कहलथिन्ह, 'ठीके कहैत छी, लगाउ तँ फोन...'

एम्हरसँ मंत्रीजी ओही नम्बरपर फोन लगबौलथिन्ह । घंटी सुनि बेगम नूरा फोन उठौलन्हि आ बजलीह, 'हेलो... अपने के ...?'

मंत्रीजी कहलथिन्ह, 'हम गृहमंत्री शिराज थिकहुँ । अपने बेगम साहिबा थिकहुँ की ?'

बेगम नूरा कहलथिन्ह, 'जी...'

मंत्रीजी पुछलथिन्ह, 'अपने फोन किएक कयलहुँ, की समस्या अछि, सुभान भाय कत' छथि ? ओ किएक नहि फोन कयलन्हि ? ओ स्वस्थ छथि वा नहि ?'

बेगम नूरा कहलथिन्ह, 'सएह तँ कहि रहल छी । ओ स्वस्थ छथि वा नहि, से तँ नहि कहि सकैत छी...'

मंत्रीजी गपकेँ कटैत पुछलथिन्ह, 'से किएक ?'

बेगम नूरा कहलथिन्ह, 'आइसँ दू दिन पहिने हुनका पुलिस पकड़ि क' ल' गेलन्हि । पता नहि ओ कोन अपराध कयने छलथिन्ह । तेँ अपनेकेँ कष्ट देल । हमरा सभकेँ तँ एहि ठाम केओ बोलो-भरोस देनिहार नहि अछि । हुनको दबाइ घरेमे रहि गेलन्हि । पता नहि ओ कोन हालतिमे होयताह ?'

मंत्रीजी कहलथिन्ह, 'अहाँ सभ चिंता नहि करू । हुनका लेल आरामसँ भानस-भात क' क' रखिअन्हु । ओ तीन घंटाक भीतर घर पहुँचि जयताह ।

मंत्रीजीक लेल सुभान भाय भगवानक दोसर रूप छलथिन्ह । आइ ओ मंत्री अवश्य छथि, मुदा आइसँ पन्द्रह वर्ष पहिने बौआइत-टौआइत दिन बितैत छलन्हि । कोना-कोना क' सुभान भाय हुनका अपन टाका आ अपन सेनाक मदतिसँ विधायक बनबौने छलथिन्ह । यद्यपि एहि युगमे राजनीतिज्ञ जाहि सीढ़ीपर चढ़ि ऊपर पहुँचैत छथि, सबसँ पहिने ओही सीढ़ीकेँ हटा दैत छथि । कदाचित् केओ अन्य ने ओहि सीढ़ीपर चढ़ि हुनकासँ आगू बढ़ि जाइन्हि, मुदा सुभान भायक ओकाति ओ देखि चुकल छलाह । हुनका विषयमे एहन गप ओ सोचिओ नहि सकैत छलाह । सुभान भायक लेल कोनो काज असम्भव नहि छलनि । ओ सोचैत छथि जे सुभान भायक हमरा ऊपर बहुत उपकार छन्हि जकरा सधयबाक एकटा अवसर हमरो भेटल अछि । किएक नहि एहि अवसरक लाभ उठाबी । ओना सुभान भायक जतेक नाम हाथ-पयर छन्हि, ओ बेसी दिन हाजतिमे नहि रहि सकैत छथि । तेँ एहि अवसरक लाभ उठाओल जयबाक चाही । ओ तुरंत एस.पी. आजमगढ़केँ टेलीफोन कयलन्हि आ सुभान भायक विषयमे पुछलथिन्ह ।

एस.पी. कहलथिन्ह, 'हुनका ओहि ठाम किछु अवैध काज होइत छलन्हि । तेँ...।'

मंत्रीजी कहलथिन्ह, 'की होइत छलैक आ की नहि होइत छलैक, से तँ नहि पुछल अछि । हुनका पकड़िक' कत' रखने छियैन्हि ।

एस.पी. कहलथिन्ह, 'हुनका हम नहि, निगरानी विभाग पकड़ने छन्हि ।'

ओ निगरानीक महानिदेशककेँ टेलीफोन कयलथिन्ह, संगहि निर्देश देलथिन्ह जे सुभान भाय आ हुनका सहयोगी सभकेँ तुरंत छोड़ि देल जाइनि । हुनका लोकनिपर कोनो कारबाइ नहि होयबाक चाही आ एहि लेल अहाँ सभकेँ जे किछु चाही से बाजू, हम पूर्ति करब ।'

महानिदेशक कहलथिन्ह, 'श्रीमान् ! ई लोकनि बड़ पैघ अपराधी छथि तकर ठोस साक्ष्य हमरा लग आबि गेल अछि । ई सब समाजक दुश्मन छथि, देशक दुश्मन छथि । एहि अभियानमे कतेको अधिकारी मारल गेलाह, कतेको एखन धरि गायब छथि । एहन स्थितिमे...'

बात कटैत मंत्री महोदय कहलथिन्ह, 'अहाँकेँ एक शब्दमे कहल जे सुभान भायकेँ छोड़ि दियन्हु आ जतेक साक्ष्य अछि, सबमे आगि लगा दिऔक । एहि मीशनपर अहाँक जे अधिकारी छलाह, हुनक नाम पठाउ । हुनकापर मंत्रालय स्तरसँ कारबाइ कयल जयतनि । अहाँकेँ पता अछि जकरा अहाँ शातिर अपराधी बुझैत छियैक, ओ कतेक पैघ लोक छथि । चंदासँ शहरमे कतेको अनाथालय, नारी सशक्तिकरण केन्द्र, धर्मशाला, स्कूल, अस्पताल आदि चलि रहल छैक । ओहि व्यक्तिकेँ अहाँ समाजक आ देशक दुश्मन कहैत छियैक ? सुभान भाय एहि युगक मानव नहि महामानव थिकाह ।'

महानिदेशक कहलथिन्ह, 'जी महोदय ! अहाँक आदेशक तुरंत पालन होयतैक ।'

ओ तुरंत सुभान भाय आ हुनका सहयोगी सभकेँ छोड़ि देलथिन्ह, मुदा ओ सभटा साक्ष्य सीलबन्न क' लिफाफमे राखि देलथिन्ह । उद्देश्य

एवं आस ई जे सरकार तँ कहिओ ने कहिओ बदलबे करतैक, मुदा हुनका स्वयं वा हुनक ऑफीसरकेँ तँ नोकरी करबाक छनि । भ' सकैत अछि जे काल्हि केओ दोसर मंत्री आबथि आ गड़ल मुर्दाकेँ उखारथि । तखन तँ इएह रिपोर्ट काज करत । गृहमंत्री जनतेक लगमे शिराज छलाह । अधिकारी लगमे शिवराजे बुझू । कोनो कायदा-कानूनसँ मतलब नहि ।

एहि घटनासँ सुभान भाय अचम्भित छलाह जे ई पैरवी के कयलक ? बिना पैरवीक तँ एहन चमत्कार नहि भ' सकैत छैक । भ' सकैत अछि जे ई चमत्कार रौनके कयने होथि, मुदा रौनकक तँ पते नहि छन्हि । भ' सकैत अछि जे रौनक सेहो पकड़ायल होथि । हुनका कतहु अन्यत्र रखने होअय वा पुलिसक डरे रौनक भागल फिरैत होथि । ओ एही गुन-धुनमे घर पहुँचलाह । हिनक आगत-भगत कयलाक बाद बेगम नूरा फोनपर मंत्रीजीकेँ धन्यवाद देलथिन्ह । तखन सुभान भायकेँ बुझबामे अयलन्हि जे एकरा पाछू बेगम नूराक सोच आ प्रयास छलन्हि । हुनके प्रयासे ओ सब बाहरो अयलाह अन्यथा जँ जेहल पठा देल जइतथि तँ बहरायब मुश्किल छलन्हि । जेहल गेने पुलिसक बाध्यता होइतैक जे ओकरा कोनो ने कोनो गैर जमानती धारा लगबहि पड़ितैक आ मामिला अदालती भ' जइतैक । तखन तँ गृहमंत्री के कहए, मुख्योमंत्रियो किछु नहि क' सकैत छलथिन । नायकक नाम गुप्त रखबाक लेल, हुनक बदली पूर्व तिथिमे दिल्लीमे क' देल गेलनि । सुभान भायकेँ रौनकक कोनो सुराग नहि भेटलन्हि । ओ बुझि रहल छलाह जे भ' सकैत अछि जे रौनक मारल गेल होथि वा महुआ जकाँ कतहु गुप्त स्थानपर राखल गेल होथि । एक तरहेँ भगवाने हुनक काज क' देलथिन्ह । ओ तँ सोचनहुँ छलाह जे रौनककेँ बाटसँ हटा दी, किएक तँ ओ नहि चाहैत छलाह जे रौनक आ बेबीनूरक निकाह होअय, मुदा बेगम नूराक दबाबमे तैयार भेल छलाह ।

नायककेँ बचयबाक लेल महुआकेँ जहर पिआओल गेलैक जकरा महुआ खुशी-खुशी स्वीकार कयलक, एही शर्त्तपर जे दीनूकेँ किछु नहि कयल जयबाक चाहियैक । महुआकेँ तँ कहल गेल छलैक जे तोँ आब घर जा सकैत छेँ आ जखन बजयबौ तँ आबि जइहेँ, मुदा महुआ

बुझैत छल जे ओहि ठाम सेहो ओ कोनो स्थितिमे सुरक्षित नहि रहत । ओ अपना समाजक मन:स्थिति बुझैत छलैक । पता नहि ओकरा आब दीनू सेहो ओहि रूपेँ देखतैक वा नहि, मुदा ओ दीनूकेँ एखनो बहुत चाहैत छलैक । ओ पुन: ओहि दलदलमे जयबाक लेल तैयार नहि छल । ओ जतेक दिन रहल से ओकर विवशता छलैक । ओकरा तँ ईहो नहि पता छैक जे के ओकर माय-बाप वा अपन भाय-बन्धु छैक । ई गप कोनो महुएटाक संग नहि छलैक । ओहि समाजमे जे केओ छलैक, तकरो जीवनशैली महुए सन छलैक । सब केओ ओकरा सभकेँ नगरवधूक रूपमे देखैत छलैक । महुआ जखन अपन बयान दर्ज करौने छल, तँ निगरानी विभागक अधिकारीकेँ कहने छलन्हि, 'अहाँ सब व्यर्थक एतेक खत्ता उपछि रहल छी । परिणाम निष्फल जायत । हमरा सरगनाक हाथ बड़ पैघ छनि । हुनक केओ किछु नहि बिगाड़ि सकैत छनि ।'

सएह भेलैक, निगरानीक वर्षोंक मेहनति बेकार भ' गेलैक, मात्र एक टेलीफोनपर । एहि मीशनपर कतेको अधिकारी मारल गेलाह आ कतेको आइ धरि निपत्ता छथि । हुनका सभक चिंता ककरा छैक ? आ जेकरा छैक, तकर तँ हाथे बन्हायल छैक । इमानदारो अधिकारीकेँ अनुकूल समयक प्रतीक्षा करबाक चाही, अन्यथा परिणाम किछु एहने होइत छैक ।

जखन स्वर्गक भिखमंगाकेँ देवेन्द्रक उपाधि देल जा सकैत अछि, तीनू लोकक भिखमंगाकेँ देवाधिदेव महादेवक उपाधि देल जा सकैत अछि, तखन धरतीक भिखमंगा सुभान भायकेँ महामानव कहबामे कोन आपत्ति ? ओहि मंत्री महोदयकेँ कोन उपाधिसँ विभूषित कयल जयतनि जे भिखमंगोसँ भीख लैत छथि, जे देशक नीति निर्धारित करैत छथि आ एहि तथाकथित महामानवक हाथेँ देशकेँ बंधक रखैत छथि ।

''आब पाठके निर्णय करथि जे याचक के नञि' ? तेँ भिखमंगासँ घृणा नहि प्रेम करबाक चाही । ओहो हमर भाइये-बन्धु थिकाह । किएक तँ ''दाता एक राम, भिखारी सारी..... ।।'

●

श्री नन्द कुमार मिश्र 'नन्द'

जन्म : 2 जनवरी, 1950

जन्म स्थान : भैरव बलिया (मातृक)

पिता : स्व. बैद्यनाथ मिश्र
सरल चित्त, साधु स्वभाव, उदारमना एवं धर्मपरायण

माता : स्व. गोसाउनि देवी
करुणामयी, सहृदया एवं धर्मपरायणा

पत्राचारक पता : ग्राम एवं पत्रा.- उफरदाहा, थाना- बहेड़ा, जिला- दरभंगा (बिहार) 847233

शिक्षा : स्नातक कला, संगीत प्रभाकर

वृत्ति : लेखापाल, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड (अवकाश प्राप्त)

रुचि : गीत-संगीत, मैथिली कथा आ कविताक माध्यमे सामाजिक कुरीति आ राजनीतिपर व्यंग्य रचना

प्रकाशित पोथी : (1) विधात्री - (गीत एवं कविता संग्रह) 2004 (2) गामघर - (कथा संग्रह) 2005 (3) सुजाता - (उपन्यास) 2006 (4) महारानी कैकेयी - (प्रवचनात्मक निबंध) 2008 (5) गुदड़ीक लाल - (उपन्यास) 2008 (6) अनठिया कुकुर - (उपन्यास) 2011 (7) सुन्दरकाण्ड - (सम्पादन) 2015 (8) आडम्बर - (कथा संग्रह) 2017 (9) दिल्लीक पार्क - (शब्दचित्र) 2018 (10) सुकन्या - (उपन्यास) 2019 (11) स्वर्ण कमल - (बाल उपन्यास) 2019 (12) काव्य सरिता (मैथिली काव्य संग्रह) 2019 (13) परिवार (संस्मरणात्मक उपन्यास) 2021 (14) याचक के नञि (मैथिली शब्द-चित्र) 2022

उपाधि : 'कवि शिरोमणि' (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार)

: 'अंगप्रदेश-साहित्य-साधना सम्मान' (राजा राम मोहन राय स्मृति मंच, भागलपुर)

: 'मैथिली पराग' (उधाडीह, अजगैवीनाथ धाम, सुल्तानगंज, भागलपुर)

: वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान-2010 (मिथिला परिषद्, भागलपुर)

सम्पर्क : 08986261756